स्वतंत्रता सेनानी महादेव मिश्र

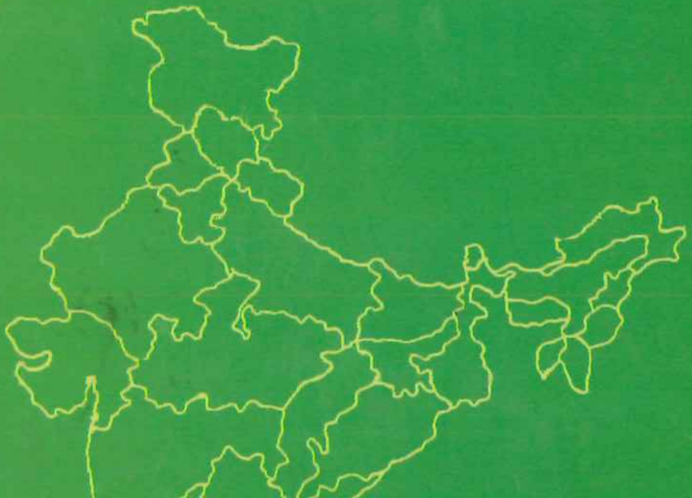

डॉ0 (प्रो0) विष्णु कान्त मिश्र

स्वतंत्रता सेनानी महादेव मिश्र • डॉ0 (प्रो0) विष्णु कान्त मिश्र

"25 अगस्त को एस० पी० मिस्टर सैलिसबरी सदल-बल झंझारपुर आये और खादी भंडार के एक कमरा को जलाते हुए श्री महादेव मिश्र की तलाश में सर्वसीमा आये । वहाँ मालूम हुआ कि मिश्रजी स्वयं सेवकों को लेकर विदेश्वर स्थान की ओर गये हैं । सब के सब वहाँ पहुँचे जूता पहने हुए ही घड़घड़ाते हुए शिवजी के मन्दिर में घुस गये और किसी काँग्रेसी को न देख पुजारियों और यात्रियों को पीटने लगे, पुजारियों ने गाली-मार सही पर मिश्र जी तथा उनके दल का पता गोरों को नहीं बतलाया । गोरों को निराशा हुई और उन्होंने थाना भर को परेशान करने का निश्चय किया । झंझारपुर स्टेशन, झंझारपुर, मधेपुर और फुलपरास तीनो थानों का अड्डा बन गया और काफी गोरे हथियार बन्द जमकर रहने लगे । पहली सितम्बर को एस० पी० साहब आये । उसके द्वारा महादेव मिश्र के गोनौली स्थित घर को लूटा-खसोटा गया ।"

-अगस्त क्रान्ति का इतिहास पुस्तक से
(लेखक- प्रो० बलदेव नारायण एवं भूमिका लेखक- डॉ० राजेन्द्र प्रसाद)

स्वतंत्रता सेनानी महादेव मिश्र

लेखक

डॉ० (प्रो०) विष्णु कान्त मिश्र

एम.ए.बी.एल., पी-एच.डी.

पूर्व रीडर (एल.एन.एम.यू. दरभंगा, बिहार)

ल.ना. जनता महाविद्यालय, झंझारपुर

प्रकाशक

त्रिवेणी प्रकाशन

ग्राम+पो०- गोनौली

अन्धराठाढ़ी, मधुबनी

स्वतंत्रता सेनानी महादेव मिश्र

डॉ० (प्रो०) विष्णु कान्त मिश्र

प्रकाशक : त्रिवेणी प्रकाशन - प्रथम पुष्प
ग्राम+पो०- गोनौली
अन्धराठाढ़ी

© : लेखकाधीन

प्रकाशन वर्ष : 2013

मूल्य : 120/- टाका मात्र

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

समर्पण

स्व. पूज्य पिताजी की देश भक्ति,
समाज सेवा एवं साहित्य सृजन हेतु
प्रेरणा श्रोत प्रात: स्मरणीया एवं धर्म परायणा
माता जी श्रीमती त्रिवेणी देवी के
चरण-कमल में एक श्रद्धा सुमन
'स्व. से. महादेव मिश्र'
सादर समर्पित ।

–विष्णु कान्त

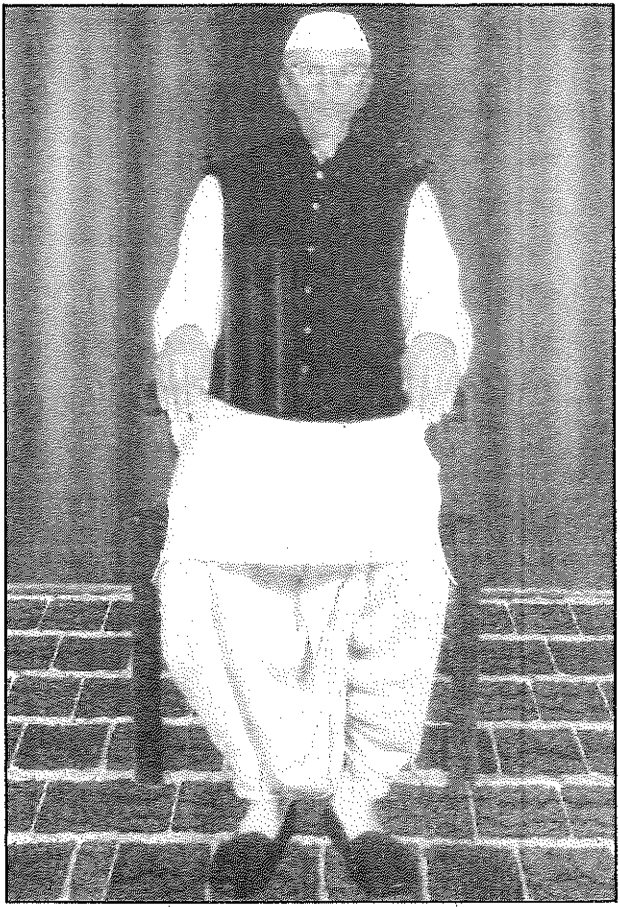

(26 जून 1910 – 11 नवम्बर 1967)

प्राक्कथन

'स्वतंत्रता सेनानी महादेव मिश्र' पुस्तक प्रकाशित कर मैं अपार हर्ष एवं खेद दोनों का अनुभव कर रहा हूँ। इनके मृत्यु के लगभग 44 वर्षों के उपरान्त इनकी जीवनी का प्रकाशन संभव हो सका। यूँ 1972 ई. में भारत सरकार द्वारा स्व. महादेव मिश्र की जीवनी माँगी गई थी। 1973 ई. में इनकी जीवनी की एक टंकित प्रति भारत सरकार को भेज दी गयी एवं एक प्रति डॉ. जगन्नाथ मिश्र, तत्कालीन मुख्यमंत्री, बिहार सरकार को। खेद का कारण यह कि चार दशकों से अधिक समय तक यह अरण्य रोदन ही रहा।

स्व. श्री मती त्रिवेणी देवी जैसी भार्या के कारण ही महादेव मिश्र सच्चे देश भक्त बन सके। 'दिनकर' ने सही कहा है:-

"कोई जानता नहीं, प्रकृति का यह अनोखा हाल।
गुदड़ी में चुन-चुन रखती, बड़े कीमती लाल।"

मैं प्रो. हरेकृष्ण झा 'हरि', हिन्दी विभाग, जे. एन. कालेज, मधुबनी (बिहार) का आभारी हूँ, जिन्होंने अथक परिश्रम एवं अपना बहुमूल्य समय देकर इस पुस्तक को पूर्ण संशोधन एवं परिवर्द्धन किया है। मैं प्रो. गंगाराम झा, जे.एन. कालेज, मधुबनी को भी कृतज्ञता ज्ञापित किये वगैर नहीं रह सकता जो इस पुस्तक के प्रकाशनार्थ सतत् मुझे प्रोत्साहित करते रहे। श्री श्यामा नन्द मिश्र ने भी 'स्व. सेनानी महादेव मिश्र' के जीवन चरित्र पर एक नाटक लिखा है, जिसका सफल मंचन भी हो चुका है। स्व. दिनेश चन्द्र झा ने भी अपनी स्वतंत्रता-संग्राम पर एक पुस्तक लिखा है जिसमें स्व. मिश्र जी

के क्रिया कलापों के बारे में उल्लेख किया गया है । सरकार ने तो प्रखंड कार्यालय, अंधराठाढ़ी, (मधुबनी, बिहार) परिसर में प्रस्थर स्तम्भ पर उनके नाम को खुदवा कर अपनी इतिश्री मान ली है । अन्त में मैं अपनी जीवन संगिनी श्रीमती शान्ति देवी (बी.ए.आनर्स), पूर्व प्रधान शिक्षिका, रा.प्रा. कन्या विद्यालय, गोनौली को भी धन्यवाद ज्ञापन किये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने मुझे इस पुस्तक को लिखने में अनवरत रुप से प्रोत्साहित करती रहीं। अपने दो पुत्रों ई. विपिन कुमार मिश्र (सिविल) एवं ई. प्रवीण कुमार मिश्र (एयर लाइन्स) को भी आशीर्वाद देता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक को अपने दिल्ली प्रवास के दौरान हठ कर इसे प्रकाशित करवाया ।

नई दिल्ली : मातृ नवमी, जय हिन्द ।

9.10.2012 **विष्णु कान्त मिश्र**

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ सं०
1.	बाल्यावस्था एवं शिक्षा-दीक्षा	09
2.	पारिवारिक जीवन एवं आर्थिक परिस्थिति	16
3.	समर्पित काँग्रेसकर्मी और सक्रिय क्रान्तिकारी	32
4.	सहृदय समाजसेवी और दलितोद्धारक	63
5.	धर्म-भावना, कला-संगीत प्रियता एवं सहित्यिकता	66
6.	विभिन्न विद्वत्जनों द्वारा जीवन पर प्रकाश	69
7.	परिशिष्ट	91

1. बाल्यावस्था एवं शिक्षा-दीक्षा

भारत माता के पावन आँचल से परतंत्रता के दाग को धोने के लिए जिन अश्रुत-विश्रुत अगणित स्वातंत्र्य-सपूतों ने भगीरथ श्रम किया, उनमें एक गरिमामंडित नाम है- महादेव मिश्र । इस स्वतंत्रता सेनानी का जन्म बिहार के मधुबनी जिलान्तर्गत अन्धराठाढ़ी थाने के गोनौली ग्राम के एक मैथिल ब्राह्मण परिवार में 26 जून, 1910 ई. को हुआ था । इनके पिता का नाम उचित मिश्र था । पं. उचित मिश्र की तीन शादियाँ थीं । पहली पत्नी से तीन पुत्री, दूसरी से एक पुत्र तथा दो पुत्रियाँ एवं तीसरी पत्नी से तीन पुत्र और एक पुत्री थी । महादेव मिश्र उचित मिश्र की तीसरी पत्नी की संतान थे ।

पाँच वर्ष की अल्पावस्था में ही महादेव मिश्र को स्वमाता के स्नेहांचल से वंचित होना पड़ा । फलतः विमाता के आश्रय में ही उनका लालन-पालन हुआ । इनके समस्त परिवार में इनके बड़े भाई पार्कण्डेय मिश्र ने ही संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की थी और उनकी उत्कट अभिलाषा थी कि महादेव मिश्र अधिकाधिक शिक्षा प्राप्त कर सकें ।

उस समय गोनौली जैसे सुदूर ग्रामीण अंचल में विद्यालय का अभाव था । गाँव में सड़क किनारे एक विशाल पीपल वृक्ष के नीचे एक शिक्षक गाँव के कुछ छात्रों को हिन्दी माध्यम से शिक्षा प्रदान किया करते थे । महादेव मिश्र भी दस वर्ष की अवस्था में उक्त स्थान पर शिक्षा प्राप्ति के निमित जाने लगे। इस प्रकार इनकी प्राथमिक शिक्षा गाँव में ही आरम्भ हुई । उल्लेखनीय है कि पिता के अपढ़ होने तथा विमाता के स्नेहाभाव के कारण मिश्र जी को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के मार्ग में अनेक बाधाएँ उपस्थित हुईं । परन्तु बचपन से ही शिक्षा के प्रति अनन्यता के कारण वे कठिनाइयों

पर विजय प्राप्त करते गये । इन्हें विभिन्न प्रकार के पारिवारिक कार्यों को करने के लिए विवश किया जाता था । यदा-कदा मिश्र जी घरेलू कार्यों के निष्पादन के पश्चात् ही विद्यालय जाते थे । उन दिनों लालटेन का अधिक प्रयोग-प्रचार नहीं था । मिश्र जी दीप लेकर जब पढ़ने बैठते थे, तो इनके पिता क्रोधित होकर दीप को घर के समीप के गढ़े में फेंक देते थे ।

महादेव मिश्र की पारिवारिक परिस्थितियाँ ऐसी थीं जिसमें इनके लिये शिक्षा ग्रहण करना पत्थर पर दूब उगाने जैसा था । इनके पिता जी भैंस-बैल आदि पाल रखे थे । एक अच्छे किसान होने के कारण बैल गाड़ी से धान खरीद-बिक्री का काम भी किया करते थे । मिश्र जी के सर से माँ की साया भी उठ चुका था उन दिनों देहात में स्कूल का नितान्त अभाव हुआ करता था । पाँच-छः गाँवों को मिला कर कहीं एक प्राथमिक विद्यालय हुआ करता था । शिक्षा ग्रहण करने का गाँवों में अधिक प्रचलन नहीं था । ऐसी परिस्थिति में इनके पिता जी शिक्षा से अधिक पशुपालन एवं कृषि कार्य को महत्त्व देते थे । परिवार में इन्हें विमाता एवं सौतेला भाई के साथ रहना पड़ता था । पिता जी मिश्र जी को मवेशी चराने, उसके लिये घास-भूसा का प्रबंध करने आदि कामों में लगाते थे । उचित मिश्र द्वारा निर्धारित कार्य पूरा करने में आना कानी करने पर इन्हें अच्छी पिटाई भी यदा-कदा लगती थी । कभी-कभी इनके हिस्से का काम इनके बड़े भाई मार्कण्डेय मिश्र निबटा लिया करते थे ।

फूस का घर और दरवाजा । कौन जानता था कि इस फूस का घर और अनपढ पिता का पुत्र एक दिन सरस्वती का वरद् पुत्र और निःस्वार्थ देश भक्त बन कर भारत माँ की गोरे सरकार द्वारा पहनाई गई हथकड़ी से मुक्त करने में अहम् भूमिका निभायेगा । उल्लेखनीय है कि इनके होनहारपन को देखकर रायसाहेब पं० सिद्धि नाथ मिश्र इन्हें शिक्षा ग्रहण करने के लिये हमेशा प्रेरणा के श्रोत बने रहे । गाँव के मध्य भाग में अवस्थित उस पीपल वृक्ष के तले देवहार ग्राम निवासी स्व० राजकुमार झा से लोअर प्राइमरी की शिक्षा इन्होने लेना प्रारम्भ किया । इस शिक्षा को भी ग्रहण करने में कई पारिवारिक बाधाऐं चुनौती के रूप इनके सामने आईं । विमाता के देर से भोजन बनाने के कारण कई दिन ऐसा होता था कि मिश्र जी भूखे ही स्कूल चले जाते थे । बैठने हेतु एक बोरा, लकड़ी निर्मित पाटी, बाँस के करची का

कलम, चिकनी मिट्टी को गाढ़ा घोलकर स्याही मे ही महादेव मिश्र के प्रारम्भ में शिक्षा ग्रहण करने के औजार थे । शाम को पढ़ते वक्त महीने में कई दिन ऐसे होते थे कि इनके पिताजी दीया को घर के बगल के गढ़े में गुस्साकर फेंक देते थे । धोती और गंजी पहनकर वे लोअर प्राइमरी पाठशाला में पढ़ने के लिये जाते थे ।

दरभंगा जिलान्तर्गत मिड्ल ईंगलिश स्कूल, पचाढ़ी में खराज गाँव से उन्हें प्रतिदिन तीन मील की दूरी तय कर बरसात एवं गर्मी के दिनों में बिना छाते का जाना पड़ता था । जिस सम्बन्धी के यहाँ वे रहते थे वे भी एक साधारण किसान होने के कारण मिश्र जी को छाता का प्रबंध करने में असमर्थ थे । स्कूल के छात्रावास में अधिक संख्या में छात्र रहते थे । महादेव बाबू के पिता जी छात्रावास में होने वाले व्यय का भार वहन नहीं कर सकते थे । सातवाँ वर्ग की अर्धवार्षिक परीक्षा के दौरान हिन्दी पत्र की परीक्षा के दिन खराज गाँव से वे बीस मिनट विलम्ब से परीक्षा भवन में पहुँचे । नतीजा हुआ कि बीस अंक का उत्तर लिखने से उन्हें वंचित होना पड़ा । इसके वावजूद परीक्षा फल में प्रथम स्थान इन्हीं का रहा । श्री नागेश्वर मिश्र, प्रधानाध्यापक बहुत कड़े स्वाभाव एवं अनुशासित व्यक्तित्व के थे । इन्होने जीवन में अनुशासन का पाठ उन्हीं से सीखा ।

मिड्ल पास करने के बाद हाई स्कूल की शिक्षा प्राप्त करना इनके लिये कठिन था । पिताजी कागज, पुस्तक, विद्यालय का शुल्क, छात्रावास का किराया, भोजन व्यय आदि देने में असमर्थ थे । अर्थाभाव इनके अग्रिम शिक्षा के लिये राह का रोड़ा बन गया । सूर्य को बादल भला कब तक ढँक कर रख सकता था । होनहार वीरवान के होत चीकने पात । अग्रिम शिक्षा प्राप्त करने की भूख एवं ललक आखिरकार रास्ता ढूंढ ही लिया । महादेव बाबू के श्वसुर महापुरुष झा बड़े ही धनी मानी व्यक्ति थे । इलाके में उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी । दरबाजे पर हाथी था । वे अपने दामाद की पढ़ाई के लिये आगे आये । उन दिनों सिद्धिनाथ मिश्र नौर्थ ब्रुक जिला स्कूल, दरभंगा के प्रधानाध्यापक थे । उन्होंने मिश्र जी का नामांकन आठवीं कक्षा में वहाँ करवा दिया । यदाकदा आंशिक आर्थिक मदद उनसे भी मिलने लगा । मैट्रिक तक रायसाहेब की सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि उनपर बनी रही । यह किसान का पुत्र जिला स्कूल में भी हमेशा अपने वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त करता रहा । इस

प्रकार प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के बीच हमेशा इन्हें संघर्ष ही करना पड़ा । रामधारी सिंह 'दिनकर' के 'रश्मिरथी' की पंक्ति यहाँ याद आ जाती है-

''पीसा जाता जब इक्षु-दण्ड,
बहती रस की धारा अखण्ड ।
जब फूल पिरोये जाते हैं,
हम उनको गले लगाते हैं ।।''

यों तो प्राथमिक शिक्षा की प्राप्ति के क्रम में उन्हें चतुर्दिक् की बाधाओं से संघर्ष करना पड़ा। परन्तु अतिशय लगनशीलता एवं शिक्षा प्राप्ति की उत्कट अभिलाषा के कारण साधारण किसान का वह बेटा बाधाओं की दीवार को तोड़कर मस्ती के साथ झरने की अबाध गति से सतत् अग्रसर होता रहा । मेघावी छात्र होने के कारण इन्हें पाँचवी कक्षा में अपर प्राइमरी छात्रवृत्ति दो रुपये पचास पैसे प्रतिमाह की दर से सातवीं कक्षा तक प्राप्त हुई । इनके इलाके में मिड्ल इंगलिश स्कूल का अभाव था । इसलिए पन्द्रह वर्ष की अवस्था में महादेव मिश्र ने इंगलिश की शिक्षा प्राप्त करने के लिये मिड्ल इंगलिश स्कूल पचाढ़ी में नामांकन करवाया । इन्होने अपने रहने के लिए खराज के अपने एक सम्बन्धी के यहाँ प्रबंध किया, जहाँ से वे प्रतिदिन तीन मील पैदल चलकर पढ़ने जाया करते थे । उस विद्यालय में वे अपने वर्ग में सदा प्रथम आते रहे । यही कारण था कि वे उस विद्यालय के तत्कालीन प्रधानाध्यापक श्री नागेश्वर मिश्र के अत्यन्त स्नेहपात्र थे । सन् 1925 ई. में आयोजित मिड्ल छात्रवृत्ति परीक्षा में उन्हें सफलता प्राप्त हुई और पाँच रूपये प्रतिमाह की दर से मैट्रिक तक शिक्षा-विभाग से छात्रवृत्ति प्राप्त होती रही ।

श्री नागेश्वर मिश्र अपने शिष्य महादेव मिश्र के आचार-व्यवहार एवं मेधा से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने इनकी शादी दरभंगा जिलान्तर्गत मुहम्मदपुर के समीप हरिहरपुर ग्राम में अपनी छोटी साली त्रिवेणी देवी से करा दी ।

मिड्ल इंगलिश स्कूल की परीक्षाओं में उत्तीर्णता के पश्चात् महादेव मिश्र 1926 ई. में नॉर्थ ब्रुक जिला स्कूल, दरभंगा में आठवीं कक्षा में भर्त्ती

हुए । उन्होंने वहाँ चार वर्षों तक माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की । परन्तु अकस्मात् मैट्रिक की परीक्षा से पूर्व कालाज्वर से आक्रान्त हो जाने के कारण वे उस परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो सके । दुर्भाग्यवश उसी वर्ष इनके पिताजी का भी देहावसान हो गया । जब वे नवीं कक्षा के छात्र थे तभी खादी को अपना कर देश सेवा का व्रत ले चुके थे और उनके हृदय में गुलामी से मुक्ति पाने की ज्वाला धधकने लगी थी ।

सन् 1930 ई. में इन्होंने मोतीहारी जिला स्कूल से स्वतंत्र छात्र के रूप में मैट्रिक की परिक्षा पास की । राय साहेब सिद्धिनाथ मिश्र के बाद महादेव मिश्र ही इस इलाके में दूसरे मैट्रिक पास व्यक्ति हुए ।

उल्लेखनीय है कि जब महादेव मिश्र कालाज्वर से आक्रान्त थे, उसी समय तंग करने के उद्देश्य से उनके सौतेले भाई मधु मिश्र ने उन्हें परिवार से अलग कर दिया । परन्तु इस विषम परिस्थिति में भी मिश्र जी विचलित नहीं हुए । अपने भाइयों के असामयिक निधन हो जाने और परिवार का सारा उत्तरदायित्व उनपर आ जाने के कारण वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के क्रम को अधिक दिनों तक जारी नहीं रख सके । कुछ ही महीने आई.ए. कक्षा में अध्ययनोपरान्त राष्ट्र की पुकार पर राजनीतिक कार्यो में व्यस्तता एवं पारिवारिक-आर्थिक विपन्नता के कारण उनकी महाविद्यालय शिक्षा का क्रम भंग हो गया ।

उन दिनों कालाजार जानलेवा बुखार होता था । सही इलाज की कमी थी । अधिक व्यय के कारण मध्यम वर्गीय परिवार के लिये इसका इलाज कष्टसाध्य था । इनके इलाज का भार अपने कंधों पर उठाने के लिये परिवार में सक्षम कोई सदस्य नहीं थे । ऐसी परिस्थिति में इनके ससुराल वाले आगे आये । वे लोग मिश्र जी को सदर अस्पताल, लहेरियासराय (दरभंगा) ले गये । मिश्र जी जीवन मृत्यु से जूझ रहे थे । बहुत दिनों तक इनका इलाज चला । इनकी जान नहीं बचने के नाउम्मीद को लेकर इनका सौतेला भाई इनकी पत्नी त्रिवेणी देवी पर जमीन-जायदाद के सभी कागजात सुपुर्द करने का दवाब बनाने लगे ।

कोरोनेशन उच्च विद्यालय, मधेपुर (दरभंगा, बिहार) में शिक्षक पद पर योगदान के सात महीने के अन्दर ही महादेव बाबू ने गाँधीजी के आह्वान पर चर्खा कातना प्रारम्भ किया । स्वनिर्मित सूत का खादी धोती, कुर्त्ता, गंजी,

चादर आदि का प्रयोग करने लगे । पत्नी को भी चर्खा चलाना सिखाया। श्रीमती त्रिवेणी देवी भी खादी का वस्त्र धारण करने लगीं । मिश्र जी ने मधेपुर, झंझारपुर, फुलपरास आदि थानाओं में धूम-धूम कर चर्खा का प्रचार किया । स्वनिर्मित धागा का वस्त्र पहनने की प्रेरणा दी । खादी भंडार में सूत जमा किये जाते थे एवं उसकी कीमत के बराबर वस्त्र दिये जाते थे । इस प्रकार वस्त्र स्वावलम्बन की ओर इनकी अहम् भूमिका रही ।

मैट्रिक पास नहीं रहने के कारण महादेव बाबू बहुत चिन्तित रहा करते थे । संयोगवश रायसाहेब सिद्धिनाथ मिश्र का स्थानान्तरण नौर्थ बुक जिला स्कूल, दरभंगा से बिहार के जिला स्कूल मोतिहारी हो गया । मिश्र जी पुनः कुछ समय के लिये इन्हीं के सानिध्य में रह कर मैट्रिक परीक्षा में सम्मिलित होने हेतु अध्ययन रत रहे । मोतिहारी में अपनी पढ़ाई खर्च के कारण प्राइवेट ट्यूशन का सहारा लेना पड़ा । ट्यूशन के बाबजूद वे 7-8 घंटे प्रतिदिन अध्ययन करते थे ।

उच्च विद्यालय, भिलाईपुर में महादेव मिश्र को अधिक दिनों तक अध्यापन कार्य में मन नहीं लगा । इन्हें टीचर्स ट्रेनिंग सर्टिफिकेट परीक्षा पास करने का धुन था । बिहार-उड़ीसा संयुक्त बोर्ड से उन दिनों यह परीक्षा पास करना आसान नहीं था । इन्होंने शिक्षक नौकरी छोड़ कर टीचर्स सर्टिफिकेट स्कूल में दाखिला ले लिया । यहाँ भी इनको आर्थिक स्थिति का सामना करना पड़ा । दो घंटे सुबह एवं दो घंटे शाम का इनका समय प्राइवेट छात्रों को पढ़ाने में व्यय हो जाता था । इनकी कर्मठता एवं अध्ययन शीलता ही इन्हें टीचर्स सर्टिफिकेट परीक्षा पास करने में मददगार साबित हो सकी । कोरोनेशन उच्च विद्यालय, मधेपुर में इनका प्रतिदिन का जीवन अतिव्यस्त था। विद्यालय में अध्यापन कार्य के अतिरिक्त स्काउट का भी प्रशिक्षण छात्रों को इन्हें ही देना पड़ता था । पुस्तकालय भी इन्हीं के प्रभार में था । उन दिनों मधेपुर के अलावे झंझारपुर, फुलपरास, लौकहा, लौकही आदि किसी थाने में उच्च-विद्यालय नहीं रहने के कारण हजारों की संख्या में छात्रावास में छात्र रहते थे । बिना किसी शुल्क के मिश्र जी विद्यालय समय के अतिरिक्त व्यक्तिगत रुप से छात्रों को पढ़ाया करते थे । एक-एक मिनट का उनका समय बंधा हुआ था । ऐसी परिस्थिति में भी वे 3-4 घंटे स्वाध्याय कर लेते थे । इसी का फल हुआ कि अपने मधेपुर के ही जीवन काल में

इन्होंने स्वतंत्र छात्र के रुप में आइ० ए० की परीक्षा पास की । किसी भी संस्कृत पाठशाला में इन्होंने कभी नहीं पढ़ा । फिर भी संस्कृत साहित्य के प्रति इनकी इतनी अभिरुचि थी कि कोई न कोई संस्कृत पुस्तक वे हमेशा पढ़ा करते थे ।

इसी का नतीजा हुआ कि महादेव बाबू संस्कृत 'साहित्य रत्न' की उपाधि से अलंकृत किये गये । इस तरह हम देखते हैं कि 'संघर्ष ही जीवन है' कहावत इनके साथ अक्षरशः चरितार्थ होती है ।

सन् 1941 ई. मे उन्होने पटना विश्वविद्यालय से स्वतंत्र छात्र के रूप में आई.ए. की परीक्षा पास की । सन् 1933 ई. में ही इन्होने बिहार एवं उड़ीसा संयुक्त बोर्ड से टीचर्स सर्टिफिकेट की परीक्षा पास की थी । हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से स्वतंत्र छात्र के रूप में वे विक्रमाब्द 1998 में आयोजित 'विशारद' की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए और सम्मेलन के तत्कालीन सभापति डॉ. अमरनाथ झा ने इन्हें प्रमाण-पत्र प्रदान किया । सुदूर देहात के रोगियों की सेवा के उद्देश्य से इन्होंने 'द संत जौन एम्बुलेन्स एसोसियेशन से फस्ट एड का प्रशिक्षण प्राप्त किया और इस एसोसियेशन की मुजफ्फरपुर शाखा से 'फर्स्ट एड' की परीक्षा पास की । स्वतंत्रता संग्राम से सम्पर्क रखने के कारण मिश्र जीने स्काउट का प्रशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक अनुभव किया । अतः उन्होंने स्काउट का प्रशिक्षण प्राप्त किया और सन् 1939 ई. में स्काउट की परीक्षा में सम्मिलित होकर प्रमाण-पत्र प्राप्त किया । मिश्रजी संस्कृत 'साहित्य रत्न' की उपाधि से भी विभूषित किए गये थे । सन् 1949 ई. मे इन्होंने पटना विश्वविद्यालय से बी.ए.की परीक्षा पास की ।

स्वाध्याय एवं गहन अध्ययन का ही परिणाम था कि मिश्र जी हिंदी, अँगरेजी, संस्कृत तथा मैथिली के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् थे ।

●

2. पारिवारिक जीवन एवं आर्थिक परिस्थिति

स्वार्थ की भित्ति पर अवस्थित व्यक्ति प्रगतिवाद और सुधारवाद का समर्थक नहीं हो सकता तथा निष्काम समाजसेवी एवं सच्चा देशभक्त भौतिकता का दास नहीं हो सकता । उसका समस्त जीवन व्यष्टि की संकुचित परिधि में आबद्ध न होकर समष्टि के कल्याण के लिए समर्पित होता है ।

स्वतंत्रता सेनानी महादेव मिश्र जीवन-पर्यन्त इस उच्चादर्श के अटल पुजारी रहे । अति साधारण एवं अशिक्षित किसान परिवार में जन्मे मिश्र जी को पैतृक-सम्पत्ति के रूप में मात्र कुछ बीघे जमीन प्राप्त हुई, वह भी चार भाईयों के बीच विभजित थी । फलतः इस नगण्य जमीन से पाँच पुत्रियों एवं एक पुत्र का पालन-पोषण बड़ा दुष्कर कार्य था ।

संयोगवश मिश्रजी ने जीविकोपार्जन हेतु शिक्षण-कार्य का चयन किया, जहाँ द्रव्य-संचय की कोई संभवना ही नहीं थी । नये-नये विद्यालयों की स्थापना तथा सरकार से स्वीकृति प्रदान कराकर शिक्षा के क्षेत्र में क्रियाशीलता लाना ही उनका मुख्य ध्येयथा । वे मासिक वेतन के रूप में प्राप्त रुपये का अधिकांश भाग दीन-हीनों की सहायता और समाज-कल्याण में व्यय कर देते थे ।

धन-संचय के प्रति उदासीनता एवं शिक्षण-कार्य, समाजसेवा, दलितोद्धार, काँग्रेस-संगठन आदि कर अँग्रेजी शासन से मुक्ति के प्रति अतिशय आकंठ व्यस्तता के कारण उन्हें कृषि-कार्य में कोई अभिरूचि ही नहीं थी । इनके दरवाजे पर कृषि-कार्य के लिए न कभी बैल रहा और न

दूध के लिए गाय-भैंस । बटाईदारों द्वारा जो अन्न उपजाया जाता था, वह उनके परिवार के लिए तप्त तवे पर जल के छींटे के समान था । परिवार के सदस्यों को दोनों शाम भरपेट खाने को अन्न भी नहीं मिल पाता था। आर्थिक विपन्नता अपनी पराकाष्ठा पर थी ।

महादेव बाबू के पारिवारिक जीवन का आर्थिक पहलू सन् 1941 ई० तक ठीक रहा । छोटा सा परिवार था । पत्नी के अलावे परिवार में दो छोटी पुत्रियाँ थीं । अपने बड़े भाई मार्कण्डेय मिश्र एवं भाभी के असमय काल कवलित हो जाने के कारण एकमात्र छोटे भतीजे को भी साथ रखना पड़ता था । अपने मधेपुर उच्च विद्यालय में नौकरी करने के दौरान स्कूल के समीप ही जमीन खरीद कर खपड़ैल मकान इन्होंने बनवाया था । इसी में सपरिवार रहा करते थे । विद्यालय से इतना वेतन मिल जाता था जिससे शान-शौकत के साथ परिवार सहित अतिथि आदि का सत्कार वे आसानी से कर लेते थे । उन दिनों चाय-पान का प्रचलन अधिक नहीं था । गोनौली एक बहुत धनी आवादी वाली बस्ती है । मिश्रजी एवं गाँव के ही इनके बहनोई स्व० फक्कर झा मात्र दो ही ऐसे व्यक्ति थे जो आदतन चाय-पान के आदी थे । अपने गाँव में मिश्र जी ही चाय की पत्ती लाकर इसका प्रचार-प्रसार किया । मधेपुर के आवास पर इलाके के गण्यमान्य सदा आते जाते रहते थे । मुश्किल से एक ढोली पान का पत्ता 4-5 दिनों तक चलता था । सामाजिक एवं राजनीतिक स्वभाव होने के कारण दो-चार अतिथियों का भोजन हमेशा इनके आवास पर होता था ।

स्वतंत्रता संग्राम में पूर्णरूपेण सक्रिय होने के बाद इनकी आर्थिक स्थिति दिनानुदिन बिगड़ती गई । विद्यालय के शिक्षक पद से इस्तीफा देने के उपरान्त जीविका का कोई साधन नहीं रहा । मधेपुर का आवास गोरे सरकार द्वारा ध्वस्त कर दिया गया । वहाँ की जमीन को नीलाम कर दिया गया । गाँधी जी के अगस्त क्रान्ति में कूदने के बाद परिवार के भरण-पोषण का ख्याल इन्हे नहीं रहा । कुछ दिनों तक परिवार गोनौली में रहा । मिश्र जी का चाचा रुद्दी मिश्र एवं उनकी पत्नी इनके परिवार की देख-भाल करते रहे । किन्तु चाचा की भी आर्थिक स्थिति सामान्य रहने के कारण वे भी अधिक दिनों तक इनके परिवार के भरण-पोषण का भार नहीं उठा सके । इसी बीच तीसरी पुत्री का भी जन्म हुआ । अंततः त्रिवेणी देवी को अपनी

तीनो पुत्रियों के साथ कुछ समय तक श्री नागेश्वर मिश्र के लहेरिया सराय स्थित आवास पर शरण लेनी पड़ी । उल्लेखनीय है कि श्री नागेश्वर मिश्र महादेव बाबू के मिड़ल ईंगलिश स्कूल, पचाढ़ी में अध्ययन के दौरान वहाँ के प्रधानाध्यापक थे । बाद में वे दरभंगा जिला के लहेरियासराय अवस्थित जिला न्यायालय में वकालत करने चले आये । कुछ ही समय के उपरान्त अंग्रेजी हुकूमत ने उन्हें जिला-न्यायालय में सरकारी वकील नियुक्त कर लिया । मिश्रा जी के गुरु होने के नाते वे नागेश्वर बाबू को साढू कम एवं गुरु के नजर से अधिक देखते थे । यूँ दोनों दो विचार धारा के व्यक्ति थे ।

अंततः त्रिवेणी देवी नागेश्वर बाबू के आवास से अपने बड़े भाई शिव चन्द्र झा के साथ अपने मायके हरिहरपुर बच्चियों के साथ आ गई । ससुराल वालों ने मिश्र जी को बहुत समझाने की कोशिश की कि वे अपने को स्वतन्त्रता संग्राम से अलग कर लें तथा कहीं नौकरी कर परिवार का भरण-पोषण करें । इन्होंने ससुराल वालों की एक भी नहीं मानी । नागेश्वर मिश्र जी ने भी भरपूर प्रयास किया, किन्तु उनका भी कुछ नहीं चला । भला क्रान्तिकारी देश भक्त को परिवार की माया कब तक अपने में उलझा कर रख सकती है । उन्होंने परिवार को भगवान भरोसे छोड़ दिया ।

स्वतन्त्रता संग्राम की समाप्ति, देश की आजादी की प्राप्ति तथा महादेव बाबू की जेल से रिहाई के बाद त्रिवेणी देवी गोनौली वापस आई । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी मिश्र जी एक सच्चे साधक के रूप में जीवन पर्यन्त समाज के विभिन्न क्षेत्रों में विकास के कार्यों में तल्लीन रहे । अर्थोपार्जन में इन्हें तनिक भी रुचि नहीं थी । जैसा नाम वैसा गुण । संसार के लिये महादेव बाबू दानी थे, किन्तु अपने लिये भिखारी । इसके बावजूद खान-पान, वेष-भूषा, आतिथ्य सत्कार आदि मामले में वे किसी जमीन्दार से कम नहीं थे । विभिन्न उच्च विद्यालयों की प्रारम्भिक अवस्था में उस इलाके के गणमान्य व्यक्ति उन्हें उस विद्यालय को व्यवस्थित करने हेतु साग्रह ले जाते थे । कुछ वर्षों तक एक विद्यालय में रहकर एवं उसे व्यवस्थित कर पुनः दूसरे इलाके के बुलावे पर वहाँ जाकर विद्यालय को व्यवस्थित करना उनका काम रहा । लक्ष्मीपुत्र बनने की उन्हें कभी इच्छा नहीं रही । सच्चे मायने में वे समाज सेवी एवं देश भक्त थे । धन के अभाव में नहीं पढ़ने वाले छात्रों की कमी का मामला हो या विद्यालय के फीस का, परीक्षा

नजदीक आने पर छात्रावास में कुछ महीने की समस्या हो या फिर किसी भी विषय में कमजोर छात्र को कुछ समझने की जरूरत हो – सभी समस्याओं के समाधान के लिये एक ही नाम था– महादेव बाबू । कोई भी छात्र यदि एकबार मैट्रिक की परीक्षा में फेल कर जाता तो उसके अभिभावक तुरत मिश्र जी से संपर्क करता था । उनसे अपने पूर्ववर्त्ती छात्र को अलग से समय देकर परीक्षा की तैयारी के लिये उत्साहित करते थे । मिश्रजी तुरत उस अभिभावक के प्रस्ताव का अनुमोदन कर देते थे । मैट्रिक में अनुत्तीर्ण छात्र को परीक्षा की तैयारी कराकर उसे पास कराने में उन्हें महारथ हासिल था । इस मामले में दूर-दूर तक उनकी कीर्त्ति पताका लहरा रही थी ।

महादेव बाबू अपनी छोटी सी आमदनी से गरीब छोत्रों को मदद करते थे । इससे जब वहीं बन पड़ता तो पुस्तक मुहैया हेतु वे अपने नाम पर विद्यालय से पुस्तक लेकर उसे देते थे । दीन छात्रों को विद्यालय से पूरा फीस माफ करवाते थे । छात्रावास का सीट रेन्ट उसे नहीं देना पड़ता था । मेस ठीकेदार को उसके भोजन के मद् में होनेवाले व्यय में छूट देने कहते थे । यही कारण था कि दूर-दूर तक छात्रों के बीच महादेव बाबू की ख्याति थी । किसी भी उच्च्च विद्यालय के छात्रगण महादेव बाबू के एक इशारे पर कुछ भी कर गुजरने को तैयार हो जाते थे । आर्थिक बदहाली इनके जीवन में कभी भी रोड़ा नहीं बनी । यह मानना पड़ेगा कि त्रिवेणी देवी जैसे उदार मना गृहणी पाकर ही यह सब संभव हो सका । उनके चेहरे पर कभी आर्थिक संकट के कारण मलिनता का साया अपना स्थान नहीं बना पाया ।

मिश्रजी विवाह में तिलक प्रथा के कट्टर विरोधी थे । इनकी पाँच पुत्रियाँ थीं । इनसे अपनी किसी भी पुत्री की शादी में कोई भी वर पक्ष नगद लेन देन की बात नहीं की तिलक प्रथा इन दिनों अपने चरम पर थी । कोई भी कन्या पक्ष बिना लेन देन का अपनी पुत्री की शादी केबारे में सोच भी नहीं सकता था । महादेव बाबू अपने एकलौते पुत्र की भी शादी विना तिलक लिये आदर्श रूप में संपन्न करवाया । वे अद्भुत् जीवट के व्यक्ति थे । आजीवन उनके चेहरे पर कभी मलिनता या उदासी किसी ने नहीं देखी होगी । जीवन संघर्ष में उन्हें बहुत मजा आता था । वे स्पष्ट वक्ता थे । सस्ती लोकप्रियता के वे हिमायती नहीं थे । एक बार मिश्र जी जो ठान लेते थे, उसे अंजाम तक पहुँचा कर ही दम लेते थे । उनका जीवन हमेशा दूसरों की

भलाई में लगा रहा । ससुराल जमीन्दार के घर में होने के कारण पाँचो पुत्रियों की शादी में उनलोगों ने आशातीत मदद की । वैसे भी त्रिवेणी देवी को सतत् आर्थिक सहायता प्राप्त होती रही ।

जाति, धर्म और सम्प्रदाय से महादेव मिश्र ऊपर उठे हुए थे । वे दीन-हीनों की आवाज थे । किसी भी जाति या धर्म के कोई भी धनी वर्ग का व्यक्ति यदि किसी गरीब को आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आदि किसी स्तर पर उन्हें तंग करता था तो मिश्र जो तन-मन-धन से उसके साथ खड़े हो जाते थे । तब तक उसका साथ वे नहीं छोड़ते थे जब तक उसकी समस्या का उचित समाधान नहीं निकल जाता था । घूस एवं नजराना के वे कट्टर विरोधी थे ।

एक समय की घटना है । उनका एक मात्र पुत्र कॉलेज का छात्र था.। भारत सरकार द्वारा उन दिनों ऐसे छात्रों को राजनीतिक पीड़ित छात्रवृत्ति दी जाती थी जिनके माता-पिता स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रहे हो एवं आर्थिक रूप से बहुत नुकसान हुआ हो । राजनीतिक पीड़ित (Political Sufferer) प्रमाण पत्र के लिये महादेव बाबू ने 1961 ई० में जिलाधिकारी, दरभंगा के पास सबूतों के साथ आवेदन दिया । जिलाधिकारी ने मिश्र जी से अपने स्तर से सत्यापन के लिय एक महीने का समय माँगा । मिश्र जी वापस लौट आये। एक महीना सात दिन गुजर जाने के बाद महादेव बाबू पुनः प्रमाण पत्र लेने हेतु उनसे मिले । जिलाधिकारी ने बताया कि उनका प्रमाण पत्र तैयार हो चुका होगा । प्रधान लिपिक से मिलकर वे अपना प्रमाण पत्र ले लें । मिश्रजी जब प्रधान लिपिक से मिले तो वह इन्हे सब्ज वाग दिखाने लगा। जेल से कागजों का मिलान करवाना है । इसमें समय लगेगा । यदि जल्द प्रमाण पत्र चाहते हैं तो खर्चा-पानी के लिये कुछ रुपये देते जाइये । फिर क्या था ? महादेव बाबू के क्रोध का पारा आसमान चढ़ गया । वे जिलाधिकारी से मिलकर प्रधान लिपिक की सारी करतूतें उनके सामने रखी। प्रधान लिपिक को बुलाया गया । जिलाधिकारी ने उसे कसकर फटकार लगायी और तुरत प्रमाण पत्र लाने का आदेश दिया । प्रधान लिपिक से जिलाधिकारी राजनीतिक पीड़ित प्रमाण पत्र लेकर महादेव बाबू को ज्योंही देने लगे कि मिश्रजी ने प्रमाणपत्र लेने से इन्कार कर दिया । उन्होंने कहा कि ऐसे घूसखोर प्रधान लिपिक को जब तक आप निलम्बित (Suspend)

नहीं करेंगे तब तक मुझे प्रमाण पत्र नहीं चाहिये । ऐसा न हो कि इस निलम्बन की कार्रवाइ हेतु मुझे मुख्यमंत्री का दरवाजा खटखटाना पड़े । इसके बाद तुरत मिश्र जी ने समाचार पत्र में उस प्रधान लिपिक के निलंबन का समाचार पढ़ा । प्रमाण पत्र भी निबंधित डाक द्वारा उन्हें भेज दिया गया ।

उन्होंने अपनी आर्थिक जर्जरता की कभी परवाह नहीं की । वे बड़े जीवट के व्यक्ति थे । आत्मबल, उत्साह, भावना एवं विचारों पर उन्होंने कभी कुठाराघात नहीं होने दिया । सन् 1948 ई. के अगस्त महीने की बात है । रात के लगभग एक बजे मिश्र जी अपने अन्य तेरह साथियों के साथ अप्रत्याशित रूप से घर पहुँचे । अतिथि सत्कार मिथिला की अपूर्व एवं विलक्षण परम्परा रही है परन्तु घर में कोई वस्तु उपलब्ध नहीं थी । उनकी पत्नी श्रीमती त्रिवेणी देवी ने बगल के पड़ोसी को जगाकर चावल, दाल एवं दूध-दही का प्रबन्ध तो किया ही, दुकानदार के यहाँ से सब्जी-तेल आदि मँगवाया । इस तरह अतिथि-सत्कार सम्पन्न हो सका । यह केवल अकेली घटना नहीं थी, अपितु अक्सर इस प्रकार अवसर आते ही रहते थे । छोटी एवं सीमित आय के बावजूद घर में हमेशा चाय एवं पान का प्रबन्ध करके रखना ही पड़ता था ।

महंथ राजेश्वर गिरि टेक्निकल, स्कूल, गोनौली की स्थापना के अवसर पर आर्थिक स्थिति नाजुक रहने पर भी सैकड़ो व्यक्तियों के जलपान एवं भोजन की व्यवस्था केवल उनकी पत्नी श्रीमती त्रिवेणी देवी ने की ।

कभी-कभी अन्नाभाव के कारण श्रीमती त्रिवेणी देवी पड़ोस से अन्न लाकर महादेव बाबू और बाल-बच्चों को खिलाकर स्वयं भूखी रहकर ही सो जाती ।

आर्थिक विपन्नता की प्रतिकूल परिस्थिति में भी उनकी पत्नी श्रीमती त्रिवेणी देवी ने अर्द्धांगिनी- धर्म का निर्वाह तत्परता एवं सहनशीलता के साथ किया । वे साधारण पढ़ी-लिखी थीं, परन्तु मिश्र जी के सान्निध्य में प्रथमा परीक्षा पास की । वे सरस्वती की भाँति महादेव बाबू को अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के लिए जीवन भर प्रेरित करती रही । उन दिनों ब्राहमण समाज में पर्दा प्रथा का प्रचलन था । वह देवी पर्दा के भीतर ही रहकर अपने व्यवहार और क्रिया-कलापों से मिश्रजी में सदा उत्साह और उमंग का संचार तो करती ही रही, परिवार के संचालन का भार-बहन कर

पारिवारिक उलझनों से मुक्त भी करती रही । उन्हें अपने पति से कभी कोई शिकायत नहीं थी । विषम से विषम परिस्थिति में भी उनके चेहने पर मलिनता की कालिमा नहीं, अपितु फूलों-सी मुस्कान होती थी । आदर्श भारतीय नारी के गुण-पवित्रता, प्रसन्नता, सहनशीलता, मृदुभाषिता, गंभीरता आदि विद्यमान रहते थे । महादेव-शिव त्रिवेणी जैसी शक्ति को पाकर ही लक्ष्य सिद्ध कर सके । वे एक धर्मप्राण महिला थीं । वे घंटों समय पूजा-पाठ में व्यतीत करती थीं । उनकी सभी संतानों को आध्यात्मिकता की प्रेरणा उन्ही से प्राप्त हुई है। आर्थिक विकटता-विवशता में भी उनकी प्रसन्न मुखता एवं सहृदयता पड़ोस की महिलाओं के लिए अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है।

उनकी सभी पाँच पुत्रियाँ शिक्षित हैं और सबों की प्राथमिक शिक्षा माँ के द्वारा ही सम्पन्न हुई। इनकी तीसरी पुत्री प्रवेशिक प्रशिक्षित हैं जो राजकीय प्रा. कन्या विद्यालय, गोनौली में प्रधानाध्यापिका के पद से सेवा निवृत्त हुई । पुत्र की प्रारंभिक शिक्षा पिता से प्राप्त हुई । महादेव बाबू की आदर्शवादिता का परिचय उस समय प्राप्त हुआ, जब उन्होंने अपने एक मात्र पुत्र का विवाह बिना-तिलक दहेज के महुआही ग्राम में स्व. कुल-कुल झाकी पौत्री एवं स्व. सुन्दरलाल झा की पुत्री से सन् 1963 ई. में सम्पन्न कराया । उनकी पुत्रवधू भी स्नातक (प्रतिष्ठा) प्रशिक्षित होकर राजकीय प्रा. कन्या विद्यालय, गोनौली में प्रधान शिक्षिका पद पर कार्यरत थी ।

आर्थिक स्थिति की दयनीयता के कारण मिश्र जी के पास रहने के लिए मकान भी नहीं था । वे सपरिवार फूस के घर में सुख पूर्वक समय व्यतीत करते रहे । इसके लिए उनके मन में तनिक भी संकोच या हीन-भावना नहीं थी । महान् सम्राट चन्द्रगुप्त के गुरु और सम्राट-निर्माता चाणक्य की कुटिया भी सदा समिधा भार से झुकी रहती थी । मिश्र जी के समक्ष शायद वही आदर्श रहा ।

एक ओर परिवार की फटेहाली और दूसरी ओर अतिथि सत्कार तथा उपकार में डीलडौल, निश्चय ही विरोधाभास का विलक्षण दृश्यउपस्थित करता है । परन्तु मिश्रजी अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति से दोनों पर ही विजय प्राप्त करते रहे, कभी भी विचलित नहीं हुए ।

आत्मबल तथा आत्म सम्मान का इन्हें इतना ख्याल था कि जब वे जलोदार-रोग से पीड़ित हुए, उस समय उनके एक मात्र पुत्र चन्द्रधारी

मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा में एम.ए. के परीत्तार्थी थे । पिता की वृद्धावस्था और गंभीर रोग ग्रस्तता को देखकर पुत्र की इच्छा कोई नौकरी कर लेने की हुई । पुत्र ने जब अप्रत्यक्ष रूप से इसकी चर्चा की तो उन्होंने कहा-"यदि तुम मेरी अंतिम साँस रहने तक भी नौकरी करोगे तो मुझे आत्मगलानि होगी और यह आत्मग्लानि मेरे लिए इस बीमारी से भी अधिक खतरनाक सिद्ध होगी तथा जल्द ही मै मौत की मुँह में चला जाउँगा" ।

यद्यपि इनके पुत्र ने मृत्यु के लगभग तीन महीने पूर्व ही एक उच्च विद्यालय में अंगरेजी शिक्षक के पद पर कार्य करना प्रारंभ कर दिया था, परन्तु इसकी जानकारी उन्हें मृत्यु से दो दिन पूर्व ही हो सकी ।

महादेव बाबू की मृत्यु से कुछ घण्टे पूर्व इन्हें एक व्यक्ति ने उनकी धर्मपत्नी की ओर संकेत करते हुए कहा कि इन्हें आप आशीर्वाद दें । उन्होने झट कहा कि मरते समय उनसे ऐसा स्वार्थ नहीं करवाया जाय । उन्होंने आगे कहा-"मैं यही कामना करता हूँ कि भारत की नारी समाज का कल्याण हो" ।

3. निस्पृह और स्वाभिमानी शिक्षक

महादेव मिश्र वह महार्णव थे जिनमें प्रगतिवादी, सुधारवादी एवं क्रांतिकारी विचारधारा की त्रिवेणी की उत्ताल तरंगों का पर्यवसान परिलक्षित होता है । तात्पर्य यह कि मिश्र जी स्वभाव से प्रगतिवादी, हृदय से सुधारवादी, मस्तिष्क से क्रांतिकारी और वृत्ति से शिक्षक थे । उन्होंने विभिन्न आदर्शों में समन्वय स्थापित करते हुए अपने जीवन-पथ को प्रशस्त किया ।

मिश्र जी ने अपने अध्यापकीय जीवन का शुभारंभ 1931 ई० में मिलाईपुर उच्च विद्यालय, मिलाईपुर मे सहायक शिक्षक के पद पर योगदान कर किया । उस समय उनकी अवस्था इक्कीस वर्ष की थी । घर से सुदूर रहने के कारण उनका मन मिलाईपुर में नहीं रम सका । फलत: सन् 1933 ई० के सितम्बर महीने में वे तत्कालीन दरभंगा जिलान्तर्गत कोरेनेसन उच्च विद्यालय, मधेपुर में हिंदी के एकमात्र रिक्तपद के लिए अन्य तेरह प्रत्याशियों के साथ अन्तर्वीक्षा में सम्मिलित हुए । विद्यालय की तत्कालीन प्रबंध कारिणी समिति द्वारा आयोजित उस अन्तर्वीक्षा में मिश्र जी प्रथम आये और उन्हें तत्क्षण नियुक्ति-पत्र दे दिया गया । उन्होंने मिलाईपुर उच्च विद्यालय, मिलाईपुर के सहायक शिक्षक के पद से इस्तीफा देकर कोरेनेसन उच्च विद्यालय, मधेपुर में योगदान किया ।

कोरेनेसन उच्च विद्यालय के तत्कालीन प्रधानाध्यापक स्वर्गीय रमानाथ झा के आग्रह पर वे उच्च कक्षाओं में हिंदी तथा एक पत्र अग्रेजी का अध्यापन करने लगे । बाद में स्काउट का प्रशिक्षण प्राप्त करने पर विद्यालय में स्काउट विभाग का भार भी उन्हीं पर पड़ा । वे विद्यालय पुस्तकालय के

पुस्तकालयाध्यक्ष भी बनाये गये । खेल-कूद प्रभाग के प्रभारी का भार भी उन्हें ही वहन करना पड़ता था । आराम को वे हराम समझते थे और सतत् संघर्षमय, कार्यशील तथा व्यस्त जीवन व्यतीत करने में नैसर्गिक आन्नद का अनुभव करते थे । मिश्र जी के पास अतिथियों का निरन्तर आना-जाना लगा ही रहता था । फलतः विद्यालय से पूरब दूसरे किनारे पर उन्होंने अपने रहने के लिए तीन फूस के घरों के आवास का प्रबन्ध कर लिया था । जहाँ वे सपरिवार तो रहते ही थे, अपने दिवंगत भाई के पुत्र को भी साथ रखते थे । एक नौकर हमेशा उनके यहाँ रहता था जो बाजार से सामान लाता, रसोई बनता और अतिथियों की सेवा-सत्कार करता था ।

युवा शिक्षक मिश्र जी अतिव्ययी थे । उनके रहन-सहन, खान-पान एवं अतिथियों के सत्कार आदि का स्तर बहुत ऊँचा था । उनके निवास स्थान पर सुबह-शाम सामाजिक, राजनीतिक एवं शैक्षिक कार्यों के सम्पादनार्थ अपार भीड़ रहती थी । उन लोगों के लिए अल्पाहार एवं चाय-पान का प्रबन्ध अनिवार्य था । इसका कारण यह था कि मिश्र जी का सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों से घनिष्ठ लगाव । यही कारण था कि वे तत्कालीन प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्त्ता बाबू साहेब गुणपति सिंह, बाबू जानकीनन्दन सिंह तथा बाँके के नेनमणि बाबू आदि के प्रियपात्र थे ।

विद्धत्ता, अनुभव-गाम्भीर्य, अध्यापन की मोहक बोद्यगम्य शैली, समयपालन और अनुशासन प्रियता आदि गुण किसी भी शिक्षक की निजी धरोहर होते हैं । मिश्रजी अपने इन्हीं गुणों के कारण छात्रों के श्रद्धेय एवं प्राण प्रिय थे । विद्यालय-काल के अतिरिक्त भी हमेशा इनके घरका द्वार निःस्वार्थ विद्यादान के लिए खुला रहता था ।

मधेपुर विद्यालय के कार्य काल में मिश्रजी ने अपने आदर्शों एवं विचारों से अनेक प्रतिभाओं को प्रेरित एवं प्रभावित किया जिससे समाज और राष्ट्र-राज्य का बहुत उपकार हुआ । इस प्रसंग में सर्व श्री राधानन्दन झा, भूतपूर्व गृहराज्य मंत्री एवं विधानसभाध्यक्ष, बिहार, प्रेमचन्द्र मिश्र भू०पू० विधायक, विधानसभा क्षेत्र मधेपुर, धनिकलाल मंडल, राज्यपाल, हरियाणा, पूर्व कुलपति, ल. ना. मि. वि. श्री लक्ष्मण झा, नागेश्वर पाठक, भूतपूर्व प्राचार्य, रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनी, हीरानन्द झा, जा० ज० उच्च विद्यालय, बेलमोहन, जगन्नाथ मिश्र, संसद सदस्य, रामरतन साह, मुखिया,

सुदै-रतौली ग्रामपंचायत, प्रो० पुरूषोत्तम मत्र, अँग्रेजी विभागाध्यक्ष सी० एम० कालेज दरभंगा, शोभानन्द झा, कॉंग्रेस नेता एवं मुखिया, अररिया ग्राम पंचायत आदि के नामोल्लेख किए जा सकते हैं जिन्होंने मधेपुर विद्यालय के इस अकिंचन शिक्षक की अनन्य भक्ति एवं प्रेरणा के कारण अपने को सुयोग्य नागरिक के रूप में प्रतिष्ठित किया।

महात्मा गाँधी के भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से सम्मिलित रहने के कारण तेइस अगस्त, उन्नीस सौ बयालीस को स्वाभिमानी मिश्रजी ने आन्दोलन चलते रहने तकविद्यालय से अवकाश की माँग की, अन्यथा अँगरेज सरकार के अन्तर्गत गुलाम रहकर नौकरी नहीं करने के कारण इस्तीफे की स्वीकृति की याचना की । अन्ततः विद्यालय की प्रबंधकारिणी समिति के दिनांक 11-9-1942 की बैठक में इनकी सेवा समाप्त कर दी गयी ।

पुनः तीन वर्षो के भीषण संघर्ष एवं कठोर यातनाओं के पश्चात् वे जनवरी, 1948 ई. में जगदीश नन्दन उच्च विद्यालय, बाबू बरही में शिक्षक पद पर नियुक्त हुए । बाबूबरही विद्यालय में इन्होंने लगभग दो वर्षो तक अपनी सेवा अर्पित की । इनके कार्य काल में विद्यालय अपनी प्रारंभिक अवस्थामें था । परन्तु महादेव बाबू ने अपनी अल्प सेवावधि में ही विद्यालय के सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान किया । अनुशासन प्रियता, शिक्षण की कर्मठता एवं आचरण की पवित्रता के कारण न केवल विद्यालय धन्य था, अपितु सम्पूर्ण इलाका इनसे प्रभावित था और लोंगों में अपार श्रद्धा-भावना थी इनके प्रति । कुछ दिनों तक मिश्रजी इस विद्यालय में छात्रावास-अधीक्षक भी रहे ।

मिश्र जी निस्पृह एवं स्वाभिमानी शिक्षक थे । शिक्षक एवं शिक्षार्थी का अपमान उन्हें सह्य नहीं था । इसे वे विद्यालय की प्रतिष्ठा पर आघात समझते थे तथा स्वयं इस प्रकार की घटना की जाँचकर न्याय दिलाने का प्रयास तत्परता पूर्वक करते थे । उसी समय की बात है । महादेव बाबू किसी कार्यवश मधुबनी गये थे । इसी बीच विद्यालय के छात्रावास के कुछ छात्रों ने शौच से लौटते समय चार बजे शाम को रास्ते में स्थानीय बाजार के एक धनी व्यापारी जो विद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के सदस्य भी थे, के बगीचे में एक छात्र घुस कर दो-चार आम तोड़ लिये । रखवालो के कहने

पर उस व्यापारी ने छात्रावास आकर उस छात्र को एक तमाचा जमा दिया और भला-बुरा कहकर चला गया । दूसरे दिन जब महादेव बाबू को इस घटना की खबर मिली, तो उन्हें बहुत दु:ख हुआ और उन्होंने प्रधानाध्यापक से न्याय की माँग की । प्रधानाध्यापक इस घटना को आगे बढ़ाने के पक्ष में नहीं थे परन्तु महादेव बाबू के हठ पर अगले दिन उस व्यापारी की दुकान पर ही पंचायत बैठी । दर्शकों की अपार भीड़ के बीच इलाके के लब्ध प्रतिष्ठ पंचों ने उक्त व्यापारी को दोषी करार देते हुए पाँच रुपये जुर्माना किया। परन्तु महादेव मिश्र इस फैसले से संतुष्ट नहीं हुए । उन्होने निर्भीकता पूर्वक कहा- "पाँच रुपये जुर्माना ही यदि न्याय संगत है, तो कोई भी धनीवर्ग किसी को पाँच रुपये देकर पीट सकता है । यदि एक थप्पड़ की कीमत पाँच रुपये मात्र हो, तो यह व्यापारी मुझे पाँच थप्पड़ लगाने दें और इसके लिए मैं पचीस रुपये दाखिल करने को तैयार हूँ ।" इस बात पर दर्शकों की तालियों की गड़गढ़ाहट से वातावरण गूँज उठा । अन्त में व्यापारी के बहुत गिड़गिड़ाने पर बात समाप्त कर दी गयी ।

मिश्र जी का घर झंझारपुर क्षेत्र में पड़ने तथा थाना काँग्रेस कमिटी का मुख्यालय वहीं रहने कारण वे अपना कार्यक्षेत्र झंझारपुर को ही बनाना चाहते थे, फिर नव स्थापित केजरीवाल उच्च विद्यालय, झंझारपुर को महादेव मिश्र जैसे कर्मठ एवं निष्ठावान् शिक्षक के सहयोग की नितान्त आवश्यकता थी। आखिर सन् 1947 ई. में उन्होंने केजरीवाल उच्च विद्यालय, झंझारपुर में योग दान किया । अब वे विद्यालय तथा झंझारपुर क्षेत्र के विकास-कार्य में पूर्णतः जुट गये । उन्होंने विद्यालय में छात्रों की संख्या में अभिवृद्धि करने, पुस्तकालय को समृद्ध बनाने तथा छात्रावास को नियमित करने में व्यापक सहायता की । सन् 1949 ई. में महादेव बाबू ने झंझारपुर विद्यालय को छोड़कर कु.शा.उच्च विद्यालय, रमौली, तमोरिया में शिक्षक पद पर योगदान किया । उन्होंने अपनी अमूल्य सेवा द्वारा विद्यालय के विकास में महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया । परन्तु निर्भीकता, स्पष्टवादिता तथा ईमानदारी के कारण मिश्र जी को इस विद्यालय से जाना पड़ा । जब इस विद्यालय के कुछ उच्चाधिकारी विद्यालय की सम्पत्ति का दुरूपयोग करने लगे, तो मिश्रजी ने इसका खुलकर विरोध किया । परन्तु उनलोगो के व्यवहार से तंग आकर विद्यालय को छोड़ने का निर्णय मिश्रजी को लेना पड़ा और वे लम्बी छुट्टी लेकर वहाँ से चल पड़े ।

जीविकोपार्जन के लिए सन् 1953 ई. के अन्त में महादेव बाबू ने अजन्ता प्रेस प्राईवेट लिमिटेड, नया टोला, पटना-4 में हिंदी तथा अंग्रेजी के प्रूफ रीडरके रूप में नौकरी कर ली । उनके द्वारा प्रूफ-संशोधन का कार्य भी बहुत प्रशंसनीय रहा । श्री जयनाथ मिश्र उस समय उस प्रेस के मुख्य प्रबंधक थे । परन्तु समाज सेवी और दलितोद्धारक मिश्रजी को पटना का एकाकी जीवन भला कैसे अच्छा लगता। वे वहाँ से लौटकर सन् 1954 ई. की बाढ़ पीड़ित झंझारपुर क्षेत्र की जनता की सेवा में जुट गये ।

सन् 1955 ई० के दिसम्बर में लौकहा उच्च विद्यालय में हिंदी और अँगरेजी के रिक्त पदों को भरने के उद्देश्य से बिना किसी अन्तर्वीक्षा की नियुक्ति-पत्र लेकर कुछ व्यक्ति महादेव मिश्र से आग्रह करने उनके गाँव गोनौली पहुँचे । मिश्रजी ने 15 दिनों के अन्दर पद-भार संभाल लेने का आश्वासन भी दिया । परन्तु अन्य आग्रह में फँस जाने के कारण वे वहाँ नहीं जा सके ।

फुलपरास थानान्तर्गत जानकी जनता उच्च विद्यालय, बेलमोहन की स्थापना सन् 1952 ई० में हुई थी । परन्तु वह विद्यालय मृतप्राय हो चुका था । यह विद्यालय बेलमोहन, सुदै-रतौली, खोपा-विष्णुपुर, गाड़ोटोल आदि गाँवों के मध्य एक खुला मैदान में अवस्थित है । खोपा के श्री काशीनाथ मिश्र, भूतपूर्व एम० एल० ए०, श्री राम रतन साह, मुखिया, सुदै रतौली पंचायत, श्री अशर्फी साह, रतौली आदि गणमान्य व्यक्तियों ने यह निश्चय किया कि श्री महादेव मिश्र से ही इस विद्यालय का उद्धार संभव है । वे लोग इसी आग्रह के साथ गोनौली महादेव बाबू के पास पहुँचे और उन लोगों का ताँता तबतक लगा रहा, जब तक उन्होंने उस विद्यालय में पद-भार ग्रहण न कर लिया ।

मिश्रजी ने सन् 1956 ई. के प्रारंभ में बोलमोहन विद्यालय में पदार्पण किया । उनके पदार्पण के समय उस विद्यालय में मात्र संस्कृत के एक शिक्षक, दो छात्र और पाँच खपरैल कोठरियाँ थीं । उन्होंने अष्टम वर्ग में अपने पुत्र का नामांकन करा कर छात्रों की संख्या तीन कर दी । गाँव से स्थान दूर रहने के कारण एकदम सुनसान था और संध्या होते ही लोगों का उस रास्ते से आना-जाना बन्द हो जाता था। महादेव मिश्र के आ जाने से उस क्षेत्र की जनता में उत्साह और उमंग की उत्ताल तरगें

हिलोरें लेने लगीं। महादेव बाबू मशानी की भाँति उस निर्जन में अलख जगाने लगे ।

तपस्वी महादेव बाबू ने बेल मोहन विद्यालय के कायाकल्प के लिए तप करना प्रारंभ किया । यह उनके जीवन की अंतिम शिक्षण संस्था थी । उन्होंने विद्यालय प्रांगण को ही अपना आवास बनाया। विद्यालय के लिए लगभग छ: महीनें की अवैतनिक सेवियों की टोली बनी । मिश्र जी के नेतृत्व में वह टोली विभिन्न गाँवों में जाकर विद्यालय के निमित्त रूपये, अन्न, नार-पुआल, बांस, लकड़ी आदि चन्दा के रूप में एकत्र करने लगी। लोगों ने बड़े उत्साह के साथ इस यज्ञ को सम्पन्न करने के लिए उदारता पूर्वक दान दिया । मिश्रजी ने नये सिरे से विद्यालय प्रबन्धकारिणी समिति का संगठन किया । विद्यालय प्रांगण में छ: प्रकोष्ठों का एक भवन बनाया गया। प्रबन्धकारिणी समिति का कोई भी सदस्य यदि गड़बड़ी करता था, तो वे समिति की बैठक बुलाकर उस सदस्य को निष्कासित करवाते थे । एक बार आदेशपाल ने मिश्रजी से कहा कि सचिव महोदय ने आपको आय-व्यथ पंजी एवं अन्य पुस्तिकाओं को लेकर अपने घर बुलाया है, तो मिश्रजी ने उस आदेशपाल के द्वारा तुरत संवाद भिजवाया कि सचिव महोदय विद्यालय कार्यालय में आकर ही काम करें । सचिव महोदय कभी-कभी आदेशपाल से निजी कार्य करवाते थे और विद्यालय-कोष का दुरूपयोग करते थे । उनके इस कार्य से महादेव बाबू बहुत क्षुब्ध थे । एक दिन उन्होंने सचिव को आते हुए देखा था, तो आदेश पाल से कहा कि सचिव महोदय से कहदो कि वे बिना महादेव बाबू की इजाजत से विद्यालय-परिसर में प्रवेश नहीं करें ।

विद्यालय के आस-पास कोई बाजार नहीं था और तीन चार वर्षो तक वे पूर्ण अवैतनिक कार्य करते रहे । फलत: कई दिन उन्हें अपने एक मात्र पुत्र के साथ भूखे रह जाना पड़ता था । परन्तु वे गाँव में किसी के यहाँ भोजन नहीं करते थे । बेलमोहन विद्यालय में कार्य करते हुए उन्होंने महान त्याग का आदर्श तो उपस्थित किया, परन्तु उनके परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गयी । फिर भी वे धैर्य से काम लेते रहे । निरन्तर विद्यालय की समस्याओं को सुलझाने में व्यस्त रहते हुए निजी समस्याओं को भुलाते रहे । 8 फरवरी, 1957 ई. की बात है । रात्रि के लगभग 1 बजे

आँधी के साथ वर्षा प्रारंभ हुई जो दूसरे दिन तक लगातार जारी रही । । उस दिन आदेशपाल भी नहीं आ सका और न खाद्य-सामग्री था । दिन भर पिता-पुत्र भूख की ज्वाला में दग्ध होते रहे । छः बजे संध्या को रतौली गाँव का एक व्यक्ति आया जिसके द्वारा दुकान से चावल और दाल मँगवा कर भोजन बनाया गया ।

गाँव-गाँव घूमकर विद्यालय के लिए चन्दा एकत्र करने में मिश्रजी को अनेक कटु-मधु अनुभव हुए । कुछ अशिक्षित दाता जब चन्दा देना अस्वीकार कर देते और जली-कटी सुनाते तो मिश्रजी सहनशीलता का परिचय देते हुए अनशन पर बैठ जाते और अन्ततः कुछ-न-कुछ लेकर ही लौटते । बेलमोहन विद्यालय को विकास की मंजिल तक ले जाने में महादेव बाबू को फुलपरास के भूतपूर्व विधायक श्री रसिक लाल यादव का सहयोग सराहनीय है ।

विद्यालय में छात्रों की संख्या बढ़ाने के लिए वे सुदूर गाँवों के मिड्ल स्कूलों में जाते थे । वे छात्रों को विद्यालय से यथा संभव सुविधा तो प्रदान करवाते ही थे बहुत गरीब विद्यार्थी को किताब और कागज के लिए अपने वेतन से मदद करते थे । चार वर्षों के कठिन प्रयास के बाद सन् 1960 ई में इस विद्यालय को सरकार की ओर से पूर्ण स्वीकृति प्राप्त हुई । स्वीकृति से पूर्व ही प्रबंधकारिणी समिति के द्वारा कई शिक्षकों एवं लिपिक आदि की नियुक्तियाँ हुई थीं ।

महादेव बाबू ने दधीचि की भाँति अपनी तपश्चर्या एवं सेवा से इस विद्यालय की काया का मृत्यु पर्यन्त श्रृंगार करते हुए नवम्बर, 1967 ई. में इस धराधाम से महाप्रयाण किया । उनकी कर्मभूमि से उनकी पार्थिव काया तो उठ गयी, परन्तु अचल कर्मठता, महान त्याग, सरस्वती की अनन्य उपासना आदि गुण उनके यश शरीर को जन-जन में अविस्मरणीय कर गये । मिश्रजी के निधन से बेलमोहन के पार्श्ववर्त्ती गाँवों की जनता को ऐसा लगा जैसे उनके बीच से उसके परिवार का ही कोई प्रियतम व्यक्ति उठ गया। उस शोकाकुल-वेला में विद्यालय दो दिनों तक बन्द रहा और शोक सभाएँ आयोजित की गयी ।

अतिशय व्यस्तता के बाबजूद भी मिश्र जी में किसी भी उत्तरदायित्व को तत्परतापूर्वक निष्पादन करने की ललक थी । बिहार विद्यालय परीक्षा

समिति की ओर से उन्हें जब–जब परीक्षक नियुक्त किया गया, उन्होंने कुशलतापूर्वक उस कार्य का सम्पादन किया । महादेव बाबू ने सन् 1951 ई० से 1953 ई० तक, 1959 ई० से 1961 ई० तक तथा 1965 ई० से 1967 ई० तक मैट्रिकुलेशन परीक्षा में हिंदी साहित्य पत्र के परीक्षक के रूप में कार्य किया । 1934 से 1941 ई तक वे पटना विश्वविद्यालय की मैट्रिककुलेशन परीक्षा में भी हिंदी साहित्य के परीक्षक थे ।

3. समर्पित काँग्रेसकर्मी और सक्रिय क्रांतिकारी

सुदूर ग्राम्यांचल में स्वातंत्र्य-दीप को निष्काम और निष्कम्प प्रजज्वलित रखने वाले महादेव मिश्र जैसे धुर्धर्ष व्यक्ति विरले ही प्राप्त होते हैं । स्वतंत्रता सेनानी महादेव मिश्र सन् 1932 ई० में काँग्रेस दल में सम्मिलित हुए । स्वर्गीय मिश्र तत्कालीन झंझारपुर थाने में काँग्रेस के प्रचारकों-प्रसारकों और उन्नायकों में अग्रगण्य थे । उन दिनों झंझारपुर थाने में काँग्रेस दल के साधारण सदस्यों की संख्या नगण्य थी और अँगरेजी शासन के विरोधी होने के कारण काँग्रेस दल से सर्व साधारण को भय लगता था । परन्तु कठिन श्रम एवं अतिशय लगनशीलता के कारण इन्होंने काँग्रेस दल का उल्लेखनीय संगठन किया ।

काँग्रेस के प्रति अनन्य निष्ठा तथा देश को दासता की बेड़ियों से मुक्ति दिलाने के लिए हार्दिक व्याकुलता छात्रावस्था से ही महादेव बाबू में उद्यामता से उफन रही थी । उन्होंने अपने सहयोगियों के साथ गाँव-गाँव घूमकर लोगों के बीच काँग्रेस के सिद्धान्त, लक्ष्य एवं कार्यक्रमों को भरपूर प्रचार-प्रसार किया। जिससे उन थाने में कांग्रेस के प्रति लोगों की श्रद्धा बढ़ी और विश्वास की भावना जागृत हुई । काँग्रेस को संगठित करने के क्रम में उन्हें अवैतनिक अवकाश लेने में भी कोई हिचक नहीं होती थी ।

महादेव बाबू सन् 1938 से 1945 तक लगातार आठ वर्षों तक थाना काँग्रेस कमिटी, झंझारपुर के मंत्री रहे तथा इसी अवधि में जिला काँग्रेस कमिटी, दरभंगा की कार्यकारिणी समिति के सदस्य भी रहे । इस काल में झंझारपरु, मधेपुर और फुलपरास थाने की जनता के मस्तिष्क में उन्होंने काँग्रेस के प्रति सम्मोहन एवं जागरण का मंत्र फूँक दिया ।

सन् 1936 ई में स्व. चतुरानन दास काँग्रेस के उम्मीदवार थे । महादेव बाबू ने उन्हें विजयी बनाने के लिए परिश्रम तो किया ही, झंझारपुर थाने में काँग्रेस-संगठन को मजबूत बनाने में वे अग्रसर रहे। सन् 1936 ई० के द्वितीय विश्व युद्ध के अवसर पर बिना जन-सहयोग और अर्थ-संचय के महज एक काँग्रेस कर्मी के नाते इन्होंने युद्ध-विरोधी एवं व्यक्तिगत सत्याग्रह-प्रारंभ किया ।

अँगरेजी शासन के विरूद्ध व्यक्तिगत सत्याग्रह करने के कारण 1939 ई में सर्वश्री महादेव मिश्र एवं उनके सहयोगी रामचन्द्र झा को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें पन्द्रह दिनों तक कारावास की सजा भुगतनी पड़ी । रामचन्द्र झा 1934 ई० में महादेव बाबू के निकट सम्पर्क में आये और वे इनसे इतने प्रभावित हुए कि इनके द्वारा प्रस्तावित अँगरेज विरोधी क्रिया-कलापों तथा समाज सुधार कार्यक्रमों में प्रथम स्थानीय सहयोगी निरंतर बने रहे ।

10 अगस्त 1942 ई० को महात्मा गाँधी ने अखिल भारतीय कॉग्रेस कमिटी का बारह आदेशों वाला फर्मान निकाला जिनमें निम्नांकित मुख्य हैं :-

(1) गाँव के लोग असहयोग करें, सरकार को माल देना बन्द करें ।

(2) 16 वर्ष से ज्यादा उम्र वाले विद्यार्थी कॉलेज और विश्वविद्यालय का त्याग करें और इस अहिंसात्मक आन्दोलन को सफल बनावें । हमारे नेता गिरफ्तार कर लिये गये । जो चन्द बच रहे हैं, जल्द जेल में ठूँस दिये जायेंगे । विद्यार्थी उनकी जगह ले सकते हैं ।

(3) अपने देश के जीवन-मरण की लड़ाई में सरकार के अमलों को उचित है कि सरकार का साथ नहीं देकर देश का साथ दें । वे सभी सरकारी नौकरी छोड़ दें । वे वर्खास्त भी कर दिये जाँय तो भी परवाह न करें।

(4) फौज का हर सिपाही अपने को काँग्रेस जन समझें । शान्त सभा और जुलूसों को गोली और लाठी का शिकार न बनायें ।

(5) हरेक आदमी आप ही अपना नेता है । आपही अपनी राह दिखाने वाला है । हरेक प्रान्त को आन्दोलन के संचालन की पूरी आजादी है ।

प्रान्तीय काँग्रेस कमिटी, सदाकत आश्रम, पटना में स्व० देश रत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद द्वारा विभिन्न जिलों के मुख्य काँग्रेसियों को बैठक में

बुलाया गया था, जिसमें महादेव मिश्र भी उपस्थित हुए । इस बैठक में निम्नांकित बातें उभर कर सामने आई :-

(1) हमारे कुल कार्य अहिंसा के सिद्धान्त के अनुकूल ही होने चाहिये ।

(2) सरकार से पूर्ण असहयोग कर देना चाहिये । उसके सभी कार्य बन्द हो जाने चाहिये । जितने उसके नौकरान हैं सबों से अपील करनी चाहिये कि वे नौकरी छोड़ दें । स्कूल, कॉलेज, कचहरी, डाकघर, तारघर, रेलवे, जहाज आदि सभी बन्द हो जाना चाहिये । सरकारी राज व्यवस्था बिल्कुल रुक जानी चाहिये ।

(3) राष्ट्रीय सेवकों के दमन के लिये विदेशी फौज तथा यन्त्र आदि लाये जायेंगे । उनके प्रतिकार के लिये :-

(क) रेलों की पटरियाँ उखाड़कर लोगों का आना-जाना बन्द कर दिया जाय ।

(ख) तारों को काटकर समाचार का आना जाना बन्द कर दिया जाय ।

(ग) सड़कों और पुलों को तोड़कर मोटर आदि का आवागमन अवरुद्ध कर दिया जाय ।

(घ) किसी के हाथ में हिंसा के साधन यथा बन्दूक आदि हो तो उसे छीन कर तोड़ देना चाहिये ।

उपर्युक्त सन्देशों के साथ महादेव बाबू पटना से वापस आ गये । वापस आने के बाद 9 अगस्त को दरभंगा में कुलानन्द वैदिक के साथ मिलकर ताँगे वाले एवं रिक्शा-चालकों का जुलूस निकलवाया गया । दूसरे दिन मिथिला कॉलेज एवं मेडिकल स्कूल के छात्रगण अगस्त आन्दोलन में कूद पड़े । तब तक एक और सर्कुलर मिश्र जी को अग्रिम कार्यक्रम चलाने के लिये मिल गया जिसकी प्रमुख बातें निम्नांकित हैं :-

(1) गाँवों और शहरों में तमाम सभाएं की जायँ ।

(2) वकीलों और मुख्तारों को वकालत और मुख्तारी छोड़ देना चाहिये ।

(3) सभी विद्यार्थीयों को स्कूल और कॉलेज छोड़कर स्वतन्त्रता के आन्दोलन में कूद जाना चाहिये ।

(4) पुलिस भाइयों से अपील है कि आन्दोलनकारियों पर लाठी–गोली नहीं चलावें ।

(5) लोग चौकीदारी टैक्स देना बन्द कर दें ।

(6) सभी सरकारी कर्मचारी अपना काम करना बन्द कर दें ।

(7) सरकारी कार्यालयों पर राष्ट्रीय झंडा फहराया जाय ।

उपर्युक्त कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुए महादेव बाबू ने देश के अन्य भागों की तरह दरभंगा जिले के विभिन्न हिस्सों में स्वराजी रेलगाड़ी को प्रोत्साहित करने में बढ़ चढ़ कर भाग लिया । विद्यार्थियों एवं अन्य लोगों ने भी बिना टिकट ट्रेन में चढ़ना–उतरना प्रारम्भ कर दिया ।

दरभंगा जिला के तात्कालीन मधुबनी सब–डिविजन में भी आजादी की आग लपटने लगी । श्री यमुना सिंह के साथ महादेव मिश्र विद्यार्थियों को लेकर तोड़–फोड़ के काम को अंजाम देने लगे । ठाहर में रेलवे पुल तोड़ा गया, रेल की पटरियाँ उखाड़ी गईं । कलुआही का पुल तोड़ते समय एस०डी०ओ० साहेब वहाँ पहुचे और उनका मोटर तोड़ दिया गया । महादेव बाबू अपने साथियों के साथ राजनगर खजौली एवं जयनगर पहुँचकर छात्रों एवं नौजवानों के खून में अपने भाषणों से गर्मी ला दी ।

इसी बीच प्रान्तीय काँग्रेस कमिटी की ओर से सर्कूलर नं० 2 जारी किया गया जिसका ख्याल आन्दोलनकाारियों को रखना था । हमारी आजादी की लड़ााई शुरु हो गयी । अब तो इसमें मर मिटना है और विजय प्राप्त करना है । इस समय हर हिन्दुस्तानी आन्दोलन इस प्रकार का हो जिससे अंग्रेजी सरकार को काम काज चलाना असम्भव हो जाय ।

महादेव मिश्र, कुलानन्द वैदिक, कर्पूरी ठाकुर आदि के नेतृत्व में आन्दोलन कारियों ने दूर–दूर तक रेलवे लाइन एवं तार को बर्वाद कर दिया । इसमें रेल कर्मचारियों से भी काफी मदद मिली । सड़कों पर पेड़ काट–काट कर गिराया जाने लगा इस दरम्यान बीच–बीच में पुलिस एवं गोरे जब पहुचते तो वे कहीं छिप जाते; पुनः उनके जाने पर फिर तोड़–फोड़ में लग जाते । सिंघवाड़ा की ओर भी बहुत काम हुए । डाकखाने जला दिये गये । युनियन बोर्ड जला दिया गया । चौकीदारों एवं दकादारों की वर्दी–पेटी जला दी गयी ।

महादेव मिश्र एवं लक्ष्मण झा के नेतृत्व मे दरभंगा जिले के बिरौल थाने के सुपौल एवं रसियारी में भी आन्दोलनकारियों द्वारा तोड़-फोड़ किया गया । रसियारी के राज ग्रूप पर कब्जा करने के बाद वहाँ का तहसिलदार खुद कागजातों को जलाकर भाग गया । बिरौल डाकघर के सारे कागजात जला दिये गये ।

मधुबनी स्टेशन पर भी महादेव बाबू एवं उनके साथियों के नेतृत्व में आन्दोलनकारियों ने बबाल काटा । 16 हथियार बन्द पुलिस ट्रेन से जयनगर जा रही थी । फिर क्या था । क्रान्तिकारियों ने झट ईंजन को ट्रेन से अलग कर उसको नीचे गिरा दिया । तार एवं पटरियाँ हटा दी गईं ।

मिश्रजी के नेतृत्व में मधेपुर हाई स्कूल के छात्र एवं युवकों ने झंझारपुर स्टेशन के तार काटे एवं रेल की पटरियाँ उखाड़ दी । बलभद्रपुर, बेलौंचा, कछुवी एवं गंगापुर के सड़क पुल तथा दीप गाँव के पास का रेल पुल बर्बाद कर दिया गया । फुलपरास के रजिष्ट्री आफिस को जला दिया गया । घोघरडीहा एवं पिरोजगढ़ के बीच के रेल के तार को काट दिया गया।

इसी बीच प्रान्तीय काँग्रेस कमिटी ने सर्कुलर नम्बर 5 जारी किया, जिसके तहत आन्दोलनकारियों को गोरे सरकार के खिलाफ कार्रवाई करनी थी । सर्कुलर नं० 5 के निम्न प्रमुख निर्देश हैं :-

(1) शिक्षक और विद्यार्थी स्कूल-कॉलेज छोड़ दें ।

(2) वकील-मुख्तार कचहरी जाना छोड़ दें ।

(3) पुलिस-पलटन वाले सरकारी नौकरी छोड़ दें ।

(4) रेलवे लाइन उखाड़ दिये जाये, बड़े-बड़े पुल तोड़ दिये जायँ, तार और टेलीफोन के तार काट दिये जाँय, सड़कें काट दी जाय आदि ।

(5) कचहरी, अदालत, थाना, डाकघर आदि पर कब्जा कर लिया जाय एवं उन पर तिरंगा झंडा फहराया जाय ।

(6) चौकीदारी आदि कर देना बन्द कर दें ।

(7) पुलिस और पलटन से हथियार ले लिया जाय ।

(8) ''पुलिस हमारे भाई हैं'', ''पलटन हमारे भाई हैं'', हिन्दू–मुस्लिम भाई हैं, ''हिन्दूस्तान आजाद है, ''अहिंसा हमारा अस्त्र है'' आदि नारे लगाये जाँय ।

उपर्युक्त कार्यक्रमों की सफलता के लिये महादेव मिश्र ने जी जान की बाजी लगा दी । परिवार का उन्हें कोई मोह था ही नहीं । यही कारण था कि उनकी पत्नी त्रिवेणी देवी ने 3–4 वर्षों तक अपने बहनोई एवं मिश्र जी के गुरु–सादू श्री नागेश्वर मिश्र (तत्कालीन सरकारी वकील, जिला न्यायालय, लहेरियासराय, दरभंगा) के आवास पर एवं अपने मायके मुहम्मदपुर रेलवे स्टेशन से कुछ दूरी पर अवस्थित हरिहरपुर ग्राम में व्यतीत किया ।

श्री गणेश चन्द्र झा एवं अन्य प्रमुख क्रान्तिकारियों के साथ महादेव मिश्र एक दिन शाम के समय छात्रों एवं शहर वालों के साथ जुलूस में जा रहे थे । जुलूस जब थाने के पास की सड़क से गुजर रहा था तो डी० एस० पी० एवं पुलिस इन्सपेक्टर ने निहत्थों पर लाठी चार्ज करवाया । आन्दोलनकारियों ने मार सही किन्तु वे डटे रहे । दोनो पुलिस पदाधिकारियों ने सात बार फायरिंग की । फिर क्या था । जनाक्रोश इतना बढ़ा कि सभी लोग थाने पर टूट पड़े । इसमें अकलू एवं गणेशी ने पुलिस की वर्वरता से दम तोड़ दिया ।

दरभंगा जिले के खजौली थाने में भी महादेव मिश्र की सक्रिय भूमिका रही । खजौली थाने के काँग्रेसजन इस थाने को अपने कब्जा में लाना चाहते थे । एक कान्स्टेबुल पुलिस इन्सपेक्टर की बन्दूक लेकर थाना पर आ रहा था । महादेव बाबू के सहयोग से वहाँ के आन्दोलनकारियों ने उस कान्स्टेबुल से बन्दूक छीन लिया । बाद में दारोगा साहब बन्दूक लेने जब पहुँचे तो बहुत जद्दोजहद के बाद निर्णय हुआ कि वे गाँधी टोपी पहने हाथ में तिरंगा झंडा लें तथा अपना व्यक्तिगत चीजें लेकर थाना को छोड़ दें । ऐसा ही हुआ । दारोगा साहब अपनी बन्दूक एवं निजी चीजें लेकर थाना की चाबी आन्दोलनकारियों को सुपुर्द कर दिया ।

दरभंगा जिला के मधेपुर थाना में एक प्रकार से मिश्र जी के ही नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई लड़ी गई । ज्ञातव्य है कि उस समय महादेव बाबू कोरोनेशन हाई स्कूल, मधेपुर में शिक्षक थे । महात्मा गाँधी के आह्वान पर इन्होंने देश के आजाद होने तक की छुट्टी की माँग की थी, अन्यथा इस्तीफा स्वीकार करने की पेशकश की थी । इन्हें तत्कालीन प्रभाव

से 11 अगस्त 1942 ई को स्कूल की नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया। मिश्र जी सर्वश्री अनन्त नारायण झा, सूरत झा आदि कार्यकर्त्ताओं, छात्रों एवं अन्य आन्दोलनकारियों को लेकर मधेपुर थाना पर धावा बोल दिया। दारोगा भीड़ को बलपूर्वक रोकने का भरसक प्रयास किया, किन्तु आन्दोलनकारी कब मानने वाले थे। वे थाना के अहाते के अन्दर घुसते ही चले गये। कार्यकर्त्ताओं ने लाठी-गुलेल की मार सही, किन्तु विचलित नहीं हुए। बाद में क्रान्तिकारियों की ओर से भी रोड़े बरसाये जाने लगे। दो कान्स्टेबुल को इतनी मार लगी कि उन्हें अस्पताल भेजा गया। अन्य कान्स्टेबुल एवं चौकीदार लोग थाना छोड़ कर भाग गये। थाना को काफी नुकसान पहुँचाया। सिपाहियों की व्यक्तिगत चीजें, किबाड़ी, खिड़की, कागजात आदि जला दिये गये। थाने के दारोगा एवं अन्य लोग झंझारपुर भाग चले। झंझारपुर का रेलवे स्टेशन मधेपुर, फुलपरास एवं झंझारपुर थाने का अड्डा बना हुआ था। मधेपुर थाना के दारोगा का पीछा करते हुए महादेव बाबू के नेतृत्वमें क्रान्तिकारियों ने झंझारपुर रेलवे स्टेशन तक आये और उसे बन्दूक सुपुर्द करने के लिये कहा गया। दारोगा साहब बहुत अनुनय-विनय करने लगे और अपनी नौकरी खत्म होने की बातें करने लगे। अन्त में समझौता यह हुआ कि बन्दूक का नाल दारोगा साहब को दे दिया जाय एवं कुन्दा क्रान्तिकारियों को सुपुर्द कर दिया जाय। दारोगा जी सहमत हो गये। बन्दूक का हिसाब देने के लिये नाल दारोगा साहब को दे दिया गया एवं कुन्दा काँग्रेसियों के जिम्मे रहा।

झंझारपुर थाना का भी नेतृत्व महादेव मिश्रजी ही कर रहे थे। मिश्रजी निर्भय नारायण झा, जागेश्वर झा, रामचन्द्र झा आदि को साथ लेकर पूरे झंझारपुर थाने के विभिन्न गाँवों में छात्रों एवं नौजवानों के बीच अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ बैठक करने लगे। धीरे-धीरे क्रान्ति की चिनगारी सुलगने लगी। देखते ही देखते पूरे थाने में क्रान्ति की लहर फैल गई। रमाकान्त ठाकुर, सिमरा, राम गुलाम भंडारी झंझारपुर, भुवन मिश्र रखवारी, तृप्तिनारायण सिंह पस्टन आदि भी गोरे सरकार के खिलाफ 'करो या मरो' की कसम खा कर मिश्रजी के साथ अलख जगाने चल पड़े। अंततः एक दिन छात्रों एवं नौजवानों का करीब 15 हजार का जत्था जुलूस के शक्ल में झंझारपुर थाना पर कब्जा करने आ धमका। बहुत से क्रान्तिकारी लाठी, गड़ाँसा, भाला आदि से भी लैस थे। थानेदार को पहले ही इसकी भनक

लग चुकी थी । वह भी पूर्ण रुप से पहले से ही भीड़ को तितर–बितर करने को तैयार था । किन्तु जब उसने हथियारों से लैस असंख्य लोगों को देखा तो उसके पसीने छूटने लगे । दारोगा जी ने महादेव मिश्र को बात करने के लिये बुला भेजा । बातचीत के क्रम में उन्होंने मिश्रजी से कहा कि इतनी बड़ी भीड़ को यदि थाने के अन्दर आप लायेंगे तो वह बेकाबू हो जायगी ।

आपलोगों को थाना पर जो कुछ करना है करें । इस समझौते के बाद क्रान्तिकारियों को समझा बुझा कर शान्त किया गया । मिश्र जी के कुछ लोगों ने बाजार पर जाकर एक मिस्त्री को बुलाया तथा उससे थाने के विभिन्न कमरों का ताला तुड़वाया गया । दारोगा जी इतने डर गये थे कि अपनी पत्नी एवं बच्चों को दूसरे गाँव भेज दिये । खुद रात भर एक बगीचे में अपना समय व्यतीत किये । दूसरे दिन उन्होंने झंझारपुर स्टेशन पर अपना डेरा डाला ।

दरभंगा जिला के फुलपरास थाना में भी महादेव बाबू ने अगस्त क्रान्ति 1942 ई० में सक्रिय भूमिका निभाया । एक दिन की बात है जब मिश्र जी अन्य काँग्रेसियों के साथ करीब 2000 आन्दोलन कारियों को लेकर फुलपरास थाने पर चढ़ाई की । भीड़ ने आफिस के किवाड़ियों को तोड़ डाला । कुछ कागजातों को यत्र–तत्र फेंक दिया एवं कुछ को आग के हवाले कर दिया । दारोगा जी ने बन्दूक तानी बन्दूक तानते ही उनके निवास पर रोड़े बरसाये जाने लगे । ऐसा वातावरण देखकर दारोगा ने बन्दूक चलाने का इरादा छोड़ दिया और क्रान्तिकारी भी शान्तिपूर्वक चलते बने । दो दिन बाद ब्रह्मस्थान में एक आम सभा का आयोजन हुआ एवं डाकबंगला को काँग्रेस का कार्यालय बना लिया गया । एक समय थाना छोड़ देने के लिये दारोगा से कहा गया । उन्होंने कहा कि मेरी पत्नी की स्वास्थ्य विल्कुल खराब है । मुझे कुछ दिनों तक थाना के आवास रहने दिया जाय । स्वास्थ्य लाभ होते ही मैं यहाँ से चला जाऊँगा । मैं भी हिन्दुस्तानी हूँ और स्वराज चाहता हूँ । इस तरह इन्होंने आफिस एवं मालखाने की भी चाबी काँग्रसियों को दे दिया । किन्तु दारोगा दो रंगी चाल का व्यक्ति था । इधर वह दरभंगा–लहेरियासराय जिला सदरमुकाम में आन्दोलनकारियों के खिलाफ पत्र भी भेजा करता था ।

लौकहा एवं लौकही थाने में भी महादेव बाबू का काँग्रेसी क्रान्तिकारियों

के साथ अच्छी भूमिका रही । उन दोनो थानों के काँग्रेसियों ने इन्हें बुलाया और सुझाव देते हुए आन्दोलन में भी साथ रहने का आग्रह किया । महादेव बाबू का परिवार तो घर पर था नहीं जो इसकी चिन्ता इन्हें कभी सताती । नौकरी से भी वर्खास्त ही कर दिये गये थे । दिन और रात में इन्हें कभी फर्क पड़ता ही नहीं था । रात को भी वे विभिन्न थानों के काँग्रेसियों के साथ गाँव से बाहर किसी नदी किनारे, घने बगीचे, खेत, खरहोरि आदि स्थानों पर भी मंत्रणा करते थे एवं अग्रिम कार्य योजना तैयार की जाती थी ।

लौकही थाना में भी क्रान्तिकारियों के साथ थाना पर धावा बोला गया । मिश्रजी भी इसमें साथ थे । थाना का ताला तोड़ कर जमीन के अन्दर गड़े सेफ को उखाड़ कर तोड़ दिया गया । सभी सामान एवं कागजात जला दिये गये । दारोगा के प्रार्थना पर 15 दिनों तक उन्हें अपने डेरे में रहने दिया गया ।

मधुबनी शहर के गोली कांड जिसमें अकलू और गणेशी शहीद हुए थे के बाद शहरवाले छात्रों को साथ देने के लिये तैयार नहीं थे । 17 अगस्त को मधुबनी जेल से 79 कैदी भाग गये थे जिसमें कोई भी काँग्रसी नहीं था । इन घटनाओं ने शहर वासियों को झकझोर दिया । मधुबनी खादी भंडार में प्रान्त स्तर के मजे हुए कार्यकर्त्ता थे । कार्यकर्त्तागण अन्तिम चरण में पहुँचे स्वतंत्रता संग्राम को अंजाम तक पहुँचाने के लिय व्यग्र थे । बिहार चर्खा संघ के मंत्री बाबू लक्ष्मी नारायण जी ने कमर कस ली । इन्होंने महादेव बाबू से विमर्श किया एवं साथ देने का आग्रह किया । महादेव बाबू मधुबनी खादी भंडार के कार्यकत्ताओं, छात्रों एवं अन्य मधुबनी के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं के साथ तोड़-फोड़ में जुट गये ।

इधर दरभंगा के एस. पी. मि. सैलिसवरी झंझारपुर स्टेशन, झंझारपुर बाजार, फुलपरास एवं मधेपुर को पुलिस का अड्डा बनाकर महादेव मिश्र को जिन्दा या मुर्दा गिरफ्तारी के लिये सक्रिय हो गये । मिश्र जी की गिरफ्तारी को लेकर पुलिस, आगजनी, लूट-खसोट, अत्याचार आदि की पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी । सिमरा, कर्णपुर, हैंठीवाली, रुपौली, मेहथ आदि में विभिन्न घटनाओं को बर्बरतापूर्वक गोरे पुलिस ने अंजाम दिया । हैंठी वाली में तो साठ ग्रामीणों को एक ही रस्सा में बाँध कर परिवार के सामने ही लात, धूँसे, जूते आदि से पीटा गया । झंझारपुर थाने के रैयाम गाँव को

तो अंग्रेजी हुकूमत ने और अधिक बर्बादी के कगार पर पहुँचा दिया । इन चेतना शून्य पुलिस को क्या पता कि वे निर्दोष लोगों पर कहर बरसा रहे हैं। इन्हे महादेव बाबू का ठिकाना नहीं मालूम है । एक दिन की घटना है । सुबह में मूसलधार वर्षा हो रही थी । झंझारपुर थाना के दारोगा सशस्त्र बल एवं चौकीदार के साथ रैयाम के दुसाध टोला पर हमला किया । प्रारम्भ में कुछ हवाई फायरिंग किया गया । लोग चौंक कर अपने घरों से निकलने लगे। असमय में ऐसी आवाज सुनकर लोग भौचक रह गये । पूरा गाँव बाढ़ के पानी से घिरा हुआ था । टोले में ही लोग इधर-उधर भागने लगे और चिल्लाने लगे । पुलिस का पता नहीं होने के कारण जिधर पुलिस थी उधर ही लोग भाग रहे थे । पुलिस और चौकीदार इनलोगों को खदेड़कर पकड़ते और पीटते । कितने का सर फूटा और कितने बेहोश होकर गिर गये । बहुत से मकान तोड़ डाले गये । वर्तन एवं अन्य सभी सामान गोरों द्वारा लूट लिया गया । इसके बाद पुलिस-चौकीदारों ने औरतों के साथ पाशविक अत्याचार किया । इसके बाद पुरुष और स्त्रियों के शरीर से दारोगा के कहने पर कपड़े उतार लिये गये । रस्सी में बांध कर स्तनों एवं दूसरे अंगों को फोड़ दिया ।

झंझारपुर के खादी भंडार जलने के बाद कुछ कार्य कर्त्ताओं में मायूसी छा गई । महादेव मिश्र एवं रेवन्त नारायण ठाकुर ने मिलकर कुछ छात्र कार्यकत्ताओं को लेकर बाजार में जुलूस निकाला । इनलोगों में इतना जोश भर आया कि वे पुलिस से बन्दूक छीनने के लिये लोगों के साथ झंझारपुर स्टेशन की ओर रवाना हुए । इधर एस० पी० मि० सैलिसवरी सदल बल लक्ष्मीपुर कैथिनियाँ आये और पूरे गाँव को आग के हवाले कर दिया। बाजे-गाजे के साथ भीड़ स्टेशन के नजदीक ज्यों ही पहुँची कि पुलिस अन्धाधुन्ध फायरिंग करने लगी जिस गोली के शिकार पंचेलाल झा एवं पूरन खवास हुए । फिर एस. पी. दीप गाँव आकर दीप को भी आग के हवाले कर दिया ।

एस. पी. सदल बल मधेपुर आकर महादेव मिश्र, सीताराम, बनवारी, नगेन्द्र झा, खंतर महतो आदि के घर जला दिये ।

खजौली थाना काँग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी हजारी लाल गुप्ता ने खजौली के सक्रिय कार्यक्रम में महादेव मिश्र की सहभागिता का आग्रह

किया । मिश्र जी ने गुप्ता जी के आग्रह पर खजौली थाना क्षेत्र में भी गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभायी ।

अगस्त क्रान्ति में कोई भी कठोरतम कदम उठाने में गोरों ने कोई कसर नहीं छोड़ा । लूट, हत्या, अत्याचार के अतिरिक्त बलात्कार से भी अपने को परहेज नहीं रखा । दरभंगा जिला के सिंगिया, में दर्जनों महिलाओं के साथ बलात्कार एवं उत्पीड़न की घटनाएँ की । दिन भर धर-पकड़, घरों की तलाशी आदि एवं शाम होते ही व्यभिचार । मधुबनी सब डिविजन के लौकही थाने के कई लड़कियों को कई दिनों तक वहाँ की पुलिस ने गायब रखा । झंझारपुर थाने के समीप होकर जानेवाली सड़क कई दिनों तक पुलिसियाई आतंक एवं महिलाओं पर कहर टूटने के कारण सुनसान हो गया था । एक समय की घटना है । तीन महिला सवारियाँ जा रही थीं । उन्हें थाना के समीप घेर लिया गया । उनके जेवरात पुलिस द्वारा छीन लिये गये एवं सबों के साथ बलात्कार किया गया । फुलपरास थाना के सिसवार गाँव में रात को एक सोनारिन के घर में घुस कर बलात्कार किया गया एवं उसके शरीर के सोने-चाँदी के जेवर लूट लिये गये । 13 सितम्बर को झंझारपुर थाना के भराम गाँव में एक महिला के साथ पुलिस ने बलात्कार किया ।

अन्य प्रमुख काँग्रेसी आन्दोलनकारियों की तरह महादेव मिश्र को भी नेपाल जाकर पुलिसाइ कार्रवाई के कारण एवं शूर वारन्ट के चलते शरणार्थी बनना पड़ा । रात को नेपाल सीमा पार कर किसी सुनसान स्थान पर स्वयंसेवकों के साथ बैठक करते एवं 5-7 दिनों का अग्रिम कार्यक्रम बनाते तथा सुबह होते-होते सीमा पार हो जाते । उल्लेखनीय है कि इसका कारण यह नहीं था कि वे या अन्य प्रमुख आन्दोलनकारी भय के कारण ऐसा करते थे । ऐसा करने के निम्नांकित कारण थे । अक्टूबर 1942 ई० आते-आते स्वतंत्रता आन्दोलन पूरा बिहार व्यापी हो गया । गोरे सरकार भी गाँव-गाँव में हेडमैन चुना । सरकार द्वारा गाँवों में भेदिया बहाल किया गया जो अंग्रेजी हुकूमत को आन्दोलनकारियों की पल-पल की गतिविधियों की खबर देने लगा । इस दमनकारी नीति के कारण प्रमुख कार्यकर्त्ताओं को अग्रिम रणनीति चलाने के लिये भूमिगत होना पड़ा । जनता दब गयी, किन्तु कार्यकर्त्ता गुप्त तरीके से डटे रहे । आतंक पीड़ित जनता उन्हें भय के कारण आश्रय तक नहीं देती थी । कानून से बचने के लिये जयप्रकाश नारायण, कर्पूरी ठाकुर,

महादेव मिश्र, हरिनाथ मिश्र आदि नेपाल की शरण लेकर आन्दोलन को आगे बढ़ाया । सभी प्रमुख आन्दोलनकारी यदि गिरफ्तार ही हो जाते तो आन्दोलन आगे नहीं बढ़ सकता था ।

दरभंगा के तत्कालीन प्रमुख काँग्रेसी क्रान्तिकारी विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह का कहना है– ''सबों की धारणा थी कि बरसात के बाद हिन्दुस्तान पर जापानी आक्रमण जरूर होगा । उस अवसर के लिये बचा जाय । ज्योंही जापानी आक्रमण हो कि तोड़-फोड़ का काम जोरों से आरम्भ कर दिया जाय । इससे अंग्रेजों को दो मोर्चे पर शक्ति लगानी पड़ेगी । ऐसी परिस्थिति में अंग्रेजों को वाध्य होकर गाँधीजी को छोड़ना होगा और काँग्रेस से सुलह करनी होगी । अंग्रेजों के नहीं झुकने पर भी हमलोग इन दोनो युयुत्सु राष्ट्रों के भारतभूमि में लड़ते रहने से अराजकता की स्थिति में ऐसा दल संगठित करेंगे जो विजेता का पैर यहाँ जमने न देगा और उसे हमारे नेता से संधि करनी पड़ेगी । करीब-करीब सभी काँग्रेसियों के हृदय में यही बात थी । उनका नेपाल प्रवास कायरता के कारण नहीं था ।

प्रो० बलदेव नारायण कहते हैं – ''गुप्त आन्दोलनकारी भी कानून की नजर में तो फरार ही थे पर जनता की पहुँच के बाहर नहीं थे । क्षेत्र बदल कर, डेरा बहाल कर वा नाम बदल कर वे पीड़ित जनता के बीच जाते और काँग्रेस की खबरें सुनाया करते । वे पीड़ितों की धन जन से मदद भी करते ।''

जयप्रकाश नारायण के शब्दों में ''क्रान्ति एक नियम है जो काम करती ही है; एक गति है जो लक्ष्य पर पहुँचती ही है । अत: अगस्त-क्रान्ति को सफल होना ही है ।'' महादेव बाबू को जयप्रकाश बाबू के सानिध्य का हमेशा अवसर मिला था । उनसे मिश्र जी काफी प्रभावित थे । दरभंगा जिला के सूरजनारायण सिंह के साथ भी आन्दोलन में काम करने का मौका इन्हें मिला ।

गुलाली सुनार, देवनारायण गुरमैता, सूरज नारायण सिंह के साथ महादेव मिश्र जी उन प्रमुख आन्दोलनकारियों में थे जिन्होंने झंझारपुर रेलवे स्टेशन को जलाया । अगस्त आन्दोलन के ब्रिटिश साम्राज्य को अपना लोहा मानने के लिये मजबूर किया । उसने जनता को इस बार दिखला दिया कि किस तरह सत्य के लिये अहिंसा पूर्वक सत्याग्रही अपने को मिटा देता है ।

उल्लेखनीय है कि महादेव मिश्र राय साहेब पं० सिद्धिनाथ मिश्र, न्यायमूर्त्ति श्रीविश्वनाथ मिश्र के बाद गोनौली गाँव के तीसरे मैट्रिकुलेट बने। छात्र जीवन से ही इन्हें अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ हृदय में ज्वालामुखी धधक रही थी। मिश्रजी सार्वजनिक स्थलों पर कुछ-कुछ अन्तराल के बाद गोरे सरकार के खिलाफ एवं भारत माता की गुलामी की जंजीर तोड़ने हेतु भड़काऊ भाषण देते थे। दरभंगा जिला के मधुबनी सबडिबिजन के डी.एस.पी. को जब इसका पता चला तो झंझारपुर थाना के दारोगा को उन्होंने महादेव मिश्र को गिरफ्तार करने का आदेश दिया। फिर क्या था। मई 1930 में मिश्र जी गिरफ्तार कर लिये गये एवं 15 दिनों के बाद जेल से रिहा हुए। कारागार अवधि में ही गाँधी-इरविन पैक्ट हुआ। यही कारण हुआ कि मात्र 15 दिनों में इन्हें जेल से रिहाई हुई। गिरफ्तारी एवं जेल का जीवन व्यतीत करने से इस युवा क्रान्तिकारी के मन में तनिक भी भय नहीं उत्पन्न हुआ; अपितु इनके क्रान्तिकारी मस्तिष्क में आन्दोलन के लिये और अधिक चिनगारी सुलगने लगी। इन्होंने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ लोगों को एवं छात्र-नौजवानों को और अधिक भड़काना प्रारम्भ कर दिया। फलत: दुबारा 1932 ई० में मधुबनी में इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया तथा 11 दिनों के बाद जेल से बाहर आये।

फरवरी 1933 ई० में मिश्र जी गाँधी आश्रम, अहमदाबाद गये। साथ में झंझारपुर थानान्तर्गत रैयाम के रामचन्द्र झा भी थे। तीन महीने तक गाँधी जी के साथ इन्होंने अपना समय व्यतीत किया।

1934 ई० में बिहार में अत्यधिक शक्तिशाली भूकम्प हुआ था। यत्र-तत्र लाखों की तायदाद में मकान एवं फूस के घर भी धराशायी हो चुके थे। लोगों के घरो के अनाज भी क्षतिग्रस्त हो गये। जहाँ-तहाँ जमीन में बड़ी-बड़ी दरारें हो गयीं। दरारों से बालू एवं पानी निकले। हजारों लोगों की जाने गयीं। ऐसा दैवी प्रकोप बिहार में कभी पहले नहीं आया था। असंख्य लाशें मलवे के तले दब गयीं। ऐसी आपात स्थिति में काँग्रेस आगे आई एवं सभी प्रकार की सहायता पीड़ित परिवारों को करने लगी। आनन-फानन में काँग्रेस सहायता समिति का गठन किया गया। दरभंगा जिला काँग्रेस सहायता समिति में पन्द्रह सदस्य थे। सबों को भूकम्प पीड़ितों के मदद करने हेतु जिला को अलग-अलग क्षेत्रों में बाँटा गया। महादेव बाबू

को मधुबनी सब-डिबिजन के पूर्वी भाग के झंझारपुर, मधेपुर, फुलपरास, खजौली आदि थानों का प्रभार सौंपा गया । रैयाम निवासी रामचन्द्र झा, रखवारी निवासी भुवन मिश्र, फतनेश्वर मिश्र, धर्मडीहा निवासी देव कृष्ण कुँवर, पूर्व विधायक रसिक लाल यादव, देवनारायण गुरमैता, झंझारपुर के राम गुलाम भंडारी, यदुनन्दन प्रसाद, झौआ निवासी हरेकान्त झा आदि काँग्रेसी कार्यकर्त्ताओं को मिश्रजी एक टीम बनाकर भूकम्प पीड़ितों की मदद में जी-जान से जुट गये । काँग्रेस सहायता समिति द्वारा प्रदत्त राशि, वस्त्र, अनाज आदि का वितरण इन्हीं के नेतृत्व में किया गया । एक भी पीड़ित परिवार इस सहायता से वंचित नहीं रहा । सभी गाँवों एवं बाजारों में घूम घूमकर पीड़ितों की सूची इन्होंने बनवाया एवं जिसे जिस चीज की जरुरत थी; मुहैया करवाया गया ।

सन् 1939 ई० में अंग्रेजी शासन के विरोध में महादेव मिश्र ने झंझारपुर में व्यक्तिगत सत्याग्रह महात्मा गाँधी के आह्वान पर किया । गोरे सरकार को जब इनके इस हरकत का पता चला तो बस क्या था । ये गिरफ्तार कर लिये गये एवं 10 दिनों तक कारावास में इन्हें रहना पड़ा । अपने कारावास के अवधि में भी कैदियों के बीच अंग्रेजी शासन के खिलाफत की बात वे करते रहे एवं देश प्रेम की भावना उनमें भरते रहे । इस अवधि में स्कूल से इन्हें निलंबित कर दिया गया एवं कारावास से रिहाई के बाद इन्होंने स्कूल में योगदान किया ।

एक समय की बात है । रात के दो बजे थे । दरभंगा शहर के रामेश्वर प्रसाद, वकील के आवास पर क्रान्तिकारियों की बैठक आयोजित थी । लगभग 200 काँग्रेसी क्रान्तिकारियों ने इसमें भाग लिया । बलुआ निवासी ललित नारायण मिश्र (छात्र), कन्हैया प्रसाद, छात्र (लहेरियासराय) भी इसमें उपस्थित थे । जय प्रकाश नारायण एवं सूर्य नारायण सिंह की गिरफ्तारी के कारण यह बैठक बुलाई गयी थी । रुपये की नितान्त आवश्यकता थी । बैठक में सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया कि वैसे धनवान जो खुलकर आन्दोलनकारियों के साथ क्रिया-कलापों में भाग नहीं लेते किन्तु क्रान्तिकारियों के प्रति सहानुभूति रखते हुए भोजन एवं राशि से गुप्त रूप से मदद करते हैं उन्हीं लोगों से चन्दा की राशि माँगा जाय । महादेव बाबू ने दरभंगा जिला के विभिन्न गाँवों, बाजारों एवं शहरों से 15

लाख की राशि चन्दा के रुप में वसूल कर जिला कांग्रेस कार्यालय में जमा किया ।

एक समय की घटना है । बिहार के दरभंगा जिला के झंझारपुर थाने के रखवारी गाँव के घने जंगल में रात को महादेव मिश्र सात आन्दोलनकारियों के साथ अग्रिम कार्रवाई की योजना बना रहे थे । मिश्र जी योजना बना ही रहे थे कि रखबारी के भुवन मिश्र सबों के लिये भोजन एवं पानी लेकर आ पहुँचे । रामचन्द्र झा (रैयाम), अलिक नारायण झा (फुलपरास), दिगंबर झा (रुपौली) भोजन कर हाथ धो ही रहे थे कि भुवन मिश्र ने इन लोगों को बताया कि महादेव बाबू को पुलिस खोज रही है । अतः महादेव बाबू को दूसरे जिले चले जाने की सलाह दी । महादेव बाबू ने भोजन भी नहीं किया और सभी जंगल से निकल गये । गोरे सरकार का कोई भेदिया ने रखवारी के जंगल में रात में महादेव बाबू के होने की सूचना दी थी ।

एक समय की घटना है । लोहना एवं मनीगाछी स्टेशनों के बीच रेलवे पुल एवं तार को ध्वस्त करने की योजना थी । मिश्रजी को इस योजना के क्रियान्वयन के लिये प्रमुख आन्दोलनकारियों की बैठक करनी थी । सुरक्षित स्थान के लिये तारतम्य था । अन्त में फैसला लिया गया कि कमला नदी के किनारे बालुका राशि पर ही रात में बैठक की जाय । ऐसा ही हुआ । रात के 10 बजें 17 प्रमुख कांग्रेसियों के साथ बैठक हुई । छात्रों एवं अन्य नौजवानों को लेकर कल रात 11 बजे से तार एवं पुल को तोड़ने का काम करने का निर्णय लिया गया । दूसरे दिन रात में काफी लोग खंती, कुदाली आदि औजार लेकर आये एवं रेल पुल एवं तार को ध्वस्त किया गया ।

इतना ही से काम चलने वाला नहीं था । एक रेलगाड़ी झंझारपुर एवं निर्मली के बीच में रह गयी थी । पुलिस पदाधिकारी यातायात के लिये इस ट्रेन का उपयोग नहीं कर सकें; अतः लोहना से पूरब एवं झंझारपुर से पश्चिम के भी एक रेल पुल को तोड़ने की योजना बनाई गयी । फिर क्या था । मिश्र जी के इशारे पर इस काम को भी एक रात को अन्जाम दिया गया । इसमें कैथिनियाँ, नवटोल, दीप, मधेपुर, झंझारपुर बाजार आदि के युवा क्रान्तिकारी एवं छात्रों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया ।

इस बार के स्वतन्त्रता संग्राम का नजारा ही कुछ और था । यह अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ अन्तिम लड़ाई थी । 'करो या मरो', 'पुलिस

हमारा भाई है', आदि का नारा पूरे देश में गूँज रहा था । सभी प्रकार से गोरे सरकार को पंगु बनाने की योजना के साथ आन्दोलन चल रहा था । देश भर में यातायात के साधन को समाप्त करने हेतु, रेल पटरी, पुल एवं तार को जहाँ-तहाँ ध्वस्त किया जा रहा था । सड़क यातायात बाधित करने के लिये सड़क पुल को ध्वस्त किया जा रहा था । इसी कड़ी में विदेश्वर स्थान के समीप का एक सड़क पुल भी ध्वस्त किया जा रहा था । एक रात दीप के बगल एक खरहोरि में मिश्र जी ने सात प्रमुख क्रान्तिकारियों के साथ बैठक कर विचार-विमर्श किया । इस बैठक में निर्णय लिया गया कि कल रात को 25 कुदाल के साथ नौजवान एवं छात्रों को इस काम में लगा दिया जाय । फिर शिव नन्दन मिश्र, नरुआर के यहाँ से उस अन्धेरी रात में खरहोरि में सबों के लिये भोजन आया । भोजन के बाद सभी लोग जहाँ-तहाँ चले गये । देखते ही देखते दूसरे दिन रात में उस पुल को तोड़ दिया गया । फिर परतापुर गाँव के निकट के सड़क पुल की बारी आई । इसे भी बाद में रात को तोड़ दिया गया ।

आन्दोलनकारियों की मदद के लिये एवं बाहरी सूचना उनलोगों तक पहुँचाने, उनकी योजनाओं को समाज में छात्रों एवं नौजवान क्रान्तिकारियों तक पहुँचाने के लिये काफी गुप्त दूत रखे जाते थे । इधर गोरे सरकार भी विभिन्न गाँवों में भेदिया नियुक्त कर रखा था जो क्रान्तिकारियों का ठिकाना एवं क्रिया-कलापों की जानकारी उन्हें देती थी । एक घटना उन दिनों की है । जब महादेव मिश्र नेपाल के बेलही गाँव में गुप्तवास में थे । मिश्र जी ने दरभंगा जिला के खजौली, लौकहा एवं लदनियाँ थाने के प्रमुख 13 काँग्रेसी क्रान्तिकारियों को खुटौना के समीप एक घने जंगल में रात के 11 बजे गोरे सरकार के खिलाफ अग्रिम योजना बनाने हेतु गुप्त दूत द्वारा सूचना भेजी । पूर्व नियोजित तिथि की वह रात आई । महादेव बाबू रातों रात गाँवों का रास्ता छोड़ चर-चाँचर एवं खेत होकर पैदल चल दिये । इनके 11 बजे पहुँचने से पहले सभी क्रान्तिकारी उस निर्धारित जंगल में पहुँच चुके थे । बैठक में अग्रिम योजना एवं उसके क्रियान्वयन पर विचार किया गया । तीन घंटे तक बैठक चली । लौकहा, लदनियाँ एवं खजौली थाने में तोड़-फोड़, रजिष्ट्री ऑफिस, थाना आदि पर कब्जा करने आदि के बारे में निर्णय लिया गया । इसके बाद रातों रात पैदल चल कर उसी रास्ते से मिश्र जी भारत-नेपाल सीमा पार कर नेपाल क्षेत्र में पहुँच गये ।

महादेव मिश्र के कारनामों से पता चलता है कि इन्हें गोरे पुलिस को छक्के छुड़ाने में प्रायः बड़ा मजा आता था। एक दिन की घटना है। मिश्र जी रखबारी गाँव के भुवन मिश्र के यहाँ रात के करीब 12 बजे पहुँचे। भुवन बाबू के साथ अग्रिम कार्यक्रम के लिये इन्होंने कुछ गुफ्तगू की। दूसरे दिन अहले सुबह मिश्र जी को निकल जाना था। इधर पुलिस इन्हें चप्पे-चप्पे में तलाश रही थी। भुवन बाबू को भी इसकी जानकारी थी। इन्होंने मिश्र जी को जाने से रोका। इनका कहना था कि दिन में मिश्र जी नहीं निकलें। रात होने पर यहाँ से प्रस्थान करेंगे। महादेव बाबू मानने वाले नहीं थे। इन्होंने एक उपाय ढूँढ़ निकाला। भुवन बाबू से एक कोरवाला गंदी साड़ी, ब्लाउज, एवं एक लाठी देने का आग्रह किया। मिश्रजी ने तुरत साड़ी-ब्लाउज पहन लिया। लाठी हाथ में लेकर एक बूढ़ी के वेष में चल पड़े। खोपा और गाड़ाटोल गाँव के बीच जब वे जा रहे थे तो मि० सैलिसवरी, पुलिस अधीक्षक अपनी जिप में कुछ कॉन्स्टेबुलों को बिठा कर महादेव मिश्र की तलाश में घूम रहे थे। उन्होंने मिश्रजी को रोककर महादेव मिश्र के ठिकाने के बारे में पूछा। मिश्र जी घुँघट की आड़ से ही हाथ हिलाकर 'ना' में जबाब देकर आगे बढ़ गये।

सन् 1942 ई. के अगस्त महीने में इन्होनें महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन में सम्मिलित होकर स्वातंत्र्य संग्राम में कूद पड़े। झंझारपुर और मधेपुर थाने के प्रथम व्यक्ति महादेव बाबू हुए जिन्होंने सर्वप्रथम इस आन्दोलन में भाग लिया और दोनें ही थाने के स्वतंत्रता संग्राम के स्वयं सेवकों का सफल नेतृत्व भी किया। कोरेनेसन हाईस्कूल, मधेपुर के शिक्षक-पद, परिवार के भरण-पोषण एवं अपनी जीविका की परवाह न कर वे महात्मा गाँधी के आह्वान पर स्वातंत्र्य-यज्ञ में श्रम-समिधा समर्पित करने के लिए कटिबद्ध हो गये। महादेव बाबू ने प्रतिज्ञा की कि वे अँगरेजी शासन के अन्तर्गत किसी भी सेवा में नहीं रहेंगे।

25 अगस्त, 1942 ई० को कोरेनेसन हाई स्कूल, मधेपुर के सचिव के नाम इन्होंने दो माँगों सहित अपना इस्तीफा पत्र प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने लिखा था कि अँगरेजी सरकार के अन्तर्गत नौकरी नहीं करने की अनिच्छा के कारण त्याग-पत्र स्वीकार किया जाय, अन्यथा जबतक देश स्वतंत्र नहीं हो जाता है, तब तक अवकाश प्रदान किया जाय। किसी भी

व्यक्ति के लिए तत्कालीन अँगरेजी सरकार के प्रति आवेदन में ऐसे शब्दों को प्रयोग कर सेवा में बना रहना असंभव था । फलत: 11 सितम्बर, 1942 को कोरेनेसन उच्चांगल विद्यालय, मधेपुर की कार्यकारिणी समिति की बैठक में महादेव बाबू के आवेदन पर विचार करते हुए प्रस्ताव संख्या-9, दिनांक 11.09.42 के द्वारा उन्हें विद्यालय की सेवा से हटा दिया गया।

मधेपुर विद्यालय के बहुत से छात्र महादेव बाबू के आह्वान पर उनके साथ इस स्वतंत्रता संग्राम में अपनी आहुति देने के लिए व्यग्र-तत्पर हो उठे । महादेव बाबू हाथ में तिरंगा संभाले । स्वयं सेवकों के साथ-'अँगरेजो भारत छोड़ो, पुलिस हमारा भाई है, अँगरेजी-राज नाश हो', आदि नारों के साथ अँगरेजी-शासन से संघर्ष करने के लिए अग्रसर हुए । झंझारपुर तथा मधेपुर थाने की जनता एक नये जोश और नयी उमंग से भर उठी ।

महादेव बाबू ने सर्वप्रथम झंझारपुर थाना पर हमला करने का निश्चय किया । चूँकि महादेव बाबू को झंझारपुर तथा मधेपुर दोनों ही थानों को संगठित करना, कार्यक्रम निश्चित करना तथा अँगरेजों को सबक सिखाना था । फलत: उन्होंने एक संगठन बनाया और छात्रों की ओर से फुलपरास थाने के तिलाठ गाँव के छात्र दीपनारायण झा को नेतृत्व का भार सौंप दिया ।

11 अगस्त, 1942 ई. को दिन में महादेव बाबू लगभग चालीस सहयोगियों के साथ झंझारपुर थाना-परिसर में पहुँचे और एक सभा का आयोजन करने लगे । परन्तु थाना के तत्कालीन दारोगा जागेश्वर प्रसाद सिंह ने अपने सिपाहियों की मदद से इन लोगों को खदेड़ दिया ।

पुन: उसी दिन रात्रि के तीन बजे मिश्रजी के नेतृत्व में असंख्य कार्यकर्त्ताओं से झंझारपुर थाने पर आक्रमण कर उसे अस्त-व्यस्त कर दिया । परिणाम स्वरूप अँगरेज-प्रशासन के क्रुद्ध होकर महादेव बाबू को जिन्दा या मुर्दा उपस्थित करने वाले को पाँच हजार रूपये पुरस्कार देने की घोषणा कर दी ।

12 अगस्त, 1942 को संध्या चार बजे महादेव बाबू ने कुछ काँग्रेसी कार्यकत्ताओं तथा लगभग दस हजार अन्य लोगों के साथ मधेपुर थाना पर आक्रमण किया । सबों के हाथ में कोई-न कोई हथियार अवश्य था । अँगरेजी प्रशासन के विरूद्ध नारे लगाते हुए लोग मधेपुर थाना कार्यालय के

बरामदे पर चढ़ गये । तत्कालीन थाना प्रभारी श्री रामचन्द्र प्रसाद शर्मा ने महादेव बाबू को जन-समुदाय के साथ वापस जाने का आदेश दिया । परन्तु उन्होंने दारोगा के आदेश को नहीं माना । फिर दारोगा ने पुलिस को लाठी चार्ज करने का आदेश दिया । पुलिस द्वारा लाठी चार्ज करने पर वे लोग पीछे हट गये । कुछ देर वाद पुनः महादेव बाबू के नेतृत्व में लोग थाना परिसर में घुस गये । पुलिस द्वार दूसरी बार लाठी चार्ज किया गया । परन्तु इससे आन्दोलनकारियों में उत्साह की अभिवृद्धि हुई और लोगों ने महादेव बाबू के संकेत पर पुलिसकर्मियों पर ईट के टुकड़े बरसाने लगे । इस मुठभेड़ में पुलिस सहित दफादार एवं चौकीदार भी आहत हुए । कांस्टेबुल गिरिजा सिंह, नन्द किशोर सिंह, गफूर खाँ आदि को बुरी तरह पीटा गया । दारोगा को भय दिखाकर कार्यालय की चाभी ले ली गयी । मुख्य कार्यालय एवं माल खाना को खोलकर नगद रूपये निकाल लिए गये, कागजातों को फाड़ा गया और उसमें आग लगा दी गयी फिर पुलिस वैरेक में घुस कर कार्यकर्त्ताओं द्वारा उनकी पोशाकें लूट ली गई और उन्हें जलाकर भस्म कर दिया गया । पुलिस की चार साइकिले जला दी गयीं । पुलिस के रसोईघर से बर्तन, खाद्यान्न एवं मसाले लूट लिए गये । कांस्टेबुल गफूर खाँ की वर्दी उतार ली गयी । मधेपुर थाना के तत्तकालीन एक कांस्टेबुल का बयान है-"मैंने महादेव मिश्र को कागजातों, वर्दियों आदि को जलाते हुए देखा ।".............रामचन्द्र प्रसाद सिंह को कांस्टेबुल पद से इस्तीफा देने की धमकी दी गयी । थाना अहाते के विभिन्न घरों के दरवाजों और खिड़कियाँ आदि तोड़ डाले गये । कुछ अधजली सामग्री को छोड़ दिया गया । कुछ को तोड़ फोड़ कर तितर-बितर कर दिया गया । दारोगा साहब के क्वार्टर के एक मकान की छत को जला दिया गया । रसोई घर में भी आग फूँक दी गयी । इसके बाद दारोगा साहब को एक कागज पर इस्तीफा लिख देने को कहा गया । भय के कारण उन्होंने इस्तीफा लिख कर दे दिया । ए० एस० आई० गिरिजा सिंह की पगड़ी उसके सिर से उतार कर जला दी गयी ।

अँगरेज-प्रशासन की इस कारवाई से स्वयं सेवकों में थाना-भवन पर तिरंगा फहराने का संकल्प और दृढ़ हुआ । 15 अगस्त, 1942 को दिन के तीन बजे महादेव बाबू के नेतृत्व में लगभग तीन हजार स्वयं सेवकों की भीड़ 'अँगरेजी शासन नाश हो, अँगरेजी राज उठ गया, पुलिस हमार भाई है आदि नारे लगाते हुए थाना पर आक्रमण कर दिया । । मुख्य कार्यालय में स्वयं

सेवकों की ओर से अपना ताला लगा दिया । दारोगा सहित अन्य पुलिसकर्मियों को थाना-परिसर से बाहर भगा दिया गया ।

बाबू महादेव मिश्र के विरूद्ध भारतीय दण्ड संहिता की धारा 148, 379, 353 एवं धारा 38 (5) तथा भारत सुरक्षा कानून की धारा 34 के अन्तर्गत अभियोग-पत्र दाखिल किया गया ।

मैजिस्ट्रेट श्री जी. खाँ ने मिश्र जी पर चार्जेज विथ श्री होड्स के अन्तर्गत सेशन केस का अभियोग लगाया जिसमें भारतीय दंड संहिता की धाराएँ 395, 435, 147, भारत सुरक्षा कानून की धारा 36 (5) नियम 34 उपधारा '6' डी० आई० आर० का नियम 56 (6) थीं ।

महादेव बाबू के नेतृत्व में 18 अगस्त, 1942 को दिन के चार बजे पुनः लगभग दो हजार स्वयं सेवकों ने थाना पर आक्रमण किया । परन्तु इस बार का आक्रमण प्रवृत्यात्मक दृष्टि से अन्य बार से भिन्न था, क्योंकि इस बार स्वयं सेवक लाठी भाले और गड़ाँसे से सज्जित थे । स्वयं सेवकों ने दारोगा से थाने के सारे कागजात छीन कर जला दिये । महादेव बाबू ने दारोगा को धमकी दी कि वे मालखाना की चाभी तुरंत दे दें । अन्यथा यह उग्र भीड़ उन्हें तथा सभी सिपाहियों को मार डालेगा । दारोगा ने हिंसक भीड़ से भयभीत होकर थाने की चाभी दे दी । मालखाने से पोशाकः साइन बोर्ड तथा अन्य वस्तुएँ निकालकर जला दी गयी ।

19 अगस्त की रात में महादेव बाबू ने रैयाम ग्राम निवासी रामचन्द्र झा, रखवारी ग्राम निवासी फत्तेश्वर मिश्र तथा अन्य सहयोगियों के साथ दारोगा के निवास का घेराव किया एवं उन्हें परिवार सहित आवास तत्काल खाली करने के लिए मजबूर किया । परन्तु दारोगा ने विनयपूर्वक रात भर रहने देने की आज्ञा माँगी और प्रातः काल आवास खाली कर देने का आश्वासन दिया ।

20 अगस्त को पुनः महादेव बाबू ने अपने बीस-पच्चीस सहयोगियों के साथ दारोगा के आवास को घेर लिया । दारोगा को विवश होकर परिवार सहित आवास को खाली कर देना पड़ा । उसी कार्यालय में परिवार के साथ रात बितानी पड़ी । दूसरे दिन समिया गाँव में अपने एक दूर के सम्बन्धी के यहाँ परिवार के रहने की व्यवस्था की ।

महादेव बाबू का उद्देश्य था झंझारपुर थाने पर कब्जा करना और इसके लिए उन्होंने विभिन्न तिथियों पर अपने सहयोगियों के साथ आक्रमण किया । उनका कहना था– "यह थाना अँगरेज सरकार का नहीं है । दारोगा साहब या तो नौकरी से इस्तीफा दें या थाना हमलोगों के हवाले कर दें ।" अन्तत: इन्हें अपने कार्य में सफलता मिली । थाना पर तिरंगा झंडा फहराकर इन्होंने उस पर कब्जा कर लिया ।

उपर्युक्त घटना के पश्चात् झंझारपुर थाना के दारोगा जागेश्वर प्रसाद सिंह ने धारा 395, (भा० द० सं) भारत सुरक्षा कानून की धारा 34 के अन्तर्गत महादेव बाबू के ऊपर मुकदमा बनाकर जिला आरक्षी अधीक्षक के पास भेज दिया । महादेव बाबू को डकैती तथा पुलिस अधिकारी को अपनी ड्यूटी न करने देने के आरोप में जेल भेजने की सिफारिश भी उन्होंने की ।

अब अभियुक्त महादेव बाबू की खोज शुरू हो गयी । झंझारपुर तथा मधेपुर थाने के दारोगा, मि० सैलिसबरी, एस० पी०, डी० एस० पी० आदि महादेव बाबू को तलाशते रहे परन्तु जुझारू महादेव बाबू इनकी पकड़ से बाहर रहे ।

थाना काँग्रेस कमिटी के मंत्री होने के नाते अँगरेज प्रशासन को विफल करने तथा क्रान्ति को सफल बनाने का भार महादेव बाबू के सबल कंधे पर अवलम्बित था । उन्होंने सर्व सीमा, विदेश्वर स्थान, रूपौली, लालगंज, महरैल, मेहथ, कर्णपुर, गंगद्वार आदि स्थानों में रात में घूम-घूम कर गुप्त रूप से कार्यक्रम तैयार किया और अपने स्वयं सेवकों की सहायता से उन्हें सफल भी बनाया । उन्हीं के संकेत पर स्वयं सेबको ने कितने ही चौकीदार और पुलिस की वर्दियाँ और हथियार छीन लिए ।

25 अगस्त 1942 की बात है । महादेव बाबू पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार कुछ कार्यकर्त्ताओं के साथ कार्यकर्त्ता बैठक में सम्मिलित होने विदेश्वर स्थान जा रहे थे । जब वे विदेश्वर स्थान के समीप पहुँचे, तो उन्होंने मिस्टर सैलिसवरी, एस० पी० को कुछ बन्दूकधारी पुलिस के साथ घोड़े पर सवार आते हुए देखा । महादेव बाबू समझ गये कि वे लोग इन्हें ही खोजते हुए आ रहे है । वे शीघ्रता से अपने स्वयं सेवकों के साथ पुल के नीचे छिप गये । पुलिस अफसर एवं पुलिस को खाली हाथ निराश होकर लौटना

पड़ा । महादेव बाबू अपनी चतुराई से पुलिस अधिकारियों के छक्के छुड़ाते रहे । पुलिस भी उनसे तंग आ गयी । फलतः सरकार की ओर से महादेव मिश्र को देखते ही गोली मार देने का ओदश मिला । एक बार तो उनकी गर्दन से लगभग तीन इंच हटकर गोली निकल गई । फिर भी दृढ़-प्रतिज्ञ महादेव बाबू तनिक भी विचलित नहीं हुए । आखिर उन्हें मौत से खेलने में आनन्द जो आता था ।

'अगस्त क्रांति' नामक पुस्तक (भूमिका लेखक देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद) में प्रो० बलदेव नारायण ने 25 अगस्त, 1942 की घटना का विवरण देते हुए लिखा है-

"25 अगस्त को एस. पी. मिस्टर सैलिसवरी सदल-बल झंझारपुर आये और खादी भंडार के एक कमरा को जलाते हुए श्री महादेव मिश्र की तलाश में सर्व सीमा आये । वहाँ मालूम हुआ कि मिश्रजी स्वयं सेवकों को लेकर विदेश्वर स्थान की ओर गये है । सबके सब वहाँ पहुँचे जूता पहने ही धड़धड़ाते हुए शिवजी के मंदिर में घुस गये और किसी काँग्रेसी कोन देख पुजारियों और यात्रियों को पीटने लगे । पुजारियों ने गाली-मार सही, पर मिश्रा जी तथा उनके दल का पता गोरो को नहीं बतलाया । गोरों को निराशा हुई और उन्होनें थाना भर को परेशान करने का निश्चय किया । झंझारपुर स्टेशन झंझारपुर, मधेपुर और फुलपरास तीनों थानाओं का अड्डा बन गया और काफी गोरे हथियार बन्द जमकर रहने लगे । पहली सितम्बर को एस.पी. साहेब आये । उसके द्वारा सिमरा निवासी श्री रमाकान्त ठाकुर और महादेव मिश्र के गोनौली स्थित घर को लूटा-खसोटा गया ।"

सन् 1942 के स्वाधीनता आन्दोलन के समय महादेव बाबू ने सम्पूर्ण झंझारपुर और मधेपुर थाने में क्रान्ति की लहर फैला दी । वे महात्मा गाँधी द्वारा घोषित अठ्ठारह सूत्री कार्यक्रम को क्रियान्वित करने के लिए गाँव-गाँव घूमकर बैठकें आयोजित करते थे । उस समय कार्यक्रमों का कार्यान्वयन अँगरेज सरकार की आँख बचाकर करना पड़ता था । फलतः वे कुछ स्वयं सेवकों को हमेशा अपने साथ रखते थे । वे अधिकतर रात में बैठक आयोजित करते थे और अगली बैठक के लिए समय और स्थान भी निश्चित करते थे । उन्हें अँग्रेजी प्रशासन से छिपकर रहना पड़ता था । अतः वे प्रत्येक गाँव में दो-चार ऐसे स्वयं सेवकों को भी रखते

थे जों उन्हें समय पर अँग्रेजी प्रशासन की क्रिया कलापों की सूचना देते थे । इन कार्यक्रमों में रैयाम निवासी रामचन्द्र झा का सहयोग इन्हें सदा प्राप्त होता रहा ।

अँगरेजों के प्रतिघृणा उत्पन्न करने एवं उनके प्रति विद्रोह की ज्वाला भड़काने में महादेव बाबू ने झौआ एवं कोईलख ग्राम में विशेष बैठकें आयोजित कीं । इन गाँवों में बैठक आयोजित करने तथा कार्यक्रम को पूर्ण तत्परता के साथ कार्यान्वित करने में पं. हरिनाथ मिश्र की भूमिका अविस्मरणीय है ।

सन् बयालीस के आन्दोलन में महादेव बाबू ने जिस कष्ट, सहिष्णुता, निर्भीकता और संघर्षशीलता का परिचय दिया वह निश्चय ही वर्णनातीत है । घटना उसी समय की है । वे अपने दो स्वयं सेवकों के साथ झंझारपुर थाने के झौआ ग्राम में लगभग रात के दस बजे एक व्यक्ति के घर पहुँचे। भोजनोपरान्त दोनों स्वयं सेवक तो सो गये परन्तु मिश्र जी जागे रहे । एक तो उन्हें पता लग जाने पर पुलिस अधिकारी द्वारा गिरफ्तार कर लिए जाने का भय था और अगले कार्यक्रम के ठप्प हो जाने की चिंता थी, दूसरे उन्हें रातों रात अररिया पहुँचना था । उन्हें जागते रहने का लाभ यह हुआ कि उन्होंने चौकीदार को थाने की ओर शीघ्रता में जाते देख अपने स्वयं सेवकों को जगाया और लगभग 1 बजे रात में वहाँ से निकल पड़े और रास्ते में किसी खरहोर में उन लोंगों ने रात बिताई । वे अररिया के लक्ष्मी बाबू के यहाँ पहुँचे । वहाँ पहुँचने के कुछ ही क्षण पश्चात् उन्हें तलाशते दफादार पहुँचा । परन्तु उसे महादेव बाबू का पता नहीं चल सका ।

अपने कार्यक्रम को प्रचारित-प्रसारित करने के लिए उन्होंने खजौली थाने के बड़हरा, भुपट्टी, बाबूबरही आदि स्थानों में रात में घूमकर सभाओं का आयोजन किया तथा अपनी वक्तृत्व कला से लोगों को प्रभावित कर अपने कार्यक्रम को लदनिया थाना की ओर अग्रसर किया । उस इलाके में स्वयं सेवको को तैयार करने एवं कार्यक्रम को लागू करने में लदनियाँ के बाबू हरेराम झाने इनकी काफी मदद की।

सन् बयालीस की अगस्त क्रांति के पश्चात् काँग्रेस का लक्ष्य बना-जनता राज और जन-व्यवस्था। इसके लिए सम्पूर्ण बिहार में प्रत्येक थाने के कुछ गाँवों को मिलाकर विभिन्न खंडों में विभाजित किया गया तथा

उसके मध्य पंचायत समिति की स्थापना की गई । इस समिति का कार्य जनता की सुरक्षा तथा भोजन, बस्त्र एवं दवा आदि की व्यवस्था अपने स्तर से करना था जिससे जनता को अंगरेजी प्रशासन पर किसी भी रूप में निर्भर नहीं रहना पड़े ।

महादेव मिश्र ने इस पुनीत कार्य में अपने को पूर्ण तत्परता के साथ लगा दिया । उन्होनें न केवल झंझारपुर थाने में अपितु दूसरे थाने में भी वहाँ के नेताओं के आमंत्रण पर जाकर पंचायत समिति से होनेवाले व्यापक हित की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया । परन्तु पंचायत के आयोजन तथा जनताराज की स्थापना के क्रम में महादेव बाबू को अपने को हमेशा जोखिम में डालकर काम करना पड़ता था क्योंकि सुपौल, लदनियाँ, खजौली, फुलपरास, मधेपुर, झंझारपुर आदि थाना क्षेत्रों में पुलिस इन्हें बेसब्री से खोज रही थी । इसके अतिरिक्त दफादार, चौकीदार तथा खुफिया विभाग की ओर से मिश्र जी को गिरफ्तार करने के लिए सघन अभियान चल रहा था । सभी गाँवों की जनता को यह हिदायत दी गयी थी कि कोई महादेव मिश्र को अपने घर में शरण नहीं दें । जनता अँगरेजी सरकार से बुरी तरह आतंकित थी । विशेषकर गोनौली गाँव के लोग काफी आंतकित थे, क्योकि यदि महादेव बाबू अँगरेजी सरकार की गिरफ्त में नहीं आयेंगे, तो प्रशासन क्रोधित होकर बस्ती का ही नाश कर देगा । सरकार का कोई कर्मचारी प्रतिदिन उनके घर तलाश के लिए आता ही रहता था । महादेव बाबू की धर्मपत्नी श्रीमती त्रिवेणी देवी भयभीत होकर गाँव में किसी के घर छिपना भी चाहती थी, तो अपनी तबाही के भय से कोई उन्हें शरण नहीं देता था । इस विकट परिस्थिति में भी महादेव बाबू रात में गाँव-गाँव घूमकर लोंगो से विचार-विमर्श करते और पंचायत समिति का गठन करवाते । महादेव बाबू अपने कार्यक्रम को सुचारु रूप से चलाने तथा अंगरेजी प्रशासन से बचे रहने के लिए कभी बूढ़ी स्त्री, कभी लम्बी दाढ़ी-कमंडल धारी साधु और कभी मौलवी का छद्मवेश धारण कर वे निरन्तर घूमते रहते थे । जब अँगरेज अफसर को यह पता चल गया कि महादेव मिश्र किसी एक जगह स्थिर न रहकर रातों रात घूम कर काम करते है, तो उसने उनके ठहरने के अड्डे पर पुलिस को तैनात कर दिया और साथ में ऐसे व्यक्तियों को भी रखना प्रारम्भ किया जो उनकी पहचान करा सकें ।

गोनौली के पार्श्ववर्त्ती सात-आठ गाँवों को मिलाकर जब ग्राम सरकार की स्थापना की गयी, तो महादेव मिश्र उसके सभापति चुने गये। महादेव बाबू के क्रम में अँगरेज अफसरों ने गोनौली ग्राम के लोगों के साथ अत्याचार एवं बर्बरता की पराकाष्ठा कर दी।

अत: उन्हें गुप्तवास के लिए नेपाल तराई के बेलही मौआहा, राजविराज आदि ग्राम का चयन करना पड़ा। बेलही ग्राम बिहार प्रान्त के दिग्गज क्रातिकारियों-सर्व श्री जयप्रकाश नारायण, सूरज नारायण सिंह, कर्पूरी ठाकुर, रामचन्द्र झा; महादेव मिश्र आदि का अड्डा बन गया। यह गुप्तवास अँगरेजी सरकार से बचे रहकर क्रांति के कार्यक्रमों को गति प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया था वे लोग तराई भाग में लुकछिपकर रहते और रात के समय अपने कार्य क्षेत्र में पहुँच कर अग्रिम रणनीति के लिए बैठक करते थे।

एक ऐसी ही गुप्त बैठक झंझारपुर थाने के भैरव स्थान ग्राम से दक्षिण-पूर्व एक घने जंगल में रात्रि के बारह बजे हुई जिसमें पुलिस से अपनी रक्षा के लिए अस्त्र-शस्त्र खरीदनें का प्रस्ताव पारित किया गया तथा झंझारपुर डाकघर से एक लाख रुपये लूटकर धन-संग्रह की योजना बनी। परन्तु महादेव मिश्र, रामचन्द्र झा तथा कुछ अन्य क्रांतिकारियों ने इसका विरोध किया।

असम, बंगाल, उड़ीसा गोरखपुर, इलाहाबाद एवं बनारस में अँगरेजी सरकार के विरोध में जो भी बड़ी घटनाएं होती थीं, उनमें महादेव मिश्र एवं उनके सहयोगी रामचन्द्र झा को भी अभियुक्त बनाया जाता था।

उस समय के नेतृत्व प्रदान करनेवाले क्रान्तिकारी सरकारी गतिविधि की गुप्त सूचना देने के लिए व्यक्तिगत गुप्तचर रखते थे। एक बार श्री कुलदीप झा, मुख्तार के आवास पर क्रान्तिकारियों की एक विशाल बैठक आयोजित की गयी थी, जिसमें श्री जय प्रकाश नारायण, श्री सूरज नारायण सिंह, श्री गुलाबी सोनार आदि भी उपस्थित थे। इस बैठक में अन्य प्रस्तावों के अतिरिक्त सरकार से अपनी सुरक्षा के लिए अस्त्र-शस्त्र रखने सम्बन्धी प्रस्ताव भी पारित किया गया। बैठक चल ही रही थी कि एक व्यक्तिगत गुप्तचर ने आकर सूचना दी कि पुलिस का एक दस्ता उन लोंगो को गिरफ्तार करने के लिए इधर ही आ रही है। सूचना मिलते ही वे लोग बैठक समाप्त

कर इधर-उधर छिप गये, अन्यथा उस दिन इन लोगों को गिरफ्तारी निश्चित थी ।

एक बैठक श्री जय प्रकाश नारायण और श्री सूरज नारायण सिंह की गिरफ्तारी के बाद दरभंगा के श्री रामेश्वर प्रसाद, वकील के निवास पर दो बजे रात में हुई थी जिसमें लगभग दों सौ क्रांतिकारी उपस्थित थे । इन लोगों की गिरफ्तारी से उत्पन्न स्थिति और कार्यक्रमों को गतिप्रदान करने पर विचार करते हुए बैठक में चन्दा अभियान चलाने का प्रस्ताव भी पारित किया गया । अक्टूबर 1942 से अप्रैल 1943 अर्थात सात महीने तक गुप्त वास में रहकर क्रांतिकारी आन्दोलन का संचालन करते रहे । झंझारपुर थाने के रखवारी ग्राम से उत्तर एक घनघोर जंगल में महादेव मिश्र अपने सहयोगियों-रामचन्द्र झा, अलिक नारायण (फुलपरास), दिगम्बर झा, (रूपौली) आदि के साथ पाँच दिनों तक रहे और इस बीच झंझारपुर में रेल की पटरियों तथा टेलिफोन के तारों को तुड़वाया तथा सर्वसीमा, विदेश्वर, कैथिनियाँ, दीप, परतापुर तथा अन्य कई स्थानों के सड़क-पुलों को ध्वस्त करवाया । मधेपुर के इस अवधि में रखवारी के भुवनमिश्र दोनों शाम इन लोगों के लिए भोजन अपने घर से पहुचाते थे । उन्हीं की सूचना पर उन लोगों ने उस जंगल में रहना छोड़ दिया ।

एक समय मिश्र जी रात आठ बजे लुके छिपे अपने गाँव गोनौली पहुँचे और ग्यारह बजे रात में अपने घर के बगल में स्थित मध्य विद्यालय में अग्रिम कार्यक्रम निर्धारित करने के लिए बैठक कर रहे थे । इसी बीच एक व्यक्तिगत गुप्तचर ने सूचना दी कि पुलिस को यह पता चल गया है कि आप आज गाँव में रहेगें । अतः गाँव के बाहर सभी सड़कों पर आपकी गिरफ्तारी हेतु पुलिस और चौकीदार तैनात कर दिये गये हैं । फिर क्या था ? गिरफ्तारी से बचने के लिए उन्होंने चरवाहे का रूप धारण किया और एक भैस पर बैठ कर खेतों से गुजरते हुए दूसरे गाँव पहुँच गये और वहाँ भैस बाँध कर निकल गये ।

गुप्तवास की अवधि में महादेव मिश्र के परिवार के सदस्यों को खूब प्रताड़ित किया गया । एस.पी. और दारोगा घुड़सवार सेना के साथ गोनौली आये और महादेव मिश्र के घरों के सामान जब्त कर लिये तथा सभी घरों को तुड़वा दिया एक कांस्टेबल ने फूल के बगीचे को उजाड़ना प्रारंभ किया

और जब उनके बूढ़े चाचा ने कांस्टेबल से ऐसा न करने का आग्रह किया, तो उसने उन्हे पीटना शुरू किया। मिश्र जी का मधेपुर उच्च विद्यालय के सामने भी आवास था । अँग्रेजों ने वहाँ के तीन घरों को भी जलादिया । कोरोनेशन हाई स्कूल में जमा भविष्य-निधि राशि भी जब्त कर ली गयी । इस घटना का विवरण देते हुए प्रो. बलदेव नारायण ने अपनी पुस्तक "अगस्त क्रांति" में लिखा है-"फिर एस.पी. सदल बल मधेपुर आया । डाक बंगला से लोग भाग-चले । उनपर गोली चली पर कोई नही मरा । हाँ, गिरफ्तार हुआ । एस.पी. ने महादेव मिश्र का डेरा और सीताराम बनवारी के घर जला दिये" । परिवार के रहने का कोई ठिकाना नहीं रहा । परिवार मे इनकी पत्नी और तीन बच्चे थे । परन्तु इस विपत्ति की घड़ी में भी इनकी पत्नी त्रिवेणी देवी का मुख कभी मलिन नहीं हुआ । मिश्र जी के बूढ़े चाचा उनकी पत्नी को बच्चे सहित लहेरिया सराय पहुँचा आये । कुछ समय वहाँ रहने के बाद त्रिवेणी देवी अपनी मायके हरिहरपुर चली गयी । इस तरह मिश्र जी का घर बर्षो उजड़ा-वीरान रहा ।

स्थिति उस समय अत्यन्त हृदय विदारक और करुण हो जाती थी, जब आने पर उनके चाचा उन्हें देखकर फूट-फूट कर रोने लगते थे । एक बार जनकपुर गुप्तवास से मिश्र जी श्री जय प्रकाश नारायण, कर्पूरी ठाकुर, पं. हरिकान्त झा और दिगाम्बर झा के साथ रात को घर आये । इन लोगों को देखकर उनके चाचा इतने भाव-विह्व हो गये कि उन्हें शान्त करना बड़ा कठिन हो गया । उन लोगों ने उन्हें विविध प्रकार से ढाढ़स बँधाया और फिर चल पड़े । नेपाल के गुप्तवास के समय मिश्रजी पहले मोरंग जिलान्तर्गत नोकरी गाँव मे कुछ दिनों तक रहे । जय प्रकाश नारायण तथा डॉ. लोहिया की गिरफ्तारी के बाद उन्होंने हनुमान नगर में श्री रघुनाथ प्रसाद के यहाँ बड़ा अड्डा बनाया । वहीं से उन्होंने गुप्तदूत के द्वारा क्षेत्र के कार्यक्रमों को संचालित रखा । कुछ महीने उन्होंने जनकपुर में गुप्तवास किया । अँग्रेजो ने नेपाल सरकार से फरार को गिरफ्तार करने में सहायता माँगी थी । परन्तु मिश्रजी वहाँ भी बचे रहे ।

अन्ततः अथक परिश्रम के पश्चात् अँग्रेजी प्रशासन द्वारा महादेव बाबू को अप्रैल, 1943 ई. को कपिलेश्वर स्थान में गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें हिरासत में रखा गया । महादेव बाबू पर विभिन्न आपराधिक

मामले में विभिन्न धाराओं के अन्तर्गत मुकदमा चलाया गया । मधुबनी के स्पेशल मै जिस्ट्रेट के रूप में सरकार की अध्यादेश संख्या-11,1942 ई. के अन्तगत एम. उस्मान की नियुक्ति हुई । एम.उस्मान ने झंझारपुर थानाकांड में भारतीय दंड संहिता-प्रिभेन्टिव डिटेन्शन की धारा-395, आर.पी.सी., 435 आर.पी.सी. 56(4),38(4) डी. आर.एस.के अन्तर्गत फैसला देते हुए 5 वर्ष तथा 2, वर्षों की अलग रूप से कारावास की सजा दी तथा मधेपुर थाना कांड के सिलेसिले में मिश्रजी को दस वर्षों के कारावास दी । जेल में उन्हें अनेक यातनाएँ सहनी पड़ीं । परन्तु बाद में कैदी नेताओं के विरोध करने पर उन लोगों के रहन-सहन के स्तर में सुधार किया गया ।

इसी बीच पं. नागेश्वर मिश्र, सरकारी वकील, लहेरिया सराय कचहरी तथा अन्य लब्ध प्रतिष्ठ लोगों ने 9 अप्रेल 1943 ई. को स्पेशल मैजिस्ट्रेट मधुबनी के फैसले को चुनौती देते हुए क्रिमिनल अपील नं.-303-1943 के अन्तर्गत पटना उच्च न्यायालय में ऑनरेबुल मि. जस्टिस वर्मा तथा ऑनरेबुल जस्टिस मेरेडिथ के संयुक्त बेंच में महादेव मिश्र की ओर से आवेदन-पत्र दाखिल किया, इसमें वादी पक्ष में- महादेव मिश्र, महावीर सिंह और सीताराम सूरी तथा प्रतिवादी पक्ष में किंग एमपरर थे । वादी पक्ष के वकील एम.एन.पाल थे । उच्च न्यायालय में फैसला होते-होते पूरा वर्ष बीत गया । जेल-जीवन में भी महादेव मिश्र अपने कार्यक्रम को चलाते रहे । फलतः उन्हें स्थिर रूप से एक जेल में नहीं रहने दिया गया। मिश्र जी ने 10 अप्रैल, 1943 ई. को कैदी के रूप में दरभंगा जेल में प्रवेश किया । वहाँ से 19 अप्रैल 1943 को इनका स्थानान्तरण मधुबनी उप-करा में कर दिया गया । पुनः 20 अप्रैल 1943 को मधुबनी से इन्हें दरभंगा भेजा गया तथा 24 अप्रैल, 1943 को दरभंगा से मधुबनी । फिर उन्हें 16-9-43 को दरभंगा, 23-9-43 को मधुबनी के फैसले को रद्द कर महादेव बाबू को मुक्त कर दिया और महादेव बाबू दरभंगा जेल से मार्च, 1944 में रिहा हुए।

स्वतंत्रता सेनानी महादेव मिश्र ने पुनः अपने को रचनात्मक कार्यों में व्यस्त कर दिया । बेकारी तथा गरीबी मिटाने एवं अधिक से अधिक युवकों को स्वावलम्बी बनाने के उद्देश्य से जनवरी, 1947 ई. में गोनौली ग्राम में उन्होंने टेकनिकल विद्यालय की स्थापना कर एक क्रांतिकारी कदम उठाया।

उस समय समस्त दरभंगा जिला में भी टेक्निकल विद्यालय नहीं था । इस विद्यालय के निमित्त मरुकिया ग्राम निवासी महंथ राजेश्वर गिरि ने उदारता पूर्वक नगद 1300/–रुपये दान के रूप में दिया । इसके अतिरिक्त महादेव बाबू ने चन्दा अभियान प्रारंभ किया और लोंगो ने उत्साह पूर्वक दान भी दिया ।

महादेव बाबू ने प्राप्त चन्दे से विद्यालय–भवन का निर्माण करवाया और कुछ शिक्षकों की नियुक्तियाँ हुई । महादेव बाबू इस टेकनिकल विद्यालय की प्रबन्ध कारिणी समिति के सचिव नियुक्त हुए। पं. हरिनाथ मिश्र के कर–कमलों से इस विद्यालय का विधिवत्–उद्घाटन हुआ । छात्रों के नामांकन हुए। करघे मँगवाये गये और कपड़े भी तैयार होने लगे । इस विद्यालय के विकास से कुछ असामाजिक तत्व ईर्ष्या करने लगे । उन लोंगो के द्वारा बदमाशों से सामानों की विद्यालय से चोरी तो करवायी ही गयी, वहाँ के कर्मचारियों को तंग भी करवाया गया लोगों में विद्यालय के विरूद्ध अनेक अनर्गल अफवाहें भी फैलायी गयीं । अन्ततोगत्वा जनता की आशा–आकांक्षाओं का प्रतीक यह विद्यालय असमय ही ध्वस्त हो गया ।

मधुबनी अनुमंडल की स्थानीय शिक्षा कमिटी के सदस्य के रूप में शिक्षा–जगत् में महादेव बाबू का योगदान सराहनीय है । तत्कालीन स्थानीय परिषद्, मधुबनी के अध्यक्ष पं. गणेशचन्द्र झा ने इन्हें पत्रांक 957'59, दिनांक, 9–71954 के द्वारा शिक्षा कमिटी का सदस्य मनोनीत किया । उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अपेक्षित सुधार के लिए अनेक सलाह एवं योजनाऐं प्रस्तुत कीं ।

जिलाधीश, दरभंगा द्वारा सन् 1961 ई. में मिश्रजी को राजनीतिक पीड़ित का प्रमाण–पत्र प्रदान किया गया और इस आधार पर इन्हें बिहार सरकार की ओर से क्रमश: 500/– रुपये तथा 400 रुपये की राशि सहायतार्थ प्राप्त हुई थी ।

सन् 1956 के पश्चात् भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस में कुछ ऐसे तत्त्वों एवं व्यक्तियों का प्रवेश एवं प्रभुत्व स्थापित हुआ जिससे न केवल काँग्रेस–संगठन दुर्बल हुआ अपितु उसमें बिखराव भी आया । उसी के परिणाम स्वरूप भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस विक्षुब्धों का एक दल अलग हो गया और उन्ही के नेतृत्व में एक अलग दल 'स्वतंत्र पार्टी' की स्थापना हुई ।

महादेव बाबू भी जानकी नंदन सिंह के साथ 1960 ई में स्वतंत्रत पार्टी में शामिल हो गये । झंझारपुर थाना की स्वतंत्र पार्टी शाखा के श्री मिश्र जी अध्यक्ष निर्वाचित हुए । फिर, मिश्र जी स्वतंत्र पार्टी के संगठन के कार्य में जुट गये । सन् 1962 की बिहार विधान सभा के आम चुनाव में मिश्र जी झंझारपुर विधान सभा क्षेत्र से स्वतंत्र पार्टी के प्रत्याशी भी हुए ।

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस का पुनः संगठन हुआ । श्रीमती गाँधी ने भगीरथ-श्रम के पश्चात् काँग्रेस के हिलते हुए स्तम्भ को गहराई में स्थापित कर उसे स्थिरता प्रदान की । महादेव बाबू ने तत्कालीन मुख्यमंत्री पं. विनोदानन्द झा के आग्रह पर सन् 1964 में जिला काँग्रेस कमिटी, दरभंगा के कार्यालय में पुनः बाबू जानकी नंदन सिंह के साथ काँग्रेस में प्रवेश किया । उन्होंने फिर काँग्रेस-संगठन को मजबूत बनाने में अपनी सक्रियता दिखाई ।

सन् 1965 में महादेव बाबू ने प्रखंड विकास सेवा समिति, अंधराठाढ़ी की स्थापाना की । महादेव बाबू के आहवान पर समस्त प्रखंड के काँग्रेसी कार्यकत्ताओं एवं लोगों की आम बैठक हुई, जिसमें वे सर्वसम्मति से इस समिति के अध्यक्ष निर्वाचित हुए । इस समिति का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में सड़क, शिक्षा, कृषि एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी विकासी-कार्य सम्पादित करना था । गाँधीजी के रचनात्मक कार्य तथा विनोवा जी के ग्राम-विकास कार्य-धारा से गाँव को सर्वांगीण विकास की ओर अग्रसर करना था जिससे ग्रामीणों की उन्नति के साथ-साथ सरकार और जनता में सामंजस्य स्थापित हो सके । विकास सेवा समिति की स्थपना की सूचना भारतीय काँग्रेस कमिटी, बिहार प्रान्तीय काँग्रेस कमिटी, जिला काँग्रेस कमिटी, दरभंगा को भी दी गयी । विभिन्न क्षेत्रों में विकासात्मक एवं रचनात्मक कार्य भी प्रारंभ हो गये । परन्तु महादेव बाबू का बहुत दिनों तक जलोदार रोग से ग्रसित रहने के कारण इस समिति के कार्यक्रमों में शिथिलता आ गयी ।

महादेव बाबू ने कार्तिक शुक्ल, त्रयोदशी, मंलवार तदनुसार नवम्बर, 1967 ई. को रात के 3 बजे जलोदर रोग से पीड़ित होकर अपने पीछे पांचपुत्रियाँ, एक पुत्र, पत्नी एवं असंख्य कीर्त्तियों को छोड़ नश्वर शरीर का परित्याग कर महाप्रयाण किया । मिश्रजी की मृत्यु के पाँच वर्षो के बाद

भारत सरकार द्वारा उन्हें स्वतंत्रता सेनानी के सम्मान से सम्मानित किया गया । पन्द्रह अगस्त, 1972 ई. से भारत सरकार द्वारा उनकी विधवा श्रीमती त्रिवेणी देवी को स्वतंता सेनानी पेंशन मिल रहा है ।

वस्तुत: महादेव मिश्र जैसे कर्मठ, निर्भीक, नि:स्वार्थ और समर्पित देशभक्त के ऋण को किंचित् पेंशन के द्वारा नहीं चुकाया जा सकता । दिवंगत महादेव बाबू की आत्मा को शान्ति तभी प्राप्त होगा, जब भारतवासी उनके आदर्शो को अपने जीवन में उतारकर चरितार्थ करेंगे । पेनशन प्राप्त करने के लिए ही उन्होने स्वातंत्र्य-यज्ञ में अपने जीवन का उत्सर्ग नहीं किया था ।

●

4. सहृदय समाजसेवी एवं दलितोद्धारक

महादेव बाबू भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सक्रिय सेनानी और सच्चे देशभक्त तो थे ही सहृदय समाजसेवी और दलितोद्धारक भी थे । थाना काँग्रेस कमिटी, झंझारपुर के मंत्री पद पर रहते हुए उनका सम्पर्क उस क्षेत्र के सभी वर्गो के लोगों से घनिष्ठ रूप में हो गया था । उस क्षेत्र की जनता के व्यापक हितों की रक्षा, महामारी से सुरक्षा एवं जनता पंचायत का सुचारू रूप से संचालन उनकी दिनचर्या बन चुकी थी ।

महादेव बाबू समाज के पीड़ितों एवं दलितों की सेवा के लिए प्रारंभिक जीवन से ही कृत संकल्पित थे । उन्होंने 1934 के भूकम्प पीडितों की सेवा के लिए मधेपुर उच्चांगल विद्यालय से चार महीने का अवैतनिक अवकाश लिया था । उन्होंने काँग्रेस सहायता समिति द्वारा प्रदन्त सहायता सामग्री को पीड़ितों तक पहुँचाया और क्षति के अनुरूप रूपये, वस्त्र, खाद्यान्न, दवा आदि वस्तुओं को वितरित करवाया । इस कार्य में रैयाम निवासी श्री रामचन्द्र झा ने उल्लेखनीय योगदान किया ।

सन् 1944 ई के अगस्त महीने में सम्पूर्ण बिहार में हैजे का व्यापक प्रकोप हो गया । झंझारपुर क्षेत्र भी इससे वंचित नहीं रहा । छूत की इस बीमारी से लोग इतने भयाक्रांत थे कि कोई किसी को देखने, रोगी की सेवा करने या हैजे की रोकथाम का प्रयास करने का साहस नहीं कर पाता था । जनता राज तथा पंचायत की ओर से समस्त बिहार में इस महामारी से त्राण पाने की व्यवस्था की गयी । महादेव बाबू ने पूरी तत्परता के साथ थाने में सेवादल का संगठन किया तथा सेवा दल को निर्देश दिया कि आस–पास के गाँवो में घूमकर रोगियों के सहायतार्थ आवश्यक्तानुसार दवा और डाक्टर के

लिए सूचित करें जिससे समय पर सही उपचार संभव हो सके । मिश्र जी स्वयं घर-घर जाकर रोगियों का निरीक्षण करते थे तथा आवश्यकतानुसार दवा एवं डाक्टर की सेवा उपलब्ध कराते थे । नवम्बर, 1944 तक अनवरत वे इस महान् सेवा-कार्य में तल्लीन रहे । उन्हीं के आग्रह पर तत्कालीन नेता माननीय अनुग्रह नारायण सिंह तथा सत्येन्द्र नारायण सिंह इस क्षेत्र के दौरे पर आये और महामारी की स्थिति का निरीक्षण किया ।

ग्राम काँग्रेस सरकार के सभापति के रूप में महादेव बाबू की समाजसेवा भी प्रशंसनीय रही । वे उस क्षेत्र की पीड़ितों की शिकायतों को लिखित रूप में लेते थे और उस पर निष्पक्षता पूर्वक विचार कर लिखित रूप में उचित फैसला दिया करते थे । उनकी दृष्टि में उच्च और निम्नवर्ग, धनी और निर्धन जाति और धर्म को लेकर कोई पूर्वाग्रह धारणा नहीं थी । वे सबों के हितों की रक्षा के लिए सतत तत्पर रहते थे । विशेषकर दलितों और गरीबों के लिए उनके हृदय में असीम अनुराग था ।

एक बार देवहार गाँव के एक पूँजीपति के द्वारा उसी गाँव के एक कमजोर वर्ग के व्यक्ति पर अत्याचार किया गया । पूँजीपति के द्वारा उस कमजोर व्यक्ति के बगीचे के लगभग 15 आम के पेड़ कटवा दिये गये और उसे बदमाशों से पिटवाया भी । जब उस पीड़ित व्यक्ति द्वारा महादेव बाबू के पास आवेदन-पत्र जमा किया गया और उचित न्याय की प्रार्थना की गयी तो महादेव बाबू ने कुछ पंचों के साथ उस घटना की पूर्ण तत्परता से जाँच की और उसकी एक रिपोर्ट सरकार के पास भेजी गयी । ग्राम सरकार के सभापति के रूप में उन्होंने उस घटना की तीव्र भर्त्सना करते हुए उस अत्याचारी पूँजीपति से गलती स्वीकार कर क्षमा-याचना करने को कहा और उस पूँजीपति को क्षमा-याचना करनी पड़ी ।

दूसरी घटना गोनौली गाँव की है । ब्राह्मण-बहुल गोनौली गाँव में उसी जाति का दबदबा है । एक ब्राह्मण द्वारा एक हरिजन से कोई वस्तु देने को कहा गया परन्तु उस हरिजन वह वस्तु देने से इन्कार किया, तो उसे ब्राह्मणों का कोपभाजन बनना पड़ा । उस हरिजन द्वारा महादेव बाबू के पास लिखित शिकायत दी गयी । महादेव बाबू ने ग्राम पंचायत, काँग्रेस सरकार की बैठक में सम्यक् विचारोपरान्त दिनांक 8-10-1947 को सभापति के रूप में लिखित फैसला सुनया:-

"इसमें ब्राह्मण लोग दोषी हैं । दुसाध लोगों की अपनी चीज थी । खुशी से किसी को देता या नहीं उसकी खुशी थी । ब्राह्मण लोगों ने छीनने की कोशिश की । यह उनकी गलती है । अतः वे लोग क्षमाप्रार्थी होवे" ।

कहना न होगा कि उदार एवं निष्कलुष महादेव बाबू के घर का द्वार सभी जाति, धर्म और वर्ग के लिए हमेशा खुला रहता था और उनके यहाँ सबका समानरूप से आदर होता था ।

जेल यातना से मुक्ति के पश्चात् महादेव बाबू ने समाज में सौहार्द और सामंजस्य स्थापित करने के उद्देश्य से कीर्तन-मंडली की स्थापना की। उस कीर्तन-मंडली में बैठकर वे स्वयं हारमोनियम और तबला बजाते थे और दूसरे को सिखाते भी थे ।

समाज और काँग्रेस की निष्काम एवं निःस्वार्थ सेवा करते रहने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति नाजुक होती गयी । यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं कि महादेव बाबू समर्पित समाजसेवी एवं सक्रिय काँग्रेसकर्मी होकर भी इसी कारण राष्ट्रीय स्तर के नेता नही बन सके ।

5. धर्म-भावना, कला-संगीत प्रियता एवं साहित्यिकता

धर्म, कला और साहित्य भारतीय संस्कृति के प्राण हैं । भारतभूमि आध्यात्मिक है और इसकी अलग पहचान रही है । यहाँ विभिन्न धर्मो एवं धर्मावलम्बियों के पदार्पण के बावजूद यहाँ की संस्कृति अक्षुण्ण रही है । भारत की धर्म भावना विश्व-बन्धुत्व से अनुप्रेरित और सर्वधर्म समभाव से अनुप्राणित रही है ।

महादेव मिश्र मिथिला की सुदीर्घ परम्परानुरूप बहु देवोपासक हिन्दू भक्त थे परन्तु उनमें अंध धार्मिकताजन्य कट्टरता नहीं थी । बाह्याडम्बर एवं बाह्याचार की संकीर्णता इनके उदार-हृदय और मस्तिष्क को तनिक भी कलुषित नहीं कर पायी । महादेव बाबू अनन्य शिवोपासक थे । शिवोपासना-काल में वे सांसारिकता को पूर्णतः विस्मृत कर देते थे । देवाधिदेव महादेव की भाँति महादेव बाबू जीवन-पर्यन्त स्वयं अभाव का विष पीकर दूसरों के लिए अमृत का दान करते रहे । आर्थिक-जर्जर परिवार के भरण-पोषण की उन्हें कभी चिन्ता हुई ही नहीं । भगवान शिव की पूजार्चना में स्वरचित भजन गाकर वे पूर्ण तल्लीन हो जाते थे ।

जीवन के उत्तरार्द्ध काल में उनकी शिव-भक्ति अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी थी । शायद उन्हें अपने जीवन के निकट अन्त का अनुभव हो चुका था । जलोदर से पीड़ित रहने की अवस्था और आँखों की ज्योति कम हो जाने की स्थिति में वे स्वरचित रचनाएँ गाकर सुनाते और दूसरे से लिपिबद्ध करवाते थे । दरभंगा अस्पताल में पाँच महीने तक चिकित्सा करवाने के बाद जब वे निराश होकर पालकी पर अपनें गाँव वापस लौट रहें थे तो गोनौली गाँव से आधा मील पहले ही उन्होंने मुक्तेश्वर नाथ महादेव

मंदिर के पास पालकी रखने का आदेश दिया तथा शिव-दर्शन की इच्छा प्रकट की । उन्हें सहारा देकर मंदिर में पहुँचाया गया और वे घण्टों तक शिव जी की पूजा करते रहे । पूजा समाप्ति के पश्चात उन्होने मुस्कुराते हुए महादेव से कहा-"हे भोले ! तुम्हारा एक नाम महादेव भी है । मुझे भी लोग महादेव ही कहा करते हैं । तूने मुझे अपने से दूर भगा दिया । परन्तु आज मैने तूझे पकड़ ही लिया । तुम हारे और मै जीता ।" तत्पश्चात् उनकी पालकी आगे बढ़ी । उसी रात 3 बजे उनका देहान्त हो गया ।

दिनांक 10.11.1967 के 4 बजे अपराह्न मिश्र जी का रूग्न शरीर गोनौली गाँव अवस्थित निवास स्थान पर पालकी द्वारा आया । गाँव ही नहीं इलाके के गण्यमान्य व्यक्ति मिश्रजी के दर्शन के लिये आने लगे । अपार भीड़ जमा हो गई । मृत्यु के कुछ घंटे ही बाँकी थे; फिर भी वे होश में थे। लोगों के प्रश्नों का जवाब वे देते रहे । रात भर दुर्गापाठ एवं गीता पाठ होता रहा । दि० 11 नवम्बर, 1967 ई० के चार बजे पूर्वाह्न महादेव बाबू के प्राण शून्य में विलीन हो गया ।

शिव के अतिरिक्त दुर्गा तथा कृष्ण में भी उनकी आस्था थी । वे सतत् दुर्गासप्तशती और श्रीमद्भागवद् गीता' अपने साथ रहते थे । अपने नेपाल गुप्तवास में उन्होंने दोनों ही ग्रंथों को कंठस्थ कर लिया । उनके पूजा-पाठ का कोई समय निश्चित नहीं था, परन्तु कभी समय निकाल कर वे प्रतिदिन भगवद् भजन कर लिया करते थे । वे हर रविवार को घर या बाहर संकीर्तन प्रेमियों के साथ स्वयं हारमोनियम बजाकर शिव, दुर्गा, राम, कृष्ण, हनुमान आदि का भजन गाकर भाव-विभोर हो जाते थे । आश्विन में कलश स्थापना से विजयादशमी तक नित्य सुबह-शाम तीन-चार घन्टे तक पूजा-पाठ करते थे ।

महादेव बाबू ने अपनी मृत्यु से पाँच-छह घंटे पूर्व गीता सुनने की इच्छा प्रकट की । उनकी इच्छानुरूप एक व्यक्ति ने गीता सुनाना प्रारम्भ किया परन्तु उस व्यक्ति से अशुद्ध हो जाता था । उस अवस्था में भी उनकी स्मृति इतनी प्रखर और गीता पर उनका इतना अधिकार था कि वे स्वयं उच्चारण शुद्ध करने का संकेत कर दिया करते ।

महादेव बाबू एक जीवंत साहित्यकार थे जिनमें विलक्षण लेखन शैली, ओजस्वी वक्तृत्वकला तथा काव्य सृजन का सहज उच्छल प्रवाह

परिलक्षित होता है । महादेव बाबू की काव्य-प्रतिभा का प्रस्फुटन हिंदी एवं मैथिली दोनों ही भाषाओं में हुआ । परन्तु उन्हें प्रचारित एवं प्रकाशित करने की अभिरूचि कभी नहीं रही । फलत: उनकी अधिकांश काव्य-रचनाएँ काल के गर्भ में समाहित होती गयीं । उनकी कुछ फुटकर रचनाएँ अब भी उपलब्ध हैं जो अत्यन्त ही मर्मस्पर्शी बनी पड़ी हैं । उनकी कुछ हिंदी कविताएँ हैं- स्वागत गान, स्वतंत्रता, अगस्त क्रांति तथा प्रगतिगान और वीर बालक ।

मैथिली में रचित उनकी रचनाओं की कुछ पांडुलिपियाँ प्राप्त हैं– महेशवाणी, नचारी, तिरहुत आदि। महादेव बाबू ने मैथिली के कवि श्री प्रवासी की प्रेरणा से जयदेव कवि रचित 'गीत गोविन्दम्' का मैथिली में पद्यमय अनुवाद सन् 1957 में प्रारंभ कर 1958 में सम्पन्न किया । महादेव बाबू ने गीत गोविन्द के अनुरूप ही इस पद्यमय अनुवाद ग्रन्थ में सर्ग-प्रबन्ध आदि का निर्वाह किया है । इनके अभिन्न मित्र प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन' ने अपना बहुमूल्य समय देकर इस ग्रंथ की श्री वृद्धि भी की ।

6. विभिन्न विद्वत्जनों द्वारा जीवन पर प्रकाश

स्वतंत्रता सेनानी

डॉ० उग्रनाथ मिश्र

बाबू बरही उच्च विद्यालय के हिन्दी के शिक्षक थे महादेव मिश्र । युवा शिक्षक, चेहरे से टपकता स्वाभिमान अपने विषय के योग्य एवं लोक प्रिय शिक्षक, महात्मा गाँधी के पक्के अनुयायी, सच्चाई के रास्ते पर कुछ कर गुजरने का अदम्य उत्साह, खादी वस्त्रधारी, मिलाजुला कर महादेव मिश्र का व्यक्तित्व बड़ा ही प्रभावशाली था । वे काँग्रेस के सक्रिय सदस्य थे । ब्रिटिश साम्राज्य का जमाना था, काँग्रेसियों की गतिविधि पर विशेष नजर रखी जाती थी । उत्तरी बिहार में मधुबनी जिलान्तर्गत गोनौली ग्राम के निवासी थे महादेव मिश्र । गोनौली ग्राम से सात मील की दूरी तय करके बाबू बरही स्कूल अपनी सायकिल से जाते थे महादेव मिश्र । हैसियत के हिसाव से मध्यम वर्ग के निम्न श्रेणी में वे आते थे । परिवार की गाड़ी अकेले मास्टर साहेब के बल-बूते पर चल रही थी । घर के नाम पर तीन फूस की झोपड़ियाँ, एक छोटा आँगन और एक बाहर का बैठक । मास्टर साहब की गाँव में बड़ी इज्जत थी, कोई ग्रामीण उनकी बात नहीं टालता था । गाँव में कोई झगड़ा-झंझट होता तो उसे सुलझाने में उनकी अहम भूमिका होती ।

मास्टर साहेब चरखे से रोज दो घंटे सूत कातते । पत्नी भी पति का साथ देतीं । इतना सूत निकल जाता था कि उन्हीं पैसों से खादी वस्त्र मास्टर साहब पहनते थे । जिला काँग्रेस कमिटी के मास्टर साहब अध्यक्ष थे । जब भी बैठक होती तो मास्टर साहब का ओजस्वी भाषण सुनने के लिये भीड़

इकट्ठी हो जाती थी । मास्टर साहब के प्रभाव से हर वर्ष काँग्रेस के सदस्यों की संख्या में काफी इजाफा होता था । काँग्रेस के वार्षिक अधिवेशन के दौरान वे बहुत व्यस्त रहते थे । उनकी सक्रियता की काँग्रेस हल्के में काफी चर्चा थी । काँग्रेस संगठन, मास्टर साहब को ऊपर वाले स्तर पर ले जाना चाहता था पर मास्टर साहब जनता के मूल स्तर को छोड़कर जाना नहीं चाहते थे । उन्हें पद लोलुपता ने कभी आकर्षित नहीं किया । ऐसे कर्मठ नेता थे मास्टर साहब, महादेव मिश्र ।

महात्मा गाँधी की पुकार पर 1942 का असहयोग आन्दोलन स्वतंत्रता संग्राम का पर्याय था । गाँधी जी की पुकार पर क्या काँग्रेसी, क्या गैर-काँग्रेसी, क्या स्त्री, क्या पुरूष, क्या लड़के, क्या लड़कियाँ, क्या युवा क्या बूढ़े सभी इस आन्दोलन की आग में कूद पड़े । पर गाँधी जी ने यह नहीं सोचा था कि इस स्वतंत्रता आन्दोलन के जोश में लोग होश खो देंगे । गाँधीजी का संदेश था कि असहयोग आन्दोलन सत्य और अहिंसा के बल-बूते पर चलाया जाय, पर आन्दोलनकारियों ने रेल-पटरियाँ उखाड़ीं, बिजली, टेलीफोन के तार तोड़े, खंभे उखाड़े, थानों, स्टेशनों, सरकारी कार्यालयों में आग लगायी, अंग्रेज अफ़सरों को छिप-छिपकर मारना शुरु किया आदि । महात्मा गाँधी ने इन हिंसक रास्तों के अपनाने पर अपना असंतोष जताया और आन्दोलनकारियों को हिंसा का रास्ता छोड़ने की अपील की । मास्टर साहब की उम्र करीब चालीस की हो रही थी, फिर भी उन्होंने स्कूल की नौकरी का मोह छोड़ा और कूद पड़े स्वतंत्रता आन्दोलन में । उन्होंने गाँधीजी के बताये हुए अहिंसा का पथ अपनाया । मास्टर साहब जुलूस निकालते, नारे लगाते-भारत माता की जय, गाँधीजी की जय, नेताजी सुभाष चन्द्र की जय, स्वतंत्रता आन्दोलन जिन्दाबाद, ब्रिटिश शासन मुर्दाबाद, हम बलिदान देंगे आजादी ले के रहेंगे, आदि । मास्टर साहब स्कूल, कॉलेज, सरकारी कार्यालय बन्द करवाते । जहाँ जाते वहीं नौजवान इनके साथ हो लेते । मास्टर साहब आन्दोलनकारियों को तोड़-फोड़, आगजनी आदि हिंसक पथ अपनाने से मना करते । सरकारी वारंट जारी हुआ मास्टर साहब को पकड़ने का । मास्टर साहब को पता चल गया कि पुलिस उनके पीछे पड़ गयी है । वे घर छोड़ कर भाग गये और छिपते-छिपाते ही आन्दोलन चलाते रहे । लेकिन कब तक, आखिरकार पकड़े गये, पुलिस की लाठियाँ खायी, जेल जाना पड़ा । उन पर तोड़-फोड़ आगजनी का झूठा मुकदमा चला और

पाँच साल की कैद की सजा हुई । जेल में अनेक प्रकार की यातनायें भी सहीं । मास्टर साहब की अनुपस्थिति में गाँव में अंग्रेज अफसर गये और इनका घर उजड़वा दिया । अंग्रेज सरकार ने महादेव मिश्र की संपत्ति की कुर्की-जब्ती की । मास्टर साहब के स्वतंत्रता आन्दोलन में कूदने से लेकर इनकी जेल की अवधि तक परिवार को कितने कष्टों का सामना करना पड़ा, वह अवर्णनीय है । यह तो मास्टर साहब की लोक प्रियता थी कि समाज के लोगों ने उनके परिवार को यथासाध्य सहारा दिया ।

15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ । मास्टर साहब भी जेल से छूटे । स्वतंत्रता दिवस बहुत जोश-खरोश से उन्होने भी मनाया । उल्लास से सारा वातावरण खिल उठा ।

मास्टर साहब के बेटे विष्णु कान्त ने एम० ए० कर लिया था । अपने उत्तरदायित्व को मास्टर साहब ने पूरा कर लिया था । विष्णु कान्त पास के ही झंझारपुर कॉलेज में प्राध्यापक नियुक्त हो गया । महादेव मिश्र को बहुत संतोष हुआ कि एक शिक्षक का बेटा शिक्षक ही हुआ । मास्टर साहब को देखकर कष्ट होता कि भारत स्वतंत्र तो हो गया, लेकिन स्वतंत्र भारत के नागरिक मानसिक रूप से अभी भी परतंत्र ही हैं, अंग्रेजों के दो सौ साल की गुलामी ने भारतवासियों के रग-रग में गुलामी के बीज छोड़ दिये थे । मास्टर साहब इसी उधेड़बुन में रहते कि इस गुलामी के उन्मूलन का क्या निदान हो । अंतत: 11 नवम्बर 1967 ई० को इनका देहान्त हो गया । इनका अन्तिम संस्कार वीरोचित ढंग से सारे समाज ने मिलाकर किया ।

('कुछ कथाएं, कुछ जीवन राहें' पुस्तक से उद्धृत)

युग पुरुष महादेव

ई० विपिन कुमार मिश्र

वे विश्वरूप, भारत माँ के सपूत,
वे वीर बड़े अभिमानी थे ।
देश के लाल, फिरंगियों के काल,
वे महादेव बलिदानी थे ।। 1 ।।
बचपन बीता था गरीबी में,
मन में थी इच्छा कुछ बनने की,
जीवन यूँ ही ना व्यर्थ हो,
पढ़-लिखकर कुछ बनने की ।
बड़े होकर शिक्षक बनें,
उनके दृढ़ निश्चय की निशानी थी ।
देश के लाल, फिरंगियों के काल,
वे महादेव बलिदानी थे ।। 2 ।।
शिक्षक थे, शिक्षा देते थे वे,
शिष्यों के थे प्रिय गुरुवर ।
पर मन में सदा खटकती थी,
अंग्रेजों से क्यों जीऊँ डरकर ।।
स्वावलम्बी बनो, स्वतंत्र जीयो
शिष्यों को यही पाठ पढ़ानी थी ।
देश के लाल, फिरंगियों के काल,
वे महादेव बलिदानी थे ।। 3 ।।
एक दिन अवसर आ ही गया,
जिसका था वर्षों से इन्तजार ।
अंग्रेज फौज लेकर आया,
विद्यालय से शिष्यों को गिरफ्तार ।

बाहर से उन्हें लौटा दिया,
अहाते में भी न घुसने दिया ।।
जंगे आजादी के शुरुआत की,
यह पहली कहानी थी ।
देश के लाल, फिरंगियों के काल,
वे महादेव बलिदानी थे ।। 4 ।।
अगले दिन जब बात बढ़ी,
प्रधानाध्यापक ने माफी माँगा ।
जब तक देश गुलाम है अवकाश दो,
लिखकर शिक्षक पद छोड़ दिया ।
दब कर रहना उन्हें मंजूर न था,
ना मंजूर अंग्रेजों की गुलामी थी ।
देश के लाल, फिरंगियों के काल,
वे महादेव बलिदानी थे ।। 5 ।।
अब खुलेआम वे कूद पड़े,
आन्दोलन में आजादी के ।
अंग्रेजों भारत छोड़ो,
करने लगे मुनादी वे ।
संगठन बना, संगठित होकर,
अंग्रेजों को मार भगानी थी ।
देश के लाल, फिरंगियों के काल,
वे महादेव बलिदानी थे ।। 6 ।।
चल रही थी लड़ाई जोरों से,
उन काले दिलवाले गोरों से ।
युवा क्रान्ति की आँधी,
थी बह रही चहुँदिशि जोरों से ।

दारोगा को थाने से भगा देना
उनके निर्भयता की निशानी थी ।।
देश के लाल, फिरंगियों के काल,
वे महादेव बलिदानी थे ।। 7 ।।
खटकने लगे जब अंग्रेजों को,
आकर गाँव घर तोड़ दिया ।
देखते ही गोली मारने का आदेश देकर,
हर राह पर गुप्तचर छोड़ दिया ।
पर कहाँ थे इससे डरने वाले,
वे आजादी के मतवाले ।
क्रांति की धधकती ज्वाला में,
जंजीर गुलामी की जल जानी थी ।।
देश के लाल, फिरंगियों के काल,
वे महादेव बलिदानी थे ।। 8 ।।
चलते रहे गोली की बौछारों में,
जेल गये फिर भी ना रुके ।
बस एक ध्येय था जीवन का,
भारत माँ को आजादी मिले ।।
हम रहें या चले जाँय,
पर देश सदा आबाद रहे ।
राज खत्म हो गोरों का,
भारत सदा आजाद रहे ।।
हुआ वही, अंग्रेज गये,
अब मिली हमें आजादी थी ।
देश के लाल, फिरंगियों के काल,
वे महादेव बलिदानी थे ।। 9 ।।

आजादी के बाद भी उन्होंने,
समाज कल्याण नहीं छोड़ा ।
शिक्षा के थे धनी बड़े,
कई विद्यालय बनवाये ।
गरीबों की सदा मदद करते,
क्यों न खुद भूखे रहें ।
वे लौह पुरुष कर्त्तव्यनिष्ठ,
वे शिक्षा जगत के दानी थे ।
देश के लाल, फिरंगियों के काल,
वे महादेव बलिदानी थे ।। 10 ।।
अध्यापक थे रचनाकार भी थे,
बमभोले के थे भक्त बड़े ।
हर-हर करते हर सुबह होती,
रचते थे नित गीत नये ।
शिव औढर हैं, वे भी औढर थे,
वे शिव समान ही दानी थे ।
देश के लाल, फिरंगियों के काल,
वे महादेव बलिदानी थे ।। 11 ।।
हे युग पुरुष, मिथिला के गौरव,
हमको है अभिमान ये ।
है गौरव हमें खुद पर,
कि हम आपकी सन्तान हैं ।। 12 ।।
अर्पित है यह श्रद्धा सुमन,
है महादेव शत्-शत् नमन,
हे महादेव शत्-शत् नमन ।।

विश्व बन्धु महादेव

श्री पवन कुमार मिश्र

विश्व बन्धु, अवदान अनुपम,
प्रतिभा धन्य पुरुषोत्तम ।
सुयश गान गूँज रही-गिरि, जल, आँगन, जंगल,
दिशा-विदिशा, गली-गली में मुखरित भूतल ।।
निर्विघ्न स्वच्छन्द अमर रहेगी-
तेरी दिव्यमान कृति ।
आने वाले हर नश्ल अनुसरण करेंगे- छोड़ कुप्रवृत्ति ।।
देखा न सुना उतना पर ढूँढ़ा,
यहाँ वहाँ से यह वृत्तान्त ।
सोचता हूँ-
कैसे हुआ, इस अद्‌भुत महामानव का अन्त ।।
जन्म ग्रहण किया तुमने,
शिक्षा हीन कृषक द्विज कुल में
आसव पीता रहा अभाव का बचपन से,
जीवन प्रतिपल व्यतीत किया संघर्ष और लगन में ।
प्रसाद पाया था तुमने उत्तम प्रतिभा की,
तुझसे सदा शोभित है प्रकृति का आँचल ।।
सभी ओर दुःख था और था दुत्कार,
विघ्न और बाधाएँ बनी परिचर्याकार ।
सेवा में, खौफ दिशाएँ बैठी थी घेरे,
निशा-दिवा और शाम-सवेरे ।
जमकर अभाव की मार खली होगी,
क्षण-क्षण संसार को असार पाया होगा ।।

कद लम्बा न छोटा, था मझारी,
सुना है-
अंग-अंग भरा हुआ था- दिव्य दान समझदारी ।
अर्थाभाव संग-संग पिता की कठिन यातनाएँ ।
बलिहारी साहस की पठन-पाठन अपनाये ॥
तेरा बचपन है दृढ़ता का परिचायक,
क्रुद्ध पिता की जलती आँखें,
अग्रेज सर पर 'कर' रख दिया अचानक ॥
सुशिक्षित बन मिली तुम्हे असीम अनुभूतियाँ,
पीड़ित मानवता की, गुलामी, शोषण और तानाशाही,
जब पंखहीन खग सा उपहासित बनी थी भूतल,
जन्म भूमि के दुध मुँहे विकसित,
माताएँ ठोक सुलाती थी हृदय लगाकर ॥
अस्तूरा चला रहा वक्ष पर,
मनुज तनिक न डोल रहा था ।
शोणित चूस रहे थे गोरे,
कोई पर मुँह न खोल रहा था ।
कृषक गम खा, आँसू पीता,
पसीने से लथपथ भूमि कोड़ता था ।
फसलें उगती थीं, मगर बोतलों में बन्द,
'लहू' कर दिया जाता था ॥
प्रतीक था आदर्श का, पंडिताई जमाने में भी,
तुम फूल नहीं तो शूल सही,
माहिर था तुम काँटों को अजमाने में भी ॥
हुई न ममता बनिता की, न सन्तति का मोह हुआ,
सुयश, सम्मान पताका लहरे,

कभी न वैभव का मोह हुआ ॥
जीवन की चहल-पहल को न कभी पहचान सका,
सेनानी बन बस-
मिटना केवल जान सका ॥
कभी नहीं अभिलाषा इतिहास बखाने जाऊँ,
नहीं कभी आकांक्षा -
खून-पसीने की कीमत पाऊँ ॥
लाली तेरे स्मरण की, हर सुवह पूर्व में,
अरुणोदय के साथ जगायेगी ।
हर अस्त में नमन करुँगा ।
गहन तिमिर याद दिलायेगी ॥
तुम थे रहते वफादार बनकर,
थे जीते सरदार बन कर ॥
विस्मित हुए तुम देख-देख कर,
धधक उठी ज्वाला आँखों में ।
तेरे हुँकार से हाहाकार मचा,
राख हुई थाना बातों-बातों में ॥
चुनौती सैलिसवरी एस०पी० की,
तूने सहज किया स्वीकार,
शंखध्वनि के भेदन से दरक गया,
उनका सारा साम्राज्य ॥
कुछ अपने भी गद्दार हुए,
अंग्रेजों का बन वफादार,
वेष बदलना, चकमा देना, स्थान बदलना,
तेरा मुख्य हे करतार ॥
तेरा विशाल व्यक्तित्व जी न लगाया,
बाबू-बबुआन का ।

विद्वता तेरी कदम चूमती,
थी गूँजती आभा अमन का ।।
संचित तिमिर पुँज में अब आकर कौन जगायेगा ।
कौन देगा लहू ? दीपक कौन जलायेगा ।।
हे पितामह- थे किस मिट्टी के बने तुम,
कहाँ से यह साहस, शक्ति, शौर्य मिला था ।
दो आशीष मुझे,
हो स्थिर मेरा मन, रूख न बदले मेरी,
न जकड़े प्रलोभन ।
साथ रहूँ सबके, सुख में, दु:ख में,
प्रभा-तम में ।।

देश भक्त महादेव

श्री महावीर ठाकुर

छी मुकुट मिथिला शिरोमणि,
की लऽ करू सम्मान ।
अजर अमर अहाँ बनिए गेलहुँ,
भेल महान अछि गाम ।।

जिला गौरवान्वित मधुबनी हमर,
बात छपल इतिहास में ।
गाम गोनौलीक सपूत अहाँ छी,
अद्‌भुत शक्ति अछि बास में ।। 2 ।।

सदिखन करी विचार अहींपर,
कौन रूपमे अयलहुँ ।
उदार चरित के प्रेरक अहाँ,
अमर निशानी देलहुँ ।। 3 ।।

नाम प्रतीत करय काजकेँ,
महादेव अहँ देश कल्याणी ।
मिसरी स्वाद अपूर्व जनाबय,
प्राण गाम के छी अहँ नामी ।। 4 ।।

उन्नीस सय दसक छब्बीस जून,
जय जयकार मचेलक ।
छलन्हि परिवार उचित मिसरक,
नाम आदर्श भनेलक ।। 5 ।।

एहि सज्जनकेँ तेसर पत्नी,
जिनकर ई संतान ।
पाँचहि वर्ष मे हिनका छोड़लनि,
भेला अनाथ अज्ञान ।। 6 ।।

के जनैत छल ई के छथि,
कोना भेलनि अवतार,
गामक सपूत महादेव बाबू,
भेलहुँ हम उद्धार ॥ 7 ॥

ई गामहिँ शिक्षा पौलन्हि,
वर्ग पाँचकेँ उत्तम छात्र ।
छात्रवृत्ति अधिकारी बनलाह,
हिनक पिता छलथिन्ह कुपात्र ॥ 8 ॥

छल ने सेहन्ता लिखब-पढ़बकेँ,
राति फकावलि दीप करथि ।
खोलि चराबह महीस-बड़दकेँ,
ई पितासँ खूब डरथि ॥ 9 ॥

गेला पचाढ़ी अंग्रेजी पढ़बा लेल,
मध्य विद्यालयमे नामकरण ।
पन्द्रह वर्ष अवस्थामे,
उत्तम छात्र छलाह परम ॥ 10 ॥

खराज गाममे लेलनि डेरा,
लत्ती होइत छै ब्राह्मणक पैघ ।
जेना तेना ई दिन बितौलनि,
रचना प्रथम तऽ विधके छैक ॥ 11 ॥

त्रिवेणी देवीसँ भेल विआहो,
जीवन सुखमय हिनकर ।
मैट्रिक, आइ०ए०, बी०ए० कयलनि,
भाग्य लिखल छल जिनकर ॥ 12 ॥

मधेपुर, तमोरिया, बेलमोहन,
हिन्दीक प्रतिष्ठित शिक्षक,
जय जयकार मचल छल सगरो,
किन्तु अंगरेजक भक्षक ॥ 13 ॥

पाछाँ अंग्रेजक पड़ला इहो,
साहस जेना छलनि पहाड़,
अन्याय सहब वर्दाश्त नहि हिनका,
विपत्ति पड़ल छल देशक भार ॥ 14 ॥

पिताक देहान्त एकैस इस्वीमे,
खादी वस्त्रक धारण ।
छात्रे जीवनसँ नेता बनला,
बात बाजबके पालन ॥ 15 ॥

ओना घरक छलाह गरीबे,
किन्तु मनक छला उदार ।
बनला नहि दरबारी ककरो,
सभ ठाम सभकेँ भेलनि सुधार ॥ 16 ॥

क्रान्तिकारी नेताकेर संज्ञा,
देशक हिनका भेटल ।
कठिन परिश्रम भेल छल हिनकर,
पैघ आन्दोलन भेटल ॥ 17 ॥

हिनक कथा लगइत अछि एहन,
सपनोमें नहि देखब ।
पलमे थाना जराकऽ रखलनि,
दृश्य कहू की लिखब ॥ 18 ॥

लुटलक आबि हिनक घरकेँ,
जरा भस्म कऽ देलक ।
धन्य छलाह महादेव बाबू,
झलक हिनक नहि पेलक ॥ 19 ॥

देशक खातिर भगला इहो,
शरण नेपालो लेलनि ।
बेलही गाम एहि बातक साक्षी,
बच्चा सभ टूअर भेलनि ॥ 20 ॥

धन्य अहाँ सपूत भारतकेँ,
कखनो बिसरत नहि इतिहास ।
पक्षधर जे अंग्रेजक बनला,
कयलनि अहाँक खूब उपहास ॥ 21 ॥

भेलहुँ स्वतंत्र जखन हम सभ,
सोचल विकास गामक केना ।
छलहुँ गरीब नहि आगाँ बढ़लहुँ,
बरके घर बाधक जेना ॥ 22 ॥

बेटी पाँच, बेटा एककेँ,
छोड़ि अहाँ चलि गेल छी ।
शुभकामना सभक संगे,
देखि प्रसन्न अहाँ होइत छी ॥ 23 ॥

जीवन कथा लिखल प्रेमसँ,
हमर महावीर नाम ।
अजर अमर अहँ बनियो गेलहुँ,
धन्य गोनौली गाम ॥ 24 ॥

मुक्तायण

श्री दिनेश चन्द्र झा

मातृ मुक्तिक समर वीर लड़लै कोना
होइत छल की कोना से तमाशा सुनू ।
कोना प्राण लय हाथ अर्पण करै,
मुक्ति वीरक भरल शौर्य गाथा सुनू ।।

दिवा–रात्रि बहुतो ओ भूखल रहै
गोली–स' भेल आहत सूतल रहै ।
छल बढ़ैत वीर वलिवेदी पथ पर जखन
ढोल–पिपही बजइ संग तासा सुनू ।।

छोड़ि अंग्रेज भारत तूँ जो देश स,
नारा लगबै सप्तम स्वर भरल जोशस' ।
सिंह गर्जनसँ कम्पित कय दै गगन,
लय पहुँचइ जुलूस वीर थाना जखन ।।

शान्ति नेता जुलूस लय हजारक चलइ
छात्र, ग्रामीण संग जनता बजारक चलइ ।
की ध्वनित होइ नारा केर भाषा सुनू ।।

तारिख रहै अगस्त अठारह
झंझारपुर थानापर अधिकारक ।
अगुआइ केने छल प्रथम छात्र
संग ग्रामीण जनता लोक बजारक ।।

काँग्रेसक संगठन झंझारपुरक
बहुत संगठित पुरान छल ।
महादेव मिश्र फतनेश्वर मिसर
नेता लोकनि महान छल ।।

मातृ मुक्तिक लेल हृदयमे
भेल जागृत प्रेम छल ।
'जयहिन्द' कहि एक दोसरक
पुछैत कुशल क्षेम छल ।।

वीरेन्द्र मिश्र, महादेव मिश्र संग,
जनता जानकें आँट केने छल ।
....,
.... ।।

महादेव मिश्र सरयुग मिसर
सभाकें सम्बोधन केने छल ।
रामचन्द्र झा राजवल्लभ क्रान्तिक
समर्थनक भाषण देने छल ।।

(स्वतंत्रता संग्राम में मिथिला एवं नेपालक योगदान)

युग पुरुष महादेव

श्री आनन्दकर झा

एक व्यक्तित्व जो अपने पीछे एक पूरा इतिहास छोड़ दिया । वैसे तो हरेक व्यक्ति अपनी दिनचर्या में इतना व्यस्त रहता है कि समय की निर्वाध गति और घड़ी की सूईयों की लगातार घुमावट से उसे यह पता ही नहीं चल पाता है कि वह क्या कर रहा है ? क्यों कर रहा है ? इसके पीछे क्या उद्देश्य है ? इसका समाज पर क्या असर पड़ सकता है ?

निर्भर करता है कि इन सारी कार्यशैली के पीछे उसकी सोच क्या है ? उसकी सकारात्मकता में वजन कितनी है ? सिर्फ भगवान का नाम लेने से या फिर खुद के लिए अच्छे आचरण का पालन करने से कोई व्यक्ति महान नहीं बन जाता है । परन्तु, उस एक व्यक्ति ने अपने आचरण या कर्मों से समाज का या फिर देश का क्या कल्याण किया या फिर कहें तो कितने लोगों की साधारण मानसिकता को सकारात्मक या सृजनात्मक मानसिकता में परिवर्तित कर दिया । महानता स्वयं अपने को उस व्यक्ति से जुड़ जाने में गौरवान्वित महसूस करती है ।

वैसे तो लाखों, करोड़ों की सी संख्या में जीवन और मृत्यु प्रतिदिन अपना आँकड़ा बदलती रहती है । पर, उन लाखों, करोड़ों में से बस एकाध ही कोई होते हैं घड़ी की सूईयों की उस मध्यविन्दु की तरह लोगों के मानस पटल पर स्थिर हो जाते हैं जैसे महादेव मिश्र हुए ।

हम आज की पीढ़ी के लोग कहीं ना कहीं अपने आप में खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं कि हम ऐसे व्यक्तित्व से किसी ना किसी रूप से जुड़े हैं ।

धरती माँ है और माँ की रक्षा हमारा कर्त्तव्य । यह कोई नई बात नहीं है और समझ में न आने के लिए कोई असाधारण बात भी नहीं है । फिर भी क्षणिक लाभ, मोह, माया, भोग विलासिता भौतिक सुख-साधन आदि अनेक हल्की चीजों ने ईन्सान के मानस पटल पर ऐसी वजनदान पट्टी चढ़ा रखी है कि अच्छे-अच्छे विद्वानों को भी ये सीधी और सरल बातें समझ में नहीं आतीं । लेकिन कुछ लोग थे । उनके लिए नामुमकिन कुछ भी नहीं था । उन्होंने आजादी की मंजिल देखी और उसकी राह पर निकल

पड़े । जानते हुए कि राह कितनी मुश्किल है । उन्हें पता था कि देशभक्ति का गीत गाना और सुनना उन्हें इतना आनन्द प्रदान करेगा कि बाकी सारी तकलीफें इस आनन्द के सामने खुद को बौना महसूस करेगी ।

उन्हीं के कर्मों का, निश्चित रूप से निःस्वार्थ कर्मों का फल है कि आज हम खुद को आजाद महसूस कर रहे हैं ।

भारत माँ के कुछ ऐसे ही सपूत जिनमें श्री महादेव मिश्र भी एक हैं जिन्होंने अपने कर्मों से, अपनी ईच्छा शक्ति से लगन से और दृढ़संकल्पता से एकनई कहानी लिख दी । एक नया इतिहास लिख दिया । नहीं तो हमारे पास इतिहास के नाम पर मुगलों, अंग्रेजों और दूसरे विदेशी शक्तियों के अलावा और था ही क्या ? इन्हीं के बदौलत आज हमारे पास अपने खुद के लोगों का इतिहास है । जिस पर हम आज गौरवान्वित हैं और आगे युगों-युगों तक रहेंगे ।

बस अपना हिन्दुस्तान चाहिए

आजादी थी मंजिल उनकी, देश भक्ति था धर्म,
बाधाओं से अविचल रहकर करते रहे बस अपना कर्म ।
ना धरती की थी चाहत उनको, ना आसमान की ईच्छा,
उनकी अभिलाषाओं में बस पूर्वजों का देश महान चाहिए,
संतुलित करने धरती को महादेव भगवान चाहिए ।
हमें तो बस अपना हिन्दुस्तान चाहिए ।। 1 ।।
मातृ ऋण को जो पहचाने, दूध की शक्ति को आजमाने,
बाहु बल पे भरोसा करके, दुश्मनों के छक्के छुड़ाने,
छद्म वेश की चतुराई से, वायु वेग की चाल था चलता
ऐसा सूरज दुनिया भर के बस अपने भारत में है उगता ।
हर माता की ममता बनकर, हर पिता की शान था जो,
बच्चे, बूढ़ों और जवानों के छाती का तना हुआ अभिमान था जो,
कलयुग में संहार के खातिर, दुश्मनों की हार के खातिर,
संतुलित करने धरती को महादेव भगवान चाहिए,
हमें तो बस अपना हिन्दुस्तान चाहिए ।। 2 ।।

हर मानव हो शासक इसका, हर मनुष्य हो सेवक,
हर इंसान हो रक्षक इसका, ना हो कोई भक्षक;
ये परिवार रहे खुशहाल ना नजर लगे अब इसको,
अपना गौरव अब जिन्दा, रहे, अपना आत्म सम्मान चाहिए ।
हर जाति के लोग इक छत के नीचे सो पाएँ,
हमको बस ऐसा इक मकान चाहिए,
संतुलित करने धरती को महादेव भगवान चाहिए,
हमें तो बस अपना हिन्दुस्तान चाहिए ।। 3 ।।
आज भी जिन्दा है हम सबमें, देर बस पहचान की है,
वही सादगी, वही शक्ति, बात भी उस अभिमान की है,
जो सच्चा है उसे दिखता है, वरना ये सब कुछ कहाँ बिकता है,
है जिन्दा माँ के आशीषों में, बच्चों की प्रण शक्ति में,
है जिन्दा भाई के विचार में, हर वहनों की पूजा भक्ति में,
उन सोचों को जो अपनाते हैं, ना क्षणिक भय से जो घबराते हैं,
है महादेव का साथ हमेशा, मार्ग दर्शन वो पाते हैं,
अब जो लालच का द्वंद चला है, लाने जिसको ये कहाँ मिला है,
शंखनाद करने इस युग में, जीत हार में अन्तर करने
बस टंकार काफी हो जिसकी, वैसा एक धनुष बाण चाहिए,
संतुलित करने धरती को महादेव भगवान चाहिए,
हमें तो बस अपना हिन्दुस्तान चाहिए ।। 4 ।।
सपना देखा था जिस भारत का, जिसकी तुमने की थी कल्पना,
हम प्रयास करेंगे उसका, बस बनकर रहना हमारी प्रेरणा,
युग बदलेगा, सब बदलेगा, सब कुछ अच्छा हो जाएगा,
है क्षणिक झूठ की ये मर्यादा अब सब कुछ बचा हो जाएगा,
तुम हो मौजूद हमारे बीच में, इसका भी अहसास है हमको,
बस नीन्द टूट जाए जल्दी से, ऐसा कुछ आशीष दो हमको
नींव तो रख दी थी तुमने, अब नव भारत निर्माण चाहिए,
संतुलित करने धरती को महादेव भगवान चाहिए,
हमें तो बस अपना हिन्दुस्तान चाहिए ।। 5 ।।

एक ही आफताब

अक्षय आकाश

मनुष्य बनना ही अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलधि है और हर मनुष्य अपने साथ इस धरती पर एक लक्ष्य लेकर ही आता है जिसे पूर्ण करना ही उसका एकमात्र ध्येय होना चाहिए और जिस मनुष्य को अपने लक्ष्य का पता चल जाता है उसका जीवन उसी क्षण धन्य हो जाता है । क्योंकि संसार का सबसे कठिन प्रश्न यही है कि हमारे इस जीवन का लक्ष्य क्या है ?

इस प्रश्न का उत्तर आज तक बहुत कम लोग ढूंढ पाए हैं जिनमें से एक हैं मेरे प्रमातामह स्वर्गीय बाबू महादेव मिश्र जो महादेव की भांति जीवट, कर्मठ एवं क्रान्तिकारी थे । मैं स्वयं को खुशकिस्मत मानता हूँ कि मुझे उनकी जीवनी का हिस्सा बनने की अनुभूति हुई है ।

जब जुल्मों की सीमा हो जाती है पार
मचता है चहुँओर चीत्कार
तब फैलाने आता है उजियारा
सारे जहाँ को रोशन करता है एक ही आफ्ताब ।
पूर्णिमा की वो रात थी ।
गनौली ग्राम की बात थी ।।
महादेव का भेजा हुआ वह दूत था ।
उचित मिश्र का वो सपूत था ।
बाल्यकाल में जो था शिक्षा का प्रेमी
किशोरावस्था में बना देशप्रेमी
बचपन से ही था दृढ़ संकल्पी
शिक्षा और क्रान्ति की अग्नि उसके दिल में धधकी ।
लेकर चला तो कर कमलों में शिक्षा की मशाल ।
अंगेजों को रहा सदा इसकी खिलाफत का मलाल ।।
आँखों में संकल्प और मुख पर मुस्कान पाले ।
ऐसे थे बाबू महादेव मिश्र गनौली वाले ।

गाँधी के सत्याग्रह को जन जन तक पहुँचाया
अंग्रेजों का अस्तित्व को ग्रामों से मिटाया ।
शिक्षा की ज्योति को मिथिला में पुनः जलाया ।
एवं अंतिम सांस तक तिरंगे को ऊँचा लहराया ।
जाते जाते कह गए जहाँ से
नारी देवी होती है
जब जब धरती पर अत्याचार बढ़ेगा, उसको मैं मिटाऊँगा ।
अलग अलग काल में मैं फिर से वापस आऊँगा ।
फिर से वापस आऊँगा ।

7. परिशिष्ट

1919-1

(1)

Schedule XIX- Form No-72.

(No.6)

Middle English Scholarship Certificate, 1925.

Mahadeva Mishra son of Uchit Mishra, inhabitant of gonouli in the district of Darbhanga who appeared at the Middle scholarship Examination of 1925 from the Pacharhi Middle English School in the district of Darbhanga, has been elected to a Middle English Scholarship of Five Rupees a month, tanable at the Darbhanga North Brook School in the District of Darbhanga for four years from the 1st January, 1926 on the usual condition of good conduct and progress. He must join that school within one month from the receipt of this certificate. His age as declared by the Superintendent on the day of Examination was Fourteen years seven months.

Sd/-Illigble.

Inspector of School.

Tirhut Division.

Muzaffarpur,

The 26th January, 1928.

क्रम संख्या-1744 विशारद संख्या-1982

विशारद संख्या-9822 (मुहर)

विशारद का उपाधिपत्र

हिन्दी विश्वविद्यालय की व्यवस्था में संवत 1998 विक्रमाब्द की हिन्दी मध्यमा परीक्षा में (1) हिन्दी साहित्य (2) कृषि शास्त्र (3) भूगोल विषय में तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण होने के उपलक्ष में श्री युत् महादेव मिश्र को हिन्दी साहित्य सम्मेलन सहर्ष विशारद नाम की उपाधि और उसके प्रमाण में यह उपाधि पत्र प्रदान करता है ।

विशेष योगयता:-

ह०/ अमरनाथ झा
सम्मेलन के सभापति
ह०/- राम प्रसाद त्रिपाठी
प्रधान मंत्री
ह०/- दया शंकर दूबे
परीक्षा मंत्री

मिति, सौन-------संवत् 1998

(3)

SCHOOL EXAMINATION BOARD

BIHAR AND ORISSA

PATNA

ADMIT

Mahadev Mishra. Roll-Muz, No. 15 to the Teachers Certificate Examination to be held on 18th April, 1933.

April 1933

The 5th April, 1933

Sd/.G. Sharma
Secretary

92/विष्णु कान्त मिश्र

DARBHANGA BOYS SCOUT ASSOCIATION

PATRON- Raja Bahadur Vishweshwar Singh.

President- S.P. Sinha, I.C.S/

Vice- President- Mr. G.P. Panday, Raisahib

K.C. chatterjee- District Commissioner.

Mr. Kumar Ganga Nand Singh, M.A.M.L.C.

No-77-91
Darbhanga,

the 25the July 1940

from Scout Master,
Vidyapati High School, Laheriasarai
Secretary, Darbhanga District, Boys
Scouts Association.

Association

To

The Scout Master,

Shri Mahadeva Mishra,

Sir

As usual the census Will be taken on the 31st of July, 1940 for which I am here with inclosing for you which bear necessary instructions. Itis to be filled in with the instructions given on the form. you are here by requested to realize three paise from each boy and send the amount to me to be sent to the Head Quarter for Red Cross st. John Ambulance for Indian sufferers.

I have the honour to be

Sir,

Your most obedient Servant,

Sd/ R.P.Sinha

27.7.40

Secretary

(5)

The Secretary.

C.H.E. School, Madhepur

Through,

The Headmaster.

Sir

I have the honour to request your to accept my resignation from the post I was working in your school as I do not like to serve under the institution of the British Government. For the Library I like to request you to be as kind as to count your books and add to it the books, I have deposited in the Library. you may Kindly extend my leave till this strife lasts and country gets freedom or I resign my post.

Your most obedient

Servant,

32.8.1942 Mahadeva Mishra.

order of the Headmaster.:

Forwarded to the Secretary.

Mahadav B. is a good teacher.

It is a pity that he has submitted this petition. If his resignation comes personally the books to the Library may be counted in his presence.

Sd/ Illigble

(6)

Copy of resolution No. 9 of the ordinary meeting

Dated- 11.9.1942.

"considered the petition of resignation of Baboo Mahadeva Mishra. Resolved that as the petition contains seditious words he should be dismissed from his services from date he left the school."

Sd/Gunpati Sinha

President

11.9.1942

(7)

Office of the secretary
coronation High English School, Madhepur
<u>Darbhanga</u>

Dated- 27th June, 1936.

This is to certify that pandit Mahadeva Mishra who has been serving as an assistant teacher, for last three years in this school, is asound master of all subjects he teaches and a most strict disciplinarian in all his moral excellences. He is taking an active part in all sports of games and in organizing them. He is most popular among all he is in touch with. I wish his every success in life.

sd/ Ganpati Singh
27.6.36
Secretary

(8)

From,

The Headmaster,
Shri Jagdish Nandan H.E. School,
Boboo Barhi, P.O. <u>DARBHANG</u>

To.

B. Mahadeva Mishra
Village- Gonouli,
P.O.- Baboo Barhi, <u>DARBHANGA</u>

Dated-Baboo Barhi, The 31st Dec. 1944

Sir,

You are appointed on Rs. 35/- per month as an asst. teacher in this institution. you are requested to join your post by the 2nd January, 45 positively.

sd/-Ram Janam Sharma

Head Master

copy forwarded to Babu Mahadeva Mishra, Village- Gonouli, P.O.- Baboo Barhi, Darbhanga for information

sd/- Ram Janam Sharma

Head Master

(9)

"This is to certify that shri Mahadeva Mishra took a very leading part in the movement of 1942. He was a teacher of the Aided H.E. School, Madhepur. He was dismissed from his services and the good contribution of his Providend Fund deposit was also forefeted. His part in the movement was very noble and sincere. He has to under go a great loss both financially and other wise. he is a political sufferer in true sense of the term"

Sd/- Anirudh Singh

Darbhanga President

Dated- Laheria Sarai

5.9.49 District congress committee,

(10)

"Certificate under rules 4(a) (i) of the Rules for award of stipends to the wards of political sufferers forwarded with Memo No. 4746/E Dated 11.12.59 from the Deputy Director of Education, Bihar, Patna.

This is to certify that Shri Mahadeva Mishra S/o Shri Uchit Mishra, Village-Gonouli, P.S.- Jhanjharpur, District- Darbhanga, is a political sufferer as defined in Rule No.-4 (a) (i) of Rules referred above.

sd/ illegble.

Add. District Magistrate

Darbhanga

1.3.61

"एस० पी० सदल बल मधेपुर आकर महादेव मिश्र के घर जला दिये"।

–अगस्त क्रान्ति का इतिहास

To,

The Secretary,
C.H.E. School, Madhepur

Trough,

The Headmaster

Sir,

I have the honour to request you to accept my resignation from the post I was working in your school as I do not like to serve under the institution of the British Government. You may kindly extend my leave till this strife lasts and country gets freedom or I resign my post.

Your most obedient
Servant,
Mahadeva Mishra.

डॉ. (प्रो०) विष्णु कान्त मिश्र

जन्म	– दुर्गाष्टमी (शारदीय नवरात्र) 1946 ई० ।
ग्राम+पो०	– गोनौली ।
प्रखंड	– अंधराठाढ़ी
जिला	– मधुबनी (बिहार)
शैक्षणिक योग्यता	– एम० ए० द्वय (मैथिली एवं अंग्रेजी), बी० एल०, पी–एच०डी०
विशेष	– पूर्व रीडर, ल० ना० जनता महाविद्यालय, झंझारपुर, ल.ना.मि.वि.दरभंगा पूर्व महासचिव, जिला काँग्रेस कमिटी, मधुबनी । जिला प्रतिनिधि एवं सदस्य, जि० काँ० कमिटी, मधुबनी ।
पत्नी	– श्रीमती शान्ति मिश्र, बी. ए. (आनर्स), पूर्व प्रधान शिक्षिका ।

रचनाएँ–

एकांकी	– श्राद्धक भोज – प्रकाशित मैथिली एकांकी : उद्‌भव ओ विकास–प्रकाशनाधीन ।
कथा	– 'वरक मोल' 'मधुकलश', 'पंचैती', 'चुगली करब', 'सरवन पूत', 'आदर्श नारी', 'मैथिलीमे हास्य कथा', मैथिलीक सामाजिक समस्या मूलक एकांकी, 'युग पुराण', घूर तरक गप्प–मिथिला मिहिर में प्रकाशित एवं आकाशवाणी, दरभंगा से प्रसारित ।
कविता	– 'झाड़', 'रुप सौन्दर्य', 'ई की करै छी', 'के सभ बताह' 'युग धर्म', 'युवक', जीवन', 'समाज' 'धन कुबेर' – प्रकाशनाधीन ।